मुल्ला सतीश चंद गुप्ता को जवाब

FEBRUARY 1, 2014 3 COMMENTS

मुल्ला सतीश चंद गुप्ता को जवाब

लेखक – अनुज आर्य

यह लेख सतीश चंद गुप्ता के ब्लॉग(halal-meet.blogspot.com) ' यह कैसा ब्रह्मचर्य था ' के प्रतिउत्तर में लखा गया है | पाठको से अनुरोध है की पक्षपात को छोड़कर सत्य असत्य का निर्णय करे |

सतीश चंद गुप्ता यह नाम भले ही वैदिक या हिन्दू धर्म से सम्बन्ध रखने वाला लगता है पर यह व्यक्ति हिन्दू या वैदिक नहीं है अ पतु एक कट्टर इस्लामी है जिसकी सोच कुरान से बाहर नहीं जाती | सतीश चंद गुप्ता जी के वषय में मै यहाँ ज्यादा न लखते हुए मुद्दे पर ही लखुगा | इस ब्लॉग में सतीश चंद जी ने स्वामी दयानंद सरस्वती के ब्रह्मचर्य पर प्रश्न उठाए है | अब पाठको दे खये जिस व्यक्ति का मजहब बलात्कार, अय्याशी और वेश्यावृति पर आधरित हो वो व्यक्ति कसी के ब्रह्मचर्यं पर प्रश्न उठाये बड़ा हास्यपद प्रतीत होता है और प्रश्न भी उस व्यक्ति पर उठाये जिसने मरणोपरांत तक स्त्री के साथ केवल माँ और बहन का रिश्ता रखा हो तो और भी ज्यादा हास्यपद प्रतीत होता है | जिस व्यक्ति के ब्रह्मचर्य के कस्से पुरे संसार में मशहूर थे उस व्यक्ति के ब्रह्मचर्यं के ऊपर सतीश चंद गुप्ता जी ने प्रश्न उठाये है | आइये देखते है की इनके ये सब प्रश्न कतने सही है |

सतीश चंद गुप्ता :-

एक ब्रह्मचारी और संयासी के जीवन का शास्त्रीय आदर्श है क उसे काम, क्रोध, अहंकार, मोह, भय, शोक, ईर्ष्या, निंदा, कपट, कुटिलता, अश्लीलता आदि अवगुणों से सदैव दूर रहना चाहिए। मगर 'सत्यार्थ प्रकाश' में अहंकार, निंदा, अश्लीलता के अलावा कुछ और दिखाई नहीं पड़ता। स्वामी दयानंद ने अपने महान ग्रंथ में जैन तीर्थंकर स्वामी महावीर, महात्मा गौतम बुद्ध, ईसा मसीह, हज़रत मुहम्मद, गुरू नानक संह आदि कसी भी महापुरूष और उनसे संबं धत संप्रदाय को नहीं बख्शा, जिसकी निंदा और अमर्यादित आलोचना न की हो। स्वामी जी ने स्वयं के अलावा कसी अन्य को वद्वान और पुण्यात्मा नहीं समझा।

आर्य सद्धान्ती :-गुप्ता जी यह बात तो सत्य है की एक ब्रह्मचारी और संयासी के जीवन का शास्त्रीय आदर्श है क उसे काम, क्रोध, अहंकार, मोह, भय, शोक, ईर्ष्या, निंदा, कपट, कुटिलता, अश्लीलता आदि अवगुणों से सदैव दूर रहना चाहिए। और यही सब मह र्ष दयानंद जी के जीवन से पता चलता है | सत्यार्थ प्रकाश में लेश मात्र भी अहंकार , निंदा और अश्लीलता दिखाई नहीं देती | सत्य को सत्य और असत्य को असत्य कहना यदि निंदा कहलाता है तो

सत्य और असत्य शब्द का कोई प्रयोजन नहीं रह जाता , गुप्ता जी मै आपसे प्रश्न करता हूँ की चोर को क्या कहेंगे ? चोर ? अब यदि कोई आप जैसा व्यक्ति चोर को चोर कहना चोर की निंदा समझता है तो उसमे लेखक की क्या गलती ? मजहब के लए लड़ने की शक्षा देने वाले को क्या कहेंगे ? पौती या बेटी की उम्र की लड़की से ववाह करने वाले को क्या कहेंगे ? लूट की आज्ञा देने वाले को क्या कहेंगे ? स्वामी दयानंद जी ने सत्यार्थ प्रकाश में एक जगह नहीं बल्कि कई बार लखा है की मेरा उद्देश्य कसी की निन्दा या आलोचना करना नहीं है अ पतु सत्य को सत्य और असत्य को असत्य कहना है जो की स्वामी दयानंद जी ने भली भाँती कया , उन्होंने स्वंय से कोई बात कसी के लए नहीं लखी बल्कि जो जो बाते उन सम्प्रदायों में थी उनको लखा | स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश की भू मका में स्पष्ट लखा है की जो जो सब मतो में सत्य-सत्य बाते है , वे वे सब अ वरुद्ध होने से उनका स्वीकार करके जो जो मत मतान्तरो में मथ्या बाते है , उन उन का खंडन कया है | दे खये गुप्ता जी इस से ऊँचे आदर्श कसी के हो सकते है ? जो व्यक्ति सब मतों में फैली सत्य बातो को स्वीकार करता हो उस पर आपने ऐसे आरोप लगाये ये आपको शोभा नहीं देता | दे खये आगे स्वामी जी भू मका में क्या लखते है " मै भी जो कसी एक का पक्षपाती होता तो जैसे आजकल के स्वमत की सतुति , मंडन और प्रचार करते और दुसरे मत की निंदा , हानि और बंध करने में तत्पर होते है , वैसे म भी होता परन्तु ऐसी बाते मनुष्य पन से बाहर है | बताओ जिस व्यक्ति के ऐसे उच्च वचार हो उसकी भाषा शैली पर आक्षेप लगाते हुए आपको एक बार भी लाज ना आई ? और दे खये गुप्ता जी की स्वामी दयानंद जी भू मका में क्या लखते है " बहुत से हठी , दुराग्रही मनुष्य होते है जो वक्ता के अ भप्राय से वरुद्ध कल्पना करते है , वशेष कर मत वाले लोग | क्यों क मत के आग्रह से उनकी बुद् ध अंधकार में फंस के नष्ट हो जाति है | इस लए जैसा म पुराण , जैनियों के ग्रन्थ, बाइबल और कुरान को प्रथम ही बुरी दृष्टि से ना देखकर उन में से गुणों का ग्रहण और दोषों का त्याग तथा मनुष्य जाति की उन्नति के लए प्रयत्न करता हूँ , वैसा सबको करना योग्य है | अब यही सब गुप्ता जी आपकी बातो को देख कर लगता है जो हठ और दुराग्रह कर चलते हुए कसी महापुरुष पर आक्षेप लग रहे है |

सतीश चंद गुप्ता :-

आधुनिक भारत के उक्त निर्माता आचार्य ने व भन्न मत-मतान्तरों और उनके प्रवर्तकों के वषय में क्या टीका-टिप्पणी की है ज़रा उस पर भी एक नज़र डाल लीजिए-

……….. इससे यह सद्ध होता है क सबसे वैर, वरोध, निन्दा, ईर्ष्या आदि दुष्ट कर्मरूप सागर में डुबाने वाला जैनमार्ग है। जैसे जैनी लोग सबके निन्दक हैं वैसे कोई भी दूसरा मत वाला महानिन्दक और अधर्मी न होगा। क्या एक ओर से सबकी निन्दा और अपनी अतिप्रशंसा करना शठ मनुष्यों की बातें नहीं हैं? ववेकी लोग तो चाहे कसी के मत के हों उनमें अच्छे को अच्छा और बुरे को बुरा कहते हैं। (12-105)

आर्य सद्धान्ती ;- गुप्ता जी यह आपने जो यह टिप्पणी लखी है इसमें कहीं पर भी यह उद्दत नहीं होता की स्वामी जी ने भाषा की मर्यादा को खोया है या उनकी भाषा में अहंकार दिखता है , यह सब केवल आपके हठ और दुराग्रह का नतीजा है | दे खये स्वामी जी ने तो क्या गजब बात लखी है ऐसी बात तो कुरान बनाने वाले अल्लाह ने भी नहीं लखी क

" ववेकी लोग तो चाहे कसी के मत के हों उनमें अच्छे को अच्छा और बुरे को बुरा कहते हैं "। अब वो वषय लखता हूँ जिसके जवाब में स्वामी जी ने ये सब लखा है जिसको आप इतना हव्वा बना रहे है |

जैसे वषधर सर्प में म ण त्यागने योग्य है वैसे ही जो जैनमत में नहीं वह चाहे कतना बड़ा धा र्मक पं डत हो उसको त्याग देना ही जैनियों को चत है { प्रकरणरत्नाकर भाग २ ,षष्टिशतक ६१,सूत्र १८ }

अन्य दर्शनी कु लंगी अर्थात जैनमत वरोधी उन का दर्शन भी जैनी लोग न करे |{ प्रकरणरत्नाकर भाग २ ,षष्टिशतक ६१,सूत्र २९ }

जो जैनधर्म से वरुद्ध धर्म है वे मनुष्यों को पापी करने वाले है इस लए कसी के अन्य धर्म को मान कर जैन धर्म को ही मानना श्रेष्ठ है |{ प्रकरणरत्नाकर भाग २ ,षष्टिशतक ६१,सूत्र २७ }

गुप्ता जी अब दे खये जैनमत की पुस्तकों में जो लखा है उसके आधार पर आप उसे क्या कहेंगे ? क्या इन सब प्रमाणों से वैर, वरोध इर्ष्या आदि फैलाने वाला जैनमत नहीं लगता ? ले कन आप ठहरे मत वाले तो आपको इन ग्रंथो के प्रमाण पर नहीं बल्कि इनकी समीक्षा करने वाले पर आप त है | यदि इन सब प्रमाणों को देख कर यदि आपको कोई और भाषा शैली अच्छी लगती है तो जरा हमें भी बताइए की कैसी भाषा का प्रयोग होना चाहिए था ?

सतीश चंद गुप्ता :-

……….. भला! जो कुछ भी ईसा में वद्या होती तो ऐसी अटाटूट, जंगलीपन की बात क्यों कह देता?तथा प 'यत्र देशे द्रुमो नास्ति तत्रैरण्डोऽ प द्रुमायते।' जिस देश में कोई भी वृक्ष न हो तो उस देश में एरण्ड का वृक्ष ही सबसे बड़ा और अच्छा गना जाता है वैसे महाजंगली देश में ईसा का भी होना ठीक था, पर आजकल ईसा की क्या गणना हो सकती है। (13-77)

आर्य सद्धान्ती ;- गुप्ता जी इस समीक्षा में भी स्वामी जी की भाषा शैली में कोई अहंकार दिखाई नहीं देता , अब आप ही बताइए की जो व्यक्ति यह कहता हो की पहाड़ को जो कहोगे की यहाँ से वहाँ चला जा, तो वो चला जाएगा इसे आप अ वद्या कहोगे या कुछ और ? यदि इसको आप कुछ और भी कह सकते है तो भी केवल ईसा की मुर्खता कह सकोगे | मुझे समझ नहीं आता की आप ने कैसे मुर्खता पूर्ण प्रश्न उठाये है स्वामी जी की भाषा शैली पर | अगर ये पहाड़ का एक जगह से दुसरे जगह पर चला जाना और वो भी लोगो के कहने पर ये सब जंगलीपन की बात नहीं तो और क्या है ? यदि आपके शब्दकोश में इसके लए कुछ और उपयुक्त शब्द हो तो बताइए ? और स्वामी जी ने बहुत अच्छा उदाहरण दिया है कजिस देश में कोई भी वृक्ष न हो तो उस देश में एरण्ड का वृक्ष ही सबसे बड़ा और अच्छा गना जाता है, यही सब ईसा के साथ हुआ , जो कुछ उसे थोड़ा बहुत ज्ञान था वही सब पुस्तक में लख दिया गया और अनपढ़ लोगो ने उसे ही सही मान लया | जैसे तोरेत उत्प त्त पर्व ६ आयत १५-२२ में लखा है की तीन सौ हाथ लम्बाई,पचास हाथ चौड़ाई और तीस हाथ ऊंचाई

वाली नाव में सभी प्रकार के जिव जन्तुओ के जोड़े लेकर जाना , जंगलीपन और अ वद्या की बात नहीं तो और क्या है जरा बतायेंगे ?

सतीश चंद गुप्ता :-

.... अब सुनिए! ईसाइयों के स्वर्ग में ववाह भी होते हैं, क्यों क ईसा का ववाह ईश्वर ने वहीं कया। पूछना चाहिए क उसके श्वसुर, सासू, शालादि कौन थे और लड़के-बाले कतने हुए?और वीर्य के नाश होने से बल, बुद् ध, पराक्रम, आयु आदि के भी न्यून होने से अब तक ईसा ने वहाँ शरीर त्याग कया होगा। (13-145)

आर्य सद्धान्ती :- गुप्ता जी आपने बाईबल पर प्रश्न उठाने की जगह स्वामी जी पर प्रश्न उठाया है जो की केवल एक मत वाला ही कर सकता है |स्वामी जी ने इस समीक्षा में बहुत ही रोचक बात उठाई है की जब ईश्वर स्वर्ग में ईसा का ववाह कया तो उसकी पत्नी भी अवश्य होगी , यदि पत्नी है तो उसके माता पता अर्थात ईसा के सास ससुर भी होंगे और जब शादी होगी तो बाल बच्चे भी जरुर होंगे |भला इसमें अहंकार या भाषा शैली का तो कोई सवाल ही नहीं |एक साधारण व्यक्ति के मन में भी यही सवाल आयंगे जो स्वामी जी ने उठाये है |क्या यह सवाल उठाना उ चत नहीं ?

सतीश चंद गुप्ता :-

.... वाह कुरान का खुदा और पैग़म्बर तथा कुरान को! जिसको दूसरे का मतलब नष्ट कर अपना मतलब सद्ध करना इष्ट हो ऐसी लीला अवश्य रचता है। इससे यह भी सद्ध हुआ क मुहम्मद साहेब बड़े वषयी थे। यदि न होते तो (लेपालक) बेटे की स्त्री को जो पुत्र की स्त्री थी; अपनी स्त्री क्यों कर लेते? और फर ऐसी बातें करने वाले का खुदा भी पक्षपाती बना और अन्याय को न्याय ठहराया। मनुष्यों में जो जंगली भी होगा वह भी बेटे की स्त्री को छोड़ता है और यह कतनी बड़ी अन्याय की बात है क नबी को वषयासक्ति की लीला करने में कुछ भी अटकाव नहीं होना! यदि नबी कसी का बाप न था तो जैद (लेपालक) बेटा कसका था?और क्यों लखा? यह उसी मतलब की बात है क जिस बेटे की स्त्री को भी घर में डालने से पैग़म्बर साहेब न बचे, अन्य से क्योंकर बचे होंगे?ऐसी चतुराई से भी बुरी बात में निन्दा होना कभी नहीं छूट सकता। क्या जो कोई पराई स्त्री भी नबी से प्रसन्न होकर ववाह करना चाहे तो भी हलाल है?और यह महा अधर्म की बात है क नबी जिस स्त्री को चाहे छोड़ देवे और मुहम्मद साहेब की स्त्री लोग यदि पैग़म्बर अपराधी भी हो तो कभी न छोड़ सकें! जैसे पैग़म्बर के घरों में अन्य कोई व्य भचार दृष्टि से प्रवेश न करें तो वैसे पैग़म्बर साहेब भी कसी के घर में प्रवेश न करें। क्या नबी जिस कसी के घर में चाहें निश्शंक प्रवेश करें और माननीय भी रहें? भला! कौन ऐसा हृदय का अन्धा है क जो इस कुरान को ईश्वरकृत और मुहम्मद साहेब को पैग़म्बर और कुरानोक्त ईश्वर को परमेश्वर मान सके। बड़े आश्चर्य की बात है क ऐसे युक्तिशून्य धर्म वरुद्ध बातों से युक्त इस मत को अरब देशनिवासी आदि मनुष्यों ने मान लया! (14-129)

आर्य सद्धान्ती ;- गुप्ता जी स्वामी जी की भाषा शैली पर तो आपने प्रश्न उठा दिए जब क वे तो एक साधारण मनुष्य थे ले कन मुहम्मद साहेब के चरित्र और अल्लाह की भाषा शैली

पर आप चुप रह गये ? जो अल्लाह औरत को खेती बताता हो , उन्हें घर में कैद रहने की शिक्षा देता हो , गैर मुस्लिमो को मारने आदि की शिक्षा देता हो उसकी भाषा शैली पर तो आपको कोई एतराज नहीं हुआ लेकिन एक व्यक्ति की भाषा शैली पर आपने सवाल खड़ा कर दिया ? जो व्यक्ति खुद को अल्लाह का पैगम्बर बता कर फिर भी बेटे की पत्नी से निकाह करे उसको विषयी नहीं तो और क्या कहेंगे ? जो व्यक्ति उम्र का लिहाज किये बगैर ९ वर्ष की अबोध बालिका से निकाह और सम्भोग करे उसे विषयी नहीं तो क्या कहेंगे ? फैसला आप पर गुप्ता साहब | जिस दयानंद सरस्वती जी ने कभी माँ और बहन के सिवाय रिश्ता नहीं रक्खा किसी स्त्री से उस पर तो आपने प्रश्न उठा दिया पर एक व्यभिचारी व्यक्ति और अल्लाह का पक्ष रख रहे हो ? स्वामी जी ने तो बहुत उत्तम बात लिखी है की कोई जंगली भी होगा वो भी बेटे की पत्नी से शादी नहीं करेगा लेकिन मुहम्मद साहब तो उन जंगलियो से भी गये गुजरे निकले | जो व्यक्ति के अंदर पुत्रवधू के लिए ऐसी भावना थी तो अन्य स्त्रियों के लिए क्या भावना रही होगी यह पाठक गण स्वंय अंदाजा लगा सकते है | और गुप्ता जी को फिर भी दयानंद जी की भाषा पर आपत्ति हुई न की उन व्यभिचारी पर | होगी भी कैसे मत वाले जो ठहरे | स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में बिल्कुल सही लिखा है की हठी और दुराग्रही लोग वक्ता के अभिप्राय से विरुद्ध कल्पना करते है वही सब गुप्ता जी आप कर रहे है |

सतीश चंद गुप्ता :-

अच्छे व्यक्ति की पहचान की पहली कसौटी उसकी भाषा होती है। क्या उक्त प्रकार की भाषा शैली एक पूर्ण विद्वान और संन्यासी को शोभा देती है? क्या उक्त विषय वस्तु में एक ब्रह्मचारी ने शास्त्रीय आदर्शों का उल्लंघन नहीं किया है?

मी जी लिखते हैं कि ''यदि किसी मत का विद्वान किसी अन्य मत की निंदा करता है तो निंदा करने वाले विद्वान की अच्छी बातें भी दोषयुक्त हो जाती हैं।'' (12-95)

क्या यह बात स्वामी दयानंद पर लागू नहीं होती?

आर्य सिद्धान्ती ;- गुप्ता जी निंदा और सत्य में फर्क होता है | जो अपने को सही साबित करने के लिए किसी के बारे में झूठ कहा जाए उसे निंदा कहा जाता है | और जो जैसा हो उसे वैसा ही कहा जाए वो सत्य कहलाता है | यदि सत्य कहना ही निंदा कहलाती है तो सत्य की परिभाषा क्या होगी ? यह काम आप पर छोड़ देते है की सत्य की परिभाषा क्या होती है | यदि सत्य को सत्य कहना निंदा होती है तो फिर तो कोई भी सत्य बोलने से बचेगा | यदि स्वामी जी ने कुछ भी बात मनगड़ंत या झूठ लिखी होती तो हम मान लेते की यह गलत है , पर जब जब सब कुछ सत्य लिखा है तो उसे निंदा कैसे मान लिया जाए ?

सतीश चंद गुप्ता :-

स्वामी जी लिखते है कि ''जो अपने ही मुख से अपनी प्रशंसा और अपने ही धर्म को बड़ा कहना और दूसरों की निंदा करना यह मूर्खता की बात है, क्योंकि प्रशंसा उसी की ठीक है जिसकी दूसरे विद्वान करें। अपने मुख से अपनी प्रशंसा तो चोर भी करते हैं।'' (12-99)

क्या यह बात स्वामी दयानंद पर लागू नहीं होती?

आर्य सद्धान्ती ;- स्वामी जी ने सर्वप्रथम ग्यारहवे समुल्लास में अपने धर्म और धर्म ग्रंथो की समीक्षा की फर बाद में जैनियों,इसाइयों और इस्लाम आदि के वषय में लखा |इस से बढ़ कर सम्मान की बात क्या हो सकती है गुप्ता जी ? और स्वामी जी ने कसी भी मत सम्प्रदाय की निंदा नहीं की बल्कि स्पष्ट शब्दों में कहा की "जो जो बाते सभी मतों में सत्य है म उन्हें स्वीकार करता हु " भला इस से उच्च आदर्श क्या होंगे ? ना ही पुरे सत्यार्थ प्रकाश में ऐसा वदित होता है की स्वामी जी ने अपनी प्रशंसा की हो |

सतीश चंद गुप्ता ;- स्वामी जी लखते है क, ''बहुत मनुष्य ऐसे हैं जिनको अपने दोष तो नहीं दीखते, कन्तु दूसरों के दोष देखने में अति उद्युक्त रहते हैं। यह न्याय की बात नहीं, क्यों क प्रथम अपने दोष देख, निकाल के पश्चात दूसरे के दोषों में दृष्टि देके निकालें। (12-8)

क्या यह बात स्वामी दयानंद पर लागू नहीं होती?

आर्य सद्धान्ती ;- इसी लए तो स्वामी जी ने ग्याहरवे समुल्लास में पहले अपने मत में फैले दोषों को उजागर कया , उसके बाद में दुसरे मज्हबो के बारे में लखा |जो स्वामी जी ने कहा वो ही कया |

सतीश चंद गुप्ता ;-

स्वामी जी लखते हैं क, ''जो मनुष्य पक्षपाती होता है, वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे वरोधी मतवाले के सत्य को भी असत्य सद्ध करने में प्रवृत्त होता है। इस लए वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता।'' (भू मका)

क्या यह बात स्वामी जी पर लागू नहीं होती?

आर्य सद्धान्ती ;- स्वामी जी ने जो लखा बिलकुल सत्य लखा है |उन्होंने स्वंय भी पक्षपात छोड़कर सत्य को सत्य और असत्य को असत्य कहा है |उन्होंने जैनमत के वषय में लखते हुए कहा है " इन में बहुत सी बाते अच्छी है अर्थात अहिंसा और चोरी आदि निंदनीय कर्मो का त्याग अच्छी बात है " और कुरान की समीक्षा ३९ में स्वामी जी लखते है क " जो यह रजस्वला का स्पर्श न करना लखा है वह अच्छी बात है ".. इसी तरह स्वामी जी ने कुरान की १२४ समीक्षा करते हुए लखा है क " माता पता की सेवा करना अच्छा ही है जो खुदा के साथ शरीक करने को कहे तो उनका कहना न मानना यह भी ठीक है " अब गुप्ता जी इस से बढकर सत्य प्रय होने का क्या उदाहरण हो सकता है ? पाठक गण इतने से समझ सकते है क स्वामी जी को सत्य से कतना प्रेम था की सत्य चाहे कुरान या फर कसी अन्य मत वालो के ग्रंथो में था उसे स्वीकार करते तथा उनकी प्रशंसा करते थे |

सतीश चंद गुप्ता;-

स्वामी जी लखते हैं क, ''बहुत से हठी, दुराग्रही मनुष्य होते हैं क जो वक्ता के अ भप्राय से वरुद्ध कल्पना कया करते हैं, वशेषकर मत वाले लोग। क्यों क मत के आग्रह से उनकी बुद् ध अन्धकार में फंस के नष्ट हो जाती है।'' (भू मका)

क्या यह बात स्वामी जी पर लागू नहीं होती?

आर्य सद्धान्ती ;- गुप्ता जी जरा यह बताने का कष्ट करेंगे की स्वामी जी कैसा हठ और दुराग्रह कया ? हाँ उनका हठ था वे सत्य के प्रति हठी थे इसी लए उन्होंने जान की परवाह कये बिना पुराण,कुरान और बाइबल आदि के सत्य और असत्य को उजागर कया , स्वामी जी तो भू मका में यह तक लखते है की " यद्य प मै इस आर्यवर्त देश में उत्पन्न हुआ और वसता हूँ ,तथा प जैसे इस देश की झूठी बातो का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश करता हूँ "|और आपने यह पंक्ति तो लख दी ले कन इस से अगली पंक्ति पढना शायद भूल गये जहाँ लखा है "इस लए जैसा म पुराण , जैनियों के ग्रन्थ, बाइबल और कुरान को प्रथम ही बुरी दृष्टि से ना देखकर उन में से गुणों का ग्रहण और दोषों का त्याग तथा मनुष्य जाति की उन्नति के लए प्रयत्न करता हूँ"|जिस व्यक्ति के ऐसे वचार हों आप उस पर दुराग्रह का आरोप लगाये ये आपको शोभा नहीं देता |

सतीश चंद गुप्ता ;-

स्वामी जी ने 'सत्यार्थ प्रकाश' में लखा है क एक ब्रह्मचारी के लए अष्ट प्रकार के मैथुन जैसे स्त्री दर्शन, स्त्री चर्चा और स्त्री संग अदि सब नि षद्ध है, मगर स्वामी जी ने अपनी पुस्तक में न केवल स्त्री चर्या और सेक्स चर्चा की है, बल्कि एक नव ववाहित जोड़े को गर्भाधान कस प्रकार करना चाहिए ? इस व ध का खुला चत्रण कया है। वषय वस्तु पर एक नज़र डा लए –

………… जब वीर्य का गर्भाशय में गरने का समय हो उस समय स्त्री और पुरूष दोनों स्थिर और ना सका के सामने ना सका, नेत्र के सामने नेत्र अर्थात् सूधा शरीर और अत्यन्त प्रसन्न चत्त रहें, डगें नहीं। पुरूष अपने 'ारीर को ढीला छोड़े और स्त्री वीर्य प्राप्ति-समय अपान वायु को ऊपर खींचे, योनि को ऊपर संकोच कर वीर्य का ऊपर आकर्षण करके गर्भाशय में स्थिर करे। पश्चात् दोनों शुद्ध जल से स्नान करें।

आर्य सद्धान्ती ; गुप्ता जी आप सत्यार्थ प्रकाश के जिन आठ प्रकार के मैथुनो को नि षद्ध की बात कर रहे है उसमे स्त्री चर्चा कहीं पर नहीं लखा है ये शब्द केवल आपके दिमाग की उपज है |वहाँ { तीसरे समुल्लास प्रथम पृष्ठ } पर स्वामी जी ने स्त्री और पुरुष दर्शन ,स्पर्शन ,एकांतसेवन ,भाषण , वषय कथा ,परस्पर क्रीडा , वषय का ध्यान और संग इन आठ मैथुनो को लखा है |जिस गर्भाधान वषय की आप बात कर रहे है वो स्त्री चर्चा या वषय चर्चा नहीं है अ पतु एक संस्कार है जो हर गृहस्थ अपनाता है | वषय और संस्कार में अंतर होता है गुप्ता जी जो की इस्लाम वालो के बस की बात नहीं है |इसी संस्कार का उपदेश स्वामी जी ने गृहस्थो को दिया है |यदि ब्राह्मण उपदेश नहीं देगा तो कोन देगा ? उपदेश देने का काम ब्रह्मणों और वद्वानों का है |ऋग्वेद के दुसरे मन्त्र में ऋ ष की व्याख्या करते हुए कहा गया है जो सब वद्याओ को जानता हो और जगत के कल्याण के लए उनका प्रयोग

अर्थात उपदेश करे उसे ॠ ष कहा जाता है |स्वामी जी को ॠ ष इसी लए कहा जाता है क्यों क उन्हें सब वद्याओ का ज्ञान था और उन्हें जिन वद्याओ का ज्ञान था उन सबका जगत के उपकार के लए उपदेश भी कया |यह जरुरी नही की जो व्यक्ति उपदेश दे रहा है वो उसको स्वंय भी उपयोग करता है उदाहरणार्थ जैसे कोई डॉक्टर मरीज से कहे की फलां दवाई खाओ तुम्हारी बिमारी ठीक हो जायेगी तो इसका अर्थ ये नहीं की पहले डॉक्टर ने वो दवाई स्वंय खाई है फर मरीज को बताई है |कोई डॉक्टर दवाइयों के सेवन से नहीं बनता बल्कि उसके बारे में अन्य वद्वानों के लखे ग्रंथो का अध्ययन करता है फर उसका उपदेश मरीज को करता है |यही सब स्वामी दयानंद जी ने कया है इसमें कोई आप त्त होने का सवाल ही नहीं है |यदि कुरान में अल्लाह सम्भोग की बाते करता है तो क्या इसका मतलब ये हुआ की उसने भी सम्भोग कया है ?

सतीश चंद गुप्ता ;- कैसी व चत्र वडंबना है क एक ऐसा व्यक्ति जो कसी वषय का अ ब स न जानता हो और वह वषय उसके लए नि षद्ध और निंदनीय भी हो, फर भी वह व्यक्ति उस वषय का ज्ञाता और प्रवक्ता हो। इससे अ धक धूर्तता, निर्लज्जता और दुस्साहस की बात यह दे खए क वह व्यक्ति यह दावा भी करता है क मैं इससे अ धक भी जानता हूँ, जिसका लखना यहाँ उ चत नहीं है। भला सेक्स संबंधी ऐसा कौन सा रहस्य है जिसे एक ब्रह्मचारी तो जान सकता है, मगर एक ववाहित नहीं जान सकता? क्या यहां प्रश्न चंह नहीं बनता ?

आर्य सद्धान्ती ;- गुप्ता जी पहले तो यह तय कर लीजिये की वे इस वषय का अ ब स न जानते थे या इस वषय के ज्ञाता थे |ये आपकी दोनों बाते वरोधाभाषी है जो केवल आपकी मुर्खता को दर्शाती है |आप भाषा का संयम दुसरो को सीखा रहे है पर आपने कैसी भाषा का प्रयोग कया है ? धूर्त , निर्लज्ज , दुस्साहसी ये सब क्या है ? आपने कस आधार पर स्वामी दयानंद जी को धूर्त लखा ? इस लए की उन्होंने कुरान जैसे कपोल कल्पित ईश्वरीय ग्रन्थ की धज्जिया उड़ा दी इस लए उन्हें धूर्त लख रहे हो ? अरे धूर्त शब्द तो आपको अल्लाह और मुहम्मद साहेब के लए लखना चाहिए जिसने स्वंय को ईश्वरीय पैगम्बर बता कर अरब वालो का मुर्ख बनाया |पर आप ऐसा क्यों करते मत वाले जो ठहरे |आपकी यह बात की सेक्स से सम्बन्धित ऐसी कोनसी बात है जिसे ब्रह्मचारी तो जान सकता है पर एक ववाहित नहीं जान सकता बिलकुल बालकपन की बात है भला बिमारीयों के बारे में डॉक्टर को ज्यादा जानकारी होगी या मरीज को ?

सतीश चंद गुप्ता :-

एक बात यह भी दे खए क 'सत्यार्थ प्रकाश' में लगभग 40 बार वीर्य शब्द का प्रयोग हुआ है और लखा है क यह अमूल्य है। स्वामी जी के जीवन चरित्र को पढ़ने पर पता चलता है क स्वामी जी नंगे रहा करते थे। लगभग 48 वर्ष की उम्र के बाद उन्होंने कपड़े पहनने प्रारम्भ कए। क्या यहीं चरित्र चंतन है एक ब्रह्मचारी का ? क्या कोई धर्मग्रंथ कसी ब्रह्मचारी अथवा संन्यासी को नंगा रहने की अनुमति देता हैं ?

आर्य सद्धान्ती :- गुप्ता जी स्वामी जी ने क्या गजब और अनमोल बात कही है की वीर्य अनमोल है उसकी रक्षा करो |पर चरित्रहीनता वाले मजहब के लोगो को शायद वीर्य की रक्षा

मजाक लगता है लगे भी क्यों न जब उनके प्रवर्तक ने ही पूरा जीवन अय्या शयों और व्य भचार में बिता दिया हो उन्हें तो स्वामी जी की यह बाद हास्यपद लगेगी ही |आपका यह कहना की स्वामी जी नंगा रहते थे बिलकुल गलत है हाँ यह सत्य है की स्वामी जी केवल एक कोपीन पहनते थे |पुरुषो के लए गुप्तांग को ढकने के लए कोपीन काफी होता है | स्वामी जी इतने बलवान थे की उन्हें अतिरिक्त वस्त्रो की आवश्यकता ही नहीं थी |जिस चीज की आवश्यकता नहीं फर भी उसे रखना मुर्खता होगी |आपको उनके पुरे जीवन में बस एक यही बात दिखी की वे नंगे रहते थे बाकी कुछ नहीं ? जिस व्यक्ति ने समाज के कल्याण के लए १७ बार जहर पया हो , लाठिया डंडे खाए हो फर भी सत्य ही कहा ,,यह जीवन उनका आपको दिखाई नहीं दिया ? बड़े बड़े मौलानाओ और पादरियों को शास्त्रार्थ में हराया यह भी आपको दिखाई न दिया ? संसार के उपकार के लए अपना सब कुछ त्याग दिया यह भी आपको दिखाई न दिया ? दिखे भी कैसे मत वाले जो ठहरे |गुप्ता जी लख तो म और भी बहुत कुछ सकता था पर पाठक गण इतने से अंदाजा लगा लेंगे |

सतीश चंद गुप्ता :-

अब जहाँ तक गर्भाधान व ध का प्रश्न है, यह तो एक स्वाभा वक प्र क्रया है। इसे तो न केवल अनपढ़, गवार मनुष्य जानता है, बल्कि पशु-पक्षी भी जानते है। पशु-प क्षयों को कौनसे ‘शास्त्रों का ज्ञान होता हैं ? उन्हें भला कौन यह सब सखाता हैं?

आर्य सद्धान्ती ;- गर्भाधान एक स्वभा वक प्र क्रया है यह बात तो सत्य है पर कस प्रकार से गर्भाधान कया जाए वषय ये है न की ये स्वभा वक या अस्वभा वक है |ऐसे तो खाना भी स्वभा वक है पर कैसे और क्या खाना चाहिए ये वषय होता है न की खाना स्वभा वक प्र क्रया है |पशु प क्षयों का भी अपना एक ही तरीका होता है गर्भाधान करने या सम्भोग करने का पर ना जाने अल्लाह को पशुओ से भी कम अक्ल थी जो कह दिया की जैसे मर्जी सम्भोग करो तुम्हारी बिबिया तुम्हारी खेती है |पीछे से सम्भोग करना बताओ अल्लाह की कोन सी अक्लमंदी थी ?

सतीश चंद गुप्ता :-

स्वामी जी ने गर्भाधान की उक्त व ध के साथ यह भी बताया क गर्भास्थिति (च्तमहदंदबल) का निश्चय हो जाने के बाद एक वर्ष तक स्त्री-पुरूष को समागम नहीं करना चाहिए, क्यांे क ऐसा करने से अगली संतान निकृष्ट पैदा होती है, दोनों की आयु घट जाती है और अनेक प्रकार के रोग होते है। आगे यह भी लखा है क संतान के जन्म के बाद स्त्री योनिसंकोचादि भी करे।

स्वामी जी से कसी ने उक्त वषय से संबं धत निम्न सवाल भी कया-

प्रश्न- जब एक ववाह होगा, एक पुरूष को एक स्त्री और एक स्त्री को एक पुरूष रहेगा तब स्त्री गर्भवती, स्थिररो गणी अथवा पुरूष दीर्घरोगी हो और दोनों की युवावस्था हो, रहा न जाय तो फर क्या करें ?उत्तर- इस का प्रत्युत्तर नियोग वषय में दे चुके हैं और गर्भवती स्त्री से एक वर्ष समागम न करने के समय में पुरूष व स्त्री से दीर्घरोगी पुरूष की स्त्री से न रहा

जाए तो कसी से नियोग करके उसके लए पुत्रोत्प त्त कर दे, परन्तु वेश्यागमन वा व्य भचार कभी न करें। (4-149)

अब पहले तो उस सवाल पर ध्यान दीजिए, जिसमें स्वामी जी से पूछा गया है क यदि कसी पुरूष की पत्नी गर्भवती हो और पुरूष की युवावस्था (ल्वनदह ।हम) हो और उससे न रहा जाए तो वह पुरूष क्या करे? स्वामी जी ने बताया क वह कसी अन्य की पत्नी से नियोग करके पुत्रोत्प त्त कर दे। अब यहां सभ्य और बुद्धजीवी लोग ग़ौरे करें क अगर कसी गाँव में 10 पुरूष ऐसे है जिनकी स्त्री गर्भवती है और स्त्री एक भी ऐसी नहीं है जिसे पुत्र की इच्छा हो, तो ऐसी स्थिति में वे 10 युवापुरूष कहां जाए? तीसरी बात यह क युवा गर्भवती स्त्रियों का क्या होगा? क्या गर्भवती होने पर स्त्री की कामेच्छा समाप्त हो जाती हैं? अगर उनके अंदर यौन इच्छा हो, तो वे क्या करें?

आर्य सद्धान्ती :- गुप्ता जी स्वामी जी ने कहीं पर भी नियोग को अनिवार्य नहीं लखा है यदि इच्छा हो , स्त्री , पुरुष व परिवार की आज्ञा हो तब ही नियोग हो सकता है ले कन उसके भी नियम है जैसे ववाह के नियम होते है |इन पंक्तियों में स्वामी जी ने नियोग दो के लए कहा है एक तो जिसकी पत्नी गर्भवती हो उसके लए और दूसरा जिसका पति दीर्घरोगी हो उसके लए |जिसकी पत्नी गर्भवती हो वो भी केवल कसी अन्य वधवा स्त्री के लए नियोग द्वारा संतान उत्पन्न कर सकता है |तथा जिसका पति दीर्घ रोगी हो वह स्त्री क्या करेगी ? नियोग ही एक सामाधान है वर्तमान समय में दुनिया भर के स्त्री पुरुष जो संतान उत्पन्न करने में असमर्थ है वे नियोग अर्थात स्पर्म डोनेसन का सहारा लेकर खुशी खुशी अपना जीवन जी रहे है |यदि गाँव में कोई वधवा या पुत्र की कामना करने वाली स्त्री नहीं है तो स्वामी जी ने कोनसा ये कहा है की नियोग करना ही करना है ? वो तो जिसकी इच्छा हो करो ना इच्छा हो न करो |रही बात कामेच्छा समाप्ति की तो स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश में जितेन्द्रिय होना सखाया है न की कामोत्तेजक होना |स्वामी जी ने अंत में जो पंक्ति लखी है वो सराहने योग्य है क "परन्तु वेश्यागमन वा व्य भचार कभी " ले कन सतीश चंद गुप्ता जी ने इसकी सराहना करने की बजाए इस पंक्ति को अनदेखा कर दिया |अनदेखा करे भी क्यों ना ? क्यों क इस्लाम तो व्य भचार और वेश्यागमन को पुरजोर पक्षधर है जिसे मुताः अर्थात अस्थायी शादी भी कहा जाता है जिसमे पुरुष पैसे देकर कुछ समय के लए शादी करता है अपनी काम वासना को पूरा करने के लए भले ही मुसलमान कहते रहे की यह अस्थाई शादी काम वासना के लए नहीं है पर बुद्धमान जन अंदाजा लगा सकते है की भला कोई व्यक्ति पैसे देकर कुछ दिन के लए शादी क्यों करना चाहेगा ? क्या संतान पैदा करने के लए ? नहीं केवल और केवल अपनी काम वासना मटाने के लए |उदाहरण के लए दे खये कुरान सुरह निसा आयत २४ – ववाहित स्त्रियाँ तुम्हारे लए वर्जित है सवाय लों डयो के जो तुम्हारी है, इनके अतिरिक्त शेष स्त्रियाँ तुम्हारे लए वैध है तुम अपने माल के द्वारा उन्हें प्राप्त करो उनसे दाम्पत्य जीवन अर्थात सम्भोग का मजा लो और बदले में उन्हें निश्चित की हुई रकम अदा कर दो |अब गुप्ता जी दे खये नियोग तो केवल सन्तान उत्प त्त के लए तथा व्य भचार और वेश्यगमन से बचने के लए है ले कन कुरान ने तो वेश्यवृति की खुली छुट दे डाली बस पैसा होना चाहिए माल खरीदने के लए |ज्यादा जानकारी के लए पढ़िएhttp://en.wikipedia.org/wiki/Nikah_mut‘ah

सतीश चंद गुप्ता :-

चैथी बात जो कही गई है क गर्भवती स्त्री से समागम करने से वीर्य व्यर्थ जाएगा, अगली संतान निकृष्ट पैदा होगी, आयु घट जाएगी, अनेक प्रकार के रोग हो जाएंगे। क्या ये सब बातें च कत्सा वज्ञान की (डमकपबंस ैबपमदबम) की दृष्टि से तर्क पूर्ण है ? स्वामी जी ब्रह्मचारी और योगी थे, मगर उनका स्वास्थ्य आम गृहस्थी से अच्छा नहीं था। 58-59 साल की आयु में स्वामी जी का वजन लगभग 150 क0 ग्राम होना क्या अच्छे स्वास्थ्य का लक्षण है। क्या स्वामी जी की उक्त सभी प्रकार की सलाह (।कअपेमम) अता र्कक और अव्यावहारिक नहीं है ? न मालूम स्वामी जी ने कौनसा धर्मग्रंथ और च कत्सा वज्ञान (डमकपबंस ैबपमदबम) पढ़कर उक्त सलाह (।कअपबम) गृहस्थियों को दी है?

आर्य सद्धान्ती :- गुप्ता यदि वज्ञानं की दृष्टि से देखा जाए तो भी स्वामी जी बाते बिलकुल सही है क्यों क वज्ञानं की माने जाए तो वीर्य का कार्य अंडाणु के साथ मल कर सन्तान पैदा करना है |जब पहले से ही सन्तान गर्भाशय में मोजूद है तो दोबारा वीर्य गर्भस्य में डालने का कोई ओ चत्य नहीं रहता और उस वीर्य को व्यर्थ ही बहाना पढता है जिस से दुर्बलता आती है |अब दे खये वज्ञानं की दृष्टि से वीर्य सरंक्षण के क्या क्या फायदे है

१ . डॉ. डयो लुइस कहते है की यह तत्व अर्थात वीर्य का संरक्षण शरीर, मन की शक्ति और बुद् ध की इच्छा की शक्ति के लए आवश्यक है

2

डॉ इ पी मलर के अनुसार स्वेच्छा और अनैच्छिक तरीके से वीर्य का बहना बहुत ही उर्जा को नष्ट कर देता है |

3.

डॉ स्टीफन टी चंग वीर्यस्खलनता के बारे में लखते है की अंडकोष शुक्राणुओ और हार्मोन्स का उत्पादन करते है , और प्रॉस्टैट ग्रं थ पोषक तत्व , हार्मोन और उर्जा से भरपूर तरल का उत्पादन करती है |एक चम्मच वीर्य में न्यूयॉर्क स्टेक के दो टुकड़े, दस अंडे, छह संतरे, और संयुक्त दो नींबू के बराबर शक्ति होती है जो की वीर्य स्खलन से नष्ट हो जाति है |

४.

प्रोफेसर मोंतागाज़ा लखते है की सभी युवा और पुरुष शुद्धता अर्थात वीर्य सरंक्षण के तत्काल लाभ को अनुभव करते है |यह स्मृति शांत, दृढ होती है और मस्तिष्क जीवंत होता है

५. डॉ मोल्विल कैथ एम् डी लखते है की यह वीर्य हड् डयों के लए मज्जा अर्थात सार , दिमाग के लए भोजन , जोड़ो के तेल और श्वास के लए मठास है |और यदि आप पुरुष है तो आपको इसकी एक बूंद भी खोनी नहीं चाहिए जब तक आप पुरे तीस वर्ष के नहीं हो जाते |और उसके बाद भी केवल संतानोत्प त के लए ही इसका प्रयोग करे |

६. Sir James Pagen लखते है की शरीर और आत्मा को क्षतिग्रस्त मत करो , वीर्य की सुरक्षा करो , आत्मनियंत्रण दुसरे आचरणों से बेहतर है |

पाठक गण इन सब प्रमाणों से अंदाजा लगा सकते है की वीर्य कतना अनमोल है और उसको व्यर्थ नहीं बहने देना चाहिए और उसका उपयोग केवल संतानोत्प त्त के लए कया जाना चाहिए यही सब स्वामी जी ने लखा है |जानवर भी ऋतूगामी होकर प्रजनन करते है फर मानव तो अपने को बुद् धमान कहता है उसे तो जरुर आवश्यकता अनुसार ही सम्भोग करना चाहिए |यहाँ पर म अनेक ग्रंथो के प्रमाण दे सकता था ले कन ज्ञानी लोग इतने से अंदाजा लगा लेवेंगे |आगे गुप्ता जी ने स्वामी जी के स्वास्थ्य पर टिप्पणी की है की योगी और ब्रह्मचारी होने के बावजूद उनका स्वस्थ्य एक आम इन्सान की भाँती था |गुप्ता जी आपकी इस टिप्पणी का जवाब भी आपकी इस से प्रथम टिपण्णी में ही है |आपने स्वंय लखा है की स्वामी जी नंगे रहते थे अब दे खये जो व्यक्ति कंपकपाती सर्दी में भी नंगा रहता हो क्या वो साधारण आदमी हो सकता है ? यदि आपको जनवरी के महीने में आधा घंटा नंगा बाहर खड़ा कर दिया जाए तो आपकी कुल्फी जम जायेगी जब क स्वामी दयानन्द जी तो हमेशा एक कोपीन में रहते थे |इस से ज्यादा ब्रह्मचर्य का फल क्या हो सकता है ? उनके स्वास्थ्य और शरीर के वषय में कुछ व्यक्तियों के वक्तव्य जो स्वामी दयानंद के साथ रहे या जिन्होंने उन्हें देखा –

उनके शरीर से इस समय के बलवानो की जो तुलना करता हूँ तो बड़ा अंतर पाता हूँ , उनके अंग प्रत्यंग ऐसे सुदृढ़ व सुडोल थे की वैसे आज तक देखने में नहीं आये |ने नित्य प्रति प्रातः योगसाधना के लए जंगल में जाते और प्राणायाम की क्रयाए करते थे |{ राजा धराज नाहर संह , शाह्पुरा धश }

वे शखा रहित,मुं डत मस्तक , कोपीन मात्र धारण कये दिगम्बर प्रायः लगभग ६ फीट ऊँचे , सबल , मांसल भुजाओं वाले तथा अंग प्रत्यंगो में पूर्णतया संतु लत दिखाई दिए |मुझे वे यूनानी वीर हरक्यु लस की भाँती दीर्घाकार देहयष्टि वाले कसी पेशेवर पहलवान के ह्रदय में भी ईर्ष्या उत्पन्न करते प्रतीत हुए |{ श्री रामगोपाल } यह स्वामी जी का असली चत्र है जो की १८७४ में लया गया था

यदि मै स्वामी जी के ब्रह्मचर्य और स्वास्थ्य के वषय में लखने लागु तो शायद सैकड़ो पन्ने भर जायेंगे |ये जरुरी नहीं की वजन अ धक होने से शारीरिक अवस्था सही नहीं होती | व्यायाम करने वाले व्यक्ति का वजन एक आम इन्सान से ज्यादा होता है ये साधारण सी बात है जैसे वर्तमान में मशहुर रेसलर अंडरटेकर का वजन १३६ कलोग्राम है , ऐसे ही मशहुर रेसलर केन का वजन १४६ कलोग्राम है |क्या वह शारीरिक अवस्था से सही नहीं है ? यह जरुरी नहीं की अगर वजन अ धक हो तो शारीर बेडोल होगा |अंतः आपका यह कहना की स्वामी जी स्वास्थ्य एक आम गृहस्थी जैसा था व्यर्थ है |

आगे स्वामी जी ने जैसा क लखा है क संतान के जन्म के बाद स्त्री योनिसंकोचादि करे और छह दिन के बाद स्तन के अग्र भाग पर ऐसा लेप करे क दूध स्र वत न हो। यहां ये दोनों बातें भी स्वामी जी से पूछने की है क आ ख़र ये योनिसंकोचादि क्या है? यह कस प्रकार होता है ? दूसरी बात यह भी स्वामी जी से पूछने की है क क्या प्रसव के छह दिन के बाद स्त्री का दूध रोकना प्राकृतिक व्यवस्था के वरूद्ध नहीं हैं? तीसरी बात यह क क्या धायी स्त्री नहीं होती, आ ख़र वही बच्चे को दूध क्यों पलाए? क्या स्वामी जी की सारी बातें बेतुकी नहीं हैं?

आर्य सद्धान्ती :- प्रथम तो स्वामी जी की मृत्यु को इतना समय हो गया है आप उनसे कैसे पूछोगे इस लय आपका यह कहना की ये दोनों बाते स्वामी जी से पूछने योग्य है केवल आपकी मुर्खता को दर्शाता है |अब आपकी दोनों बातो का जवाब भी जान लीजिये संतानोत्प त्त के बाद जो योनीक्षति होती है उसको दोबारा पहले जैसा होना योनिसंकोच कहा जाता है |यह समय के साथ स्वंय भी हो सकता है , कई बार इसके लए उपचार की भी आवश्यकता होती है |आपकी दूसरी बात का जवाब स्वामी जी ने इसी समुल्लास में लखा है " क्यों क प्रसूता स्त्री के शरीर के अंश से बालक का शरीर होता है , इसी से स्त्री प्रसव समय निर्बल हो जाति है इस लए प्रसूता स्त्री दूध न पलावे " इस पंक्ति में स्वामी जी स्पष्ट रूप से कारण लख दिया है | फर भी यदि आपकी बुद् ध में बात ना आवे तो स्वामी जी की क्या गलती ? स्वामी जी ने कहीं नहीं कहा की इसके बाद हमेशा दाई ही दूध पलाए |स्वामी जी के लखे शब्दों से स्पष्ट है की प्रसूता का दूध पलाना इस लए सही नहीं क्यों क वो निर्बल हो जाती है अब यदि प्रसूता निर्बल ना हो तो जब तक चाहे दूध पलाए क्यों क दूध न पलाने का एक कारण निर्बलता ही है |

सतीश चंद गुप्ता :-

अश्लील वषय से संबं धत समुल्लास-14 में कुरआन की कुछ आयतों की समीक्षा के कुछ अंश भी दे खए –

.... वाह क्या कहना इसके बहिश्त की प्रशंसा क वह अरबदेश से भी बढ़कर दीखती है! और जो मद्य मांस पी-खाके उन्मत्त होते हैं इस लए अच्छी-अच्छी स्त्रियाँ और लौंडे भी वहाँ अवश्य रहने चाहिए नहीं तो ऐसे नशेबाजों के शर में गरमी चढ़ के प्रमत्त हो जावें। अवश्य बहुत स्त्री-पुरूषों के बैठने सोने के लए बिछौने बड़े-बड़े चाहिए। जब खुदा कुमारियों को बहिश्त में उत्पन्न करता है तभी तो कुमारे लड़कों को भी उत्पन्न करता है। भला कुमारियों का तो ववाह जो यहाँ से उम्मेदवार होकर गये हैं उनके साथ खुदा ने लखा पर उन सदा रहनेवाले लड़कों का भी कन्हीं कुमारियों के साथ ववाह न लखा तो क्या वे भी उन्हीं उम्मेदवारों के साथ कुमारीवत् दे दिये जावेंगें? इसकी व्यवस्था कुछ भी न लखी। यह खुदा से बड़ी भूल क्यों हुई? यदि बराबर अवस्थावाली सुहा गन स्त्रियाँ पतियों को पाके बहिश्त में रहती हैं तो ठीक नहीं हुआ, क्यों क स्त्रियों से पुरूष का आयु दूना-ढाई गुना चाहिए, यह तो मुसलमानों के बहिश्त की कथा है (14-143)

आर्य सद्धान्ती :- गुप्ता जी आपने केवल समीक्षा दिखाकर स्वामी जी के ग्रन्थ को तो अश्लील साबित करना चाहा है पर आप कुरान की वो आयते लखना कैसे भूल गये जिनकी स्वामजी ने समीक्षा की है ? आइये जरा कुरान की उन आयतों पर प्रकाश डालते है जिनकी स्वामी जी ने समीक्षा की है इस से पाठकगण स्वंय अंदाजा लगा सकेंगे की स्वामी जी की समीक्षा में अश्लीलता दिखाई देती है या फर कुरान में |

कुरान सूरह अल वा कया आयत १२-२४/३४/३५/३६

नेमतो वाले बाग़ में बड़ी जमात पहलों में से और थोड़े पछलो में से सोने की तारो से बने हुए पलंग पर त कये लगाये उस पर बैठे हुए आमने सामने उनके लड़के फरेंगे हमेशा लड़के

ही रहने वाले आबखोरो और सुराहियो के साथ शराब के प्याले लए हुए जिनसे न तो सर में दर्द होगा न ही उनकी अक्लो में फतूर आएगा |और मेवे जो वे पसंद करेंगे और प क्षयों का गोश्त जो वह चाहेंगे |और बड़ी बड़ी आँखे वाली हुरे जैसे मोती सीपी में छिपे हो |उसकी जजा जो वे करते थे और बड़े बिछोने |हम उन्हें कुंवारी बना देंगे , महबूब और हम उम्र |

पाठको यह ध्यान रहे की यह सब खुबिया कुरान की जन्नत की है न की वेश्याघर की |वैसे इन आयतों से पता चलता है की कुरान की जन्नत वेश्याघर से कुछ अ धक है |इन आयतों में वचारने वाली बात यह भी है क ये सब सु वधाए पुरुषो को मलेंगी , पुरुषो को लड़के भी मलंगे जो हमेशा लड़के ही रहेंगे अब यह तो अल्लाह जाने की उन लडको की क्या आवश्यकता ? कहीं अल्लाह ने स्वर्ग में समलैं गकता का तो बंदोबस्त नहीं कर दिया ? इस आयत से तो यही लगता है वरना हमेशा लड़के ही रहने वाले लडको की क्या आवश्यकता | भले ही मुसलमानों के लए धरती पर शराब हराम क्यों न हो पर जन्नत में इन्हें शराब के प्याले भी मलेंगे अब ये तो अल्लाह ही जाने की जन्नत में शराब की क्या आवश्यकता पड़ गई ? स्वामी जी ने बड़ा उ चत सवाल उठाया है की इस लए अच्छी-अच्छी स्त्रियाँ और लौंडे भी वहाँ अवश्य रहने चाहिए नहीं तो ऐसे नशेबाजों के शर में गरमी चढ़ के प्रमत्त हो जावें | और अल्लाह ने अगली ही आयतों में उन नशेबाजो के लए हूरो और हम उम्र महबुबो की व्यवस्था कर दी |गुप्ता जी जरा बतायेंगे की अल्लाह ने हम उम्र महबुबो और हूरो की व्यवस्था कस लए की है जन्नत में ?अब गुप्ता जी बताइए की अल्लाह , उसकी कुरान और उसकी जन्नत अश्लीलता दिखा रही है या स्वामी जी की समीक्षा ? इन आयतों से एक प्रश्न और अल्लाह के ऊपर खड़ा हो गया की जब अल्लाह ने कुरान सूरह अन नूर आयत ४१ में लखा है की पक्षी भी नमाज अदा करते है तो क्या एक नमाजी को दुसरे बेगुनाह नमाजी का गोश्त खाना उ चत है ?

सतीश चंद गुप्ता :-

दूसरी जगह दे खए स्वामी जी क्या लखते हैं –

क्योंजी मोती के वर्ण से लड़के कस लए वहाँ रक्खे जाते हैं? क्या जवान लोग सेवा वा स्त्रीजन उनको तृप्त नहीं कर सकतीं? क्या आश्चर्य है क जो यह महा बुरा कर्म लड़कों के साथ दुष्ट जन करते हैं उसका मूल यही कुरान का वचन हो और बहिश्त में स्वामी सेवकभाव होने से स्वामी को आनन्द और सेवक को परिश्रम होने से दुःख तथा पक्षपात क्यों हैं ? और जब खुदा ही उनको मद्य पलावेगा तो वह भी उनका सेवकवत् ठहरेगा, फर खुदा की बड़ाई क्योंकर रह सकेगी? और वहाँ बहिश्त में स्त्री-पुरूष का समागम और गर्भस्थिति और लड़के-बाले भी होते हैं वा नहीं ? यदि नहीं होते तो उनका वषय सेवन करना व्यर्थ हुआ और जो होते हैं तो वे जीव कहाँ से आये? और बिना खुदा की सेवा के बहिश्त में क्यों जन्मे? यदि जन्मे तो उनको बिना ईमान लाने और कन्हीं को बिना धर्म के सुख मल जाए इससे दूसरा बड़ा अन्याय कौन-सा होगा? (14-152)

उक्त कुरआन की समीक्षा को पढ़कर क्या ऐसा नही लगता, जैसे कोई बद-जबान आदमी शराब पीकर अनाप-शनाप बकना शुरू कर दे? एक वद्वान और सभ्य पुरूष का अपना एक बौद् धक स्तर (Intellectual Level) और एक नैतिक स्तर (Moral Standred) होता है। वह

अपनी बात शष्टता और सभ्यता के साथ कहता है बशर्ते वह आलोचना अथवा वरोध ही क्यों न कर रहा हो। उसके तर्कों में गहनता और गंभीरता होती है। मेरा तो यही मानना है क एक वद्वान और पुण्यात्मा पुरूष कभी ऐसी अनाप-शनाप बातें (Talking) नहीं कर सकता।

आर्य सद्धान्ती :- गुप्ता जी यदि आपने कुरान की वो आयते भी लखी होती जिनकी स्वामी जी ने समीक्षा की है तो पाठको को कुरान की झल कयाँ देखने को मल जाती |

आइये हम कुरान की वो आयत लखते है जिसकी स्वामी जी ने समीक्षा की है कुरान सूरह अद दहर आयत १९/२१ – और फरेंगे ऊपर लड़के सदा रहने वाले , जब देखेगा तू उनको ,अनुमान करेगा तू उनको मोती बिखरे हुए |और पहनाये जावेंगे कंगन चांदी के और पलावेगा उन को रब उन का शराब प वत्र |

इन आयतों में भी इस्लामी जन्नत का वर्णन है |अब गुप्ता जी आप ही बता दीजिये की इन सदा रहने वाले लडको का क्या काम है ? जिस प्रकार से अल्लाह ने इनके रंग रूप की प्रशंसा करते हुए इन्हें मोती के सामान लखा है इस से तो प्रतीत होता है की इनका उपयोग सम्बंध बनाने के लए ही होगा |अगर केवल शराब पलाना होता तो जवान लोगो को भी रक्खा जा सकता था सदा लड़के रहने वाले लड़के ही क्यों ? यदि काम तृप्ति के लए रखा गया था तो क्या स्त्री उनकी तृप्ति नहीं कर सकती थी जो लडको को ही चुना ? कहीं अल्लाह को स्वंय तो समलैं गकता पसंद नहीं थी ? गुप्ता जी प्रश्न तो अब भी वाही है आपने समीक्षा को अश्लील कह कर उस से पल्ला झाड़ लया |एक बुद् धमान व्यक्ति को यदि ये आयत पढाई जाए तो उसके मन में यही सवाल आएगा की आ खर लड़के ही क्यों ?

अंत में कुछ आयते जिनसे अंदाजा लगाया जा सकता है की कसी ने शराब पीकर समीक्षा की है या फर कसी ने शराब पीकर आयते उतारी है |

१. कुरान ५६/५ – और पहाड़ उड़ाए जायेंगे |

२. कुरान ७५/९ – इकट्ठा कया जावेगा सूर्य और चाँद |

३. कुरान ८१/१- जब की सूर्य लपेटा जावेगा |

४. कुरान ८१/२ –जब की तारे गदले हो जावेंगे |

५. कुरान ८१/३ – जब की पहाड़ चलाए जावेंगे |

६. कुरान ८१/११ – जब आसमान की खाल उतारी जायेगी |

७. कुरान ८२/१ – जब आसमान फट जावे |

८. कुरान ८२/२ – जब तारे झड़ जावे |

९. कुरान ८२/३ – जब दर्या चीरे जावे |

१०. कुरान ८२/४ – जब कब्रे जिला कर उठायी जावे |

११. कुरान १३/२७ – कह निश्चय अल्लाह गुमराह करता है |

१२. कुरान २/६० –मूसा ने अपनी कौम के लए पानी माँगा , हम ने कहा की अपना दंड पत्थर पर मार |उसमे से बारह चश्मे बह निकले |

१३. कुरान ५/१२ – अल्लाह को अच्छा उधार दो |

१४. कुरान ६६/९ – ऐ नबी झगड़ा कर का फ़रो से |

इन सब आयतों से पता चल सकता है की नशे में कसने लखा है क्या यह सब बाते अल्लाह की हो सकती है ? स्वामी जी की समीक्षाओ में कहीं पर भी कोई बात तर्कहीन नहीं दिखती |बल्कि जिसके कारनामो से जो सद्ध होता है व्ही लखा है |जब आयतों में हूरो , लड़कों और महबूबाओ की बाते होंगी तो भला समीक्षा में ये सब प्रश्न क्यों नहीं आने चाहिए ? आप स्वंय बताइए की इन आयतों की समीक्षा में क्या लखा जाता ?

“सत्यार्थ प्रकाश : समीक्षा की समीक्षा का जवाब PART 1″

OCTOBER 24, 2015 LEAVE A COMMENT

“पहले अध्याय का जवाब पार्ट 1″

प्यारे मत्रो व बंधुओ, नमस्ते

अभी कुछ दिन से एक पुस्तक पढ़ रहा था “सत्यार्थ प्रकाश : समीक्षा की समीक्षा” जिसके लेखक सतीश चंद गुप्ता हैं, कहने को तो उन्होंने मह षे दयानंद की क़ुरान पर उठाई आप त्तयों और समीक्षाओं पर अपनी समीक्षाएं करने का दावा कया है मगर ये समीक्षाएं कतनी फट बैठती हैं ये हम इस लेख में समझने का प्रयास करेंगे। अभी इस लेख में इनकी पुस्तक के पहले अध्याय में मह षे दयानंद की क़ुरान पर उठाई वाजिब और अनूठी शंकाओ और टिप्प णयों पर इनकी समीक्षाओं का जायजा लेंगे बाकी अगले लेखो में भी इनके द्वारा की गयी समीक्षाओं की व्यवहारिकता और सार्थकता पर भी प्रकाश डालने का पूर्ण प्रयास करेंगे ता क हमारे बंधू सतीश चंद गुप्ता जी ये न कहे की इन्हे जवाब न मला। आइये इनकी एक एक समीक्षा को देखे और समझे :

सतीश चंद गुप्ता जी (हमारे बंधू) ये बात स्पष्ट तौर पर स्वयं मानते हैं की ऋ ष का ज्ञान जो सत्यार्थ प्रकाश में फैला हुआ है वो लगभग ३००० पुस्तको को पढ़ने के बाद का निचोड़ है, मगर अगले ही पल सत्यार्थ प्रकाश को आर्य समाज की रीढ़ की हड्डी बता दिया, हमारे प्रय

बंधू को शायद ये ज्ञात नहीं है की प्रत्येक आर्य समाजी अथवा हिन्दू भाई की रीढ़ की हड्डी और मान्य धा र्मक ग्रन्थ केवल और केवल “वेद” हैं, मह र्ष दयानंद ने भी वेदो और आर्ष ग्रंथो तथा पुराण क़ुरान आदि अनार्ष ग्रंथो के गहन अध्यन पश्चात ही “सत्यार्थ प्रकाश” जैसी अमूल्य नि ध का निर्माण कया ता क समस्त मानव जाति सत्य को जानकार असत्य को त्याग देवे, आर्य समाज भी ऋ ष के सत्यार्थ प्रकाश को सत्य असत्य के निर्धारण हेतु पढ़ना और पढ़ाना मानता है बाकी स्वाध्याय तो वेद और अन्य आर्ष ग्रंथो का भी करना चाहिए, सत्यार्थ प्रकाश एक निर्दे शका है जो वेद और आर्ष ग्रंथो तथा प्राचीन ऋ षयों मुनियो का जो धर्म के प्रति वचार थे उनका प्रकटीकरण करना और सत्य तथा असत्य के भेद को जानने में सहायता लेना।

धयान देने वाली बात है जब कसी मत या सम्प्रदाय की ऐसी बातो पर ध्यान दिलाया जाए जो मानव समाज के लए हितकर न हो और उसकी समीक्षा समु चत तर्कपूर्ण आधार पर हो तो उस मत व सम्प्रदाय को थोड़ा बुरा लगना अथवा असहज हो जाना, ये सम्बं धत मत व सम्प्रदाय वाले मनुष्यो का स्वाभाव ही होगा, क्यों क ऋ ष ने सत्यार्थ प्रकाश के भू मका में ही लखा है :

“मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात् जो सत्य है उस को सत्य और जो मथ्या है उस को मथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश कया जाय। कन्तु जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही कहना, लखना और मानना सत्य कहाता है। जो मनुष्य पक्षपाती होता है, वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे वरोधी मतवाले के सत्य को भी असत्य सद्ध करने में प्रवृत्त होता है, इस लए वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता। इसी लए वद्वान् आप्तों का यही मुख्य काम है क उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्याऽसत्य का स्वरूप सम र्पत कर दें, पश्चात् वे स्वयम् अपना हिताहित समझ कर सत्यार्थ का ग्रहण और मथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें।”

मह र्ष का बड़ा ही सरल और सहज भाव था की जो सत्यान्वेषी होकर इस ग्रन्थ को पढ़े तो उसे सत्य को ग्रहण करने में कोई परेशानी न होगी,

“परन्तु इस ग्रन्थ में ऐसी बात नहीं रक्खी है और न कसी का मन दुखाना वा कसी की हानि पर तात्पर्य है, कन्तु जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्याऽसत्य को मनुष्य लोग जान कर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें, क्यों क सत्योपदेश के वना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।”

ये मह र्ष दयानंद कृत सत्यार्थ प्रकाश की भू मका में ही लख दिया गया है, पर खेद की जो वद्वान व आप्त लोग जैसे हमारे बंधू सतीश चंद जी मह र्ष की उक्त बातो को ठीक से न समझकर केवल पूर्वाग्रह से ही शायद अपनी समीक्षा करते गए।

आइये अब एक एक शंका को देखते हैं की सतीश चंद जी की समीक्षा पर समीक्षा क्या है ?

1. मह षे को संस्कृत का प्रकांड वद्वान भी मानते हैं और उन्ही मह षे के द्वारा लखी गयी समीक्षा को भाषा शैली अनुसार घिनौनी और शर्मनाक भी कहते हैं, पर क्या सच में ऐसा है ? आइये एक नजर डाले :

देखो इन गवर्गण्ड पोपों की लीला : ये शब्द मह षे ने कस कारण और प्रकरण पर उपयोग कया जरा पूरा दे खये :

"अर्थात् देखो इन गवर्गण्ड पोपों की लीला जो क वेद वरुद्ध महा अधर्म के काम हैं उन्हीं को श्रेष्ठ वामम र्गयों ने माना। मद्य, मांस, मीन अर्थात् मच्छी, मुद्रा पूरी कचौरी और बड़े रोटी आदि चर्वण, योनि, पात्रधार, मुद्रा और पांचवां मैथुन अर्थात् पुरुष सब शव और स्त्री सब पार्वती के समान मान कर" (एकादश समुल्लास)

बताइये जो वेद वरुद्ध कर्म हो ऐसे हीन और लज्जामय कर्म को यदि कोई धा र्मक कार्य बतावे तो क्या उसकी बढ़ाई होगी ?

आगे दे खये :

"रक्तबीज के शरीर से एक बिन्दु भू म में पड़ने से उस के सदृश रक्तबीज के उत्पन्न होने से सब जग्त में रक्तबीज भर जाना, रु धर की नदी का बह चलना आदि गपोड़े बहुत से लख रक्खे हैं। जब रक्तबीज से सब जगत् भर गया था तो देवी और देवी का सह और उस की सेना कहां रही थी? जो कहो क देवी से दूर-दूर रक्तबीज थे तो सब जगत् रक्तबीज से नहीं भरा था? जो भर जाता तो पशु, पक्षी, मनुष्यादि प्राणी और जलस्थ मगरमच्छ, कच्छप, मत्स्यादि, वनस्पति आदि वृक्ष कहां रहते? यहां यही निश्चित जानना क दुर्गापाठ बनाने वाले पोप के घर में भाग कर चले गये होंगे!!! दे खये! क्या ही असम्भव कथा का गपोड़ा भंग की लहरी में उड़ाया जिसका ठौर न ठिकाना।" (एकादश समुल्लास)

अब दे खये यहाँ भी सतीश चंद जी ऐसे ही अन्य आक्षेप भी बिना प्रकरण को पूरी तरह से पढ़े केवल पूर्वाग्रह के कारण अपनी समीक्षाओं में लखते गए यदि पूरी समीक्षाएं इसी प्रकार आपके समक्ष रखता जाउ तो बहुत बड़ा लेख हो जावेगा इस लए आप एक बार स्वयं भी सत्यार्थ प्रकाश की समीक्षाओं को पढ़कर सतीश चंद जी की समीक्षाओं पर खुद नजर डाले की वो आ खर कस हद तक वाजिब हैं

जब क मह षे दयानंद सत्य के कतने बड़े मान्यकर्ता थे वो आपको हम दिखाते हैं :

ऋ ष ने जहाँ जहाँ क़ुरान में जो थोड़ा बहुत सत्य पाया है उसपर अपने वचार भी प्रकट कये हैं :

१३७-उतारना कताब का अल्लाह गा लब जानने वाले की ओर से है।। क्षमा करने वाला पापों का और स्वीकार करने वाला तोबाः का।।

-मं० ६। स० २४। सू० ४०। आ० १। २। ३।।

(समीक्षक) यह बात इस लये है क भोले लोग अल्लाह के नाम से इस पुस्तक को मान लेवें क जिस में थोड़ा सा सत्य छोड़ असत्य भरा है और वह सत्य भी असत्य के साथ मलकर बिगड़ा सा है। इसी लये कुरान और कुरान का खुदा और इस को मानने वाले पाप बढ़ाने हारे और पाप करने कराने वाले हैं। क्यों क पाप का क्षमा करना अत्यन्त अधर्म है। कन्तु इसी से मुसलमान लोग पाप और उपद्रव करने में कम डरते हैं।।१३७।। (चतुर्दश समुल्लास)

"अब इस कुरान के वषय को लख के बुद् धमानों के सम्मुख स्था पत करता हूँ क यह पुस्तक कैसा है? मुझ से पूछो तो यह कताब न ईश्वर, न वद्वान् की बनाई और न वद्या की हो सकती है। यह तो बहुत थोड़ा सा दोष प्रकट कया इस लये क लोग धोखे में पड़कर अपना जन्म व्यर्थ न गमावें। जो कुछ इस में थोड़ा सा सत्य है वह वेदादि वद्या पुस्तकों के अनुकूल होने से जैसे मुझ को ग्राह्य है वैसे अन्य भी मजहब के हठ और पक्षपातरहित वद्वानों और बुद् धमानों को ग्राह्य है।" (चतुर्दश समुल्लास)

७३-मत फरो पृ थवी पर झगड़ा करते।। -मं० २। स० ८। सू० ७। आ० ७४।।

(समीक्षक) यह बात तो अच्छी है परन्तु इस से वपरीत दूसरे स्थानों में जिहाद करना का फरों को मारना भी लखा है। अब कहो यह पूर्वापर वरुद्ध नहीं है? इस से यह वदित होता है क जब मुहम्मद साहेब निर्बल हुए होंगे तब उन्होंने यह उपाय रचा होगा और जब सबल हुए होंगे तब झगड़ा मचाया होगा। इसी से ये बातें परस्पर वरुद्ध होने से दोनों सत्य नहीं हैं।।७३।। (चतुर्दश समुल्लास)

उप ल खत सभी तथ्यों से ज्ञात हो जाता है की मह ष दयानंद सत्य के प्रति कतने गंभीर थे, उन्होंने अपनी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश में केवल सत्य को ग्रहण करवाने हेतु ही पुस्तक का सृजन कया, मह ष ने अन्य मत मतांतरों, सम्प्रदायों में भी जो जो सत्य देखा उसे अपनी सत्यार्थ प्रकाश में समीक्षा के अंतर्गत लखा है दे खये :

"और जो आप झूठा और दूसरे को झूठ में चलावे उसको शैतान कहना चाहिये सो यहां शैतान सत्यवादी और इससे उसने उस स्त्री को नहीं बहकाया कन्तु सच कहा और ईश्वर ने आदम और हव्वा से झूठ कहा क इसके खाने से तुम मर जाओगे।" (त्रयोदश समुल्लास)

(समीक्षक) अब दे खये! ईसाइयों के ईश्वर की लीला क प्रथम तो सरः का पक्षपात करके हाजिरः को वहां से निकलवा दी और चल्ला- चल्ला रोई हाजिरः और शब्द सुना लड़के का। यह कैसी अद्भुत बात है? यह ऐसा हुआ होगा क ईश्वर को भ्रम हुआ होगा क यह बालक ही रोता है। भला यह ईश्वर और ईश्वर की पुस्तक की बात कभी हो सकती है? वना साधारण मनुष्य के वचन के इस पुस्तक में थोड़ी सी बात सत्य के सब असार भरा है।।२५।। (त्रयोदश समुल्लास)

"खुदा ने शैतान से पूछा कहा क मैंने उस को अपने दोनों हाथों से बनाया, तू अ भमान मत कर। इस से सद्ध होता है क कुरान का खुदा दो हाथ वाला मनुष्य था। इस लए वह व्यापक वा सर्वशक्तिमान् कभी नहीं हो सकता। और शैतान ने सत्य कहा क मैं आदम से

उत्तम हूँ, इस पर खुदा ने गुस्सा क्यों कया? क्या आसमान ही में खुदा का घर है; पृ थवी में नहीं? तो काबे को खुदा का घर प्रथम क्यों लखा? (१३५)" (चतुर्दश समुल्लास)

उपरोक्त शंकाए भी सत्यार्थ प्रकाश से ही उद्धृत हैं जिनमे ऋ ष ने सत्य बात को सत्य ही कहा क्यों क बाइबिल और क़ुरान में शैतान ने सच बोला जिसे ऋ ष ने भी सत्य माना, मगर क़ुरानी खुदा और बाइबिल का यहोवा झूठ बोले ऐसा क्यों ?

क्या सतीश चंद गुप्ता जी अब बताने का कष्ट करेंगे की ऋ ष ने जो सत्य का मंडन कया उसपर तो आपने समीक्षा की समीक्षा बिनवजह कर डाली मगर जो क़ुरानी खुदा ने झूठ का प्रचार कया आदम और हव्वा से उसपर आपकी चुप्पी क्या पूर्वाग्रह से ग्र सत है अथवा मत सम्प्रदाय की असत्य बात को भी सच मान लेने से आप इस पर समीक्षा न करोगे ?

लेख लखने को तो बहुत बड़ा हो जावेगा मगर अभी के लए केवल इतना ही लखते हैं इस से पाठकगण बहुत कुछ समझ और वचार लेंगे की सतीश चंद गुप्ता जी की सत्यार्थ प्रकाश पर समीक्षाएं कतनी वाजिब हैं और कतनी नहीं।

आइये लौटिए वेदो की और।

नमस्ते

"सत्यार्थ प्रकाश : समीक्षा की समीक्षा का जवाब PART 2″

OCTOBER 24, 2015 1 COMMENT

"पहले अध्याय का जवाब "पार्ट 2″

जैसे की पछली पोस्ट को आपने पढ़ा, उस पोस्ट में मह र्ष दयानंद द्वारा की गयी क़ुरान पर समीक्षाओं और निर्देशो पर सतीश चंद गुप्ता जी द्वारा अपनी ही समीक्षाएं प्रस्तुत की गयी जो कसी भी प्रकार ठीक वदित नहीं होती क्यों क जो उन्होंने समीक्षाएं की वो समीक्षा कम पूर्वाग्रह द्वारा उठाये गए सवाल ज्यादा मालूम होते हैं क्यों क बिना पूरा प्रकरण समझे और ऋ ष के सत्य सद्धांत वाली बात को परखे अनजाने में ही शायद समीक्ष्याये की गयी होंगी, क्यों क ऐसा चतुर वद्वान मेने आज तक नहीं देखा जो एक मह र्ष द्वारा र चत सत्य सद्धांतो पर आधारित पुस्तक पर ही प्रश्न चन्ह लगा देवे ?

ये भी हो सकता है की सतीश चंद गुप्ता जी ऋ ष की बातो को पूर्ण अर्थ में न समझ सके हो क्यों क ऋ ष ने वेद और आर्ष ग्रंथो को ही मान्य कया ले कन शायद लेखक सत्य सद्धांतो की अपेक्षा कसी मत व सम्प्रदाय के पक्ष में ज्यादा झुकाव महसूस करता हो इस लए ऐसा दोषारोपण करने का प्रयास कया हो, खैर जो भी हो हम पूरी को शश करेंगे की लेखक द्वारा उठाई गयी शंकाओ पर अपना मत प्रकट करे ता क सत्य असत्य का निराकरण होने से ऋ ष के सत्य सद्धांतो की बाते लेखक को समझ आये।

ऐसे ही पहले अध्याय में 15 आक्षेप (समीक्षाएं) की गयी हैं जिनका क्रमगत जवाब इस लेख में दिया जायेगा।

1. प्रसूता छह दिन के पश्चात बच्चे को दूध न पलाये।

समीक्षा : अब दे खये लेखक ने ऋ ष की बात को न समझकर क्या से क्या लख दिया, ऋ ष ने जो लखा वो दे खये :

“ऐसा पदार्थ उस की माता वा धायी खावे क जिस से दूध में भी उत्तम गुण प्राप्त हों। प्रसूता का दूध छः दिन तक बालक को पलावे। पश्चात् धायी पलाया करे परन्तु धायी को उत्तम पदार्थों का खान पान माता- पता करावें। जो कोई दरिद्र हो, धायी को न रख सके तो वे गाय वा बकरी के दूध में उत्तम औष ध जो क बुद् ध, पराक्रम, आरोग्य करने हारी हों उनको शुद्ध जल में भजा, औटा, छान के दूध के समान जल मलाके बालक को पलावें।” (द् वत्य समुल्लास)

अब दे खये ऋ ष ने कहीं लखा की प्रसूता ६ दिन बाद बच्चे को दूध न पलाये, बल्कि व्यवस्था बताई है की धाई जो उत्तम पदार्थो का खान पान करवाकर उसका दूध बच्चे को पलावे, अथवा निर्धन हो तो गाय, व बकरी के दूध में औष ध साथ में थोड़ी जल की मात्रा भी बच्चे को पलाये। क्यों क शशु का पाचन कमजोर होता है इस लए थोड़ा जल मलाने का वधान कया है।

दूसरी बात यदि लेखक का कहना ये है की प्रसूता यानी माता का दूध बच्चे को न पलाये तो उसके लए भी ऋ ष ने प्रथम ६ दिन तक माता को बच्चे को दूध पलाने की बात लखी है उसके पीछे की वैज्ञानिक बात दे खये :

माता के दूध में जो गुण होता है जिससे बच्चा स्वस्थ, निरोगी और बुद् धमान बनता है उसे “कोलोस्ट्रम” कहते हैं, ये एक प्रकार से माता के शरीर में दूध ही होता है, जो पहले २४ घंटे में बहुत गाढ़ा, और पीला रंग का निकलता है जिसे बच्चे को पलाना बेहद जरुरी है, २-४ दिन बाद ये हल्का पीला दूध होता जाता है और ८वे दिन ये पीला रंग यानी “कोलोस्ट्रम” सामान्य लेवल पर आ जाता है। यानी दूध का रंग और गुण दोनों ही सामान्य हो जाते हैं, और जो शुरूआती ६ दिन का गुणवर्धक और बलवर्धक औष ध सामान दूध है वो तो मह र्ष ने प्रसूता द्वारा शशु को पलाने का वधान ऋ ष ने आर्ष ग्रंथो के आधार पर कर ही दिया है।

हालां क मे डकल स्टडीज बताती हैं की ६ महीने तक दूध पलाना चाहिए, ले कन ऋ ष ने जिस महत्वपूर्ण बात की और निर्देश दिया है वो समझने वाला है दे खये :

“क्यों क प्रसूता स्त्री के शरीर के अंश से बालक का शरीर होता है, इसी से स्त्री प्रसव समय निर्बल हो जाती है इस लये प्रसूता स्त्री दूध न पलावे। दूध रोकने के लये स्तन के छिद्र पर उस ओषधी का लेप करे जिससे दूध स्र वत न हो।” (द् वत्य समुल्लास)

इस लए क्यों क स्त्री प्रसव बाद बेहद कमजोर हो जाती है, अतः जितना स्त्री और शशु की देखभाल और सुरक्षा की जाए वह उत्तम ही है। बाकी तो धायी भी स्तन पान करवाये तो

उत्तम उत्तम पदार्थ उसके भक्ष्य हेतु हो, व निर्धन होने पर गाय व बकरी के दूध में उत्तम औषध से शशु का लालन हो तो भी श्रेयस्कर है।

2. 24 वर्ष की स्त्री और 48 वर्ष के पुरूष का ववाह उत्तम है अर्थात् स्वामी जी के मतानुसार लड़के की उम्र लड़की से दूना या ढाई गुना होनी चाहिए। (3-31) (4-20) (14-143)

समीक्षा : अब देखये हमारे वद्वान बंधू गुप्ता जी का स्वाध्याय जो कभी शरीर शास्त्र पढ़ लया होता तो ऋष की बात का यु छोटा सा अंश लेकर समीक्षा न करते, देखये ऋष ने क्या लखा है :

इस शरीर की चार अवस्था हैं। एक (वृद्ध) जो १६वें वर्ष से लेके २५वें वर्ष पर्यन्त सब धातुओं की बढ़ती होती है। दूसरा (यौवन) जो २५ वें वर्ष के अन्त और २६वें वर्ष के आदि में युवावस्था का आरम्भ होता है। तीसरी (सम्पूर्णता) जो पच्चीसवें वर्ष से लेके चालीसवें वर्ष पर्यन्त सब धातुओं की पुष्टि होती है। चौथी (कि ञ्चत्परिहाण) तब सब सांगोपांग शरीरस्थ सकल धातु पुष्ट होके पूर्णता को प्राप्त होते हैं। तदनन्तर जो धातु बढ़ता है वह शरीर में नहीं रहता, कन्तु स्वप्न, प्रस्वेदादि द्वारा बाहर निकल जाता है वही ४० वां वर्ष उत्तम समय ववाह का है अर्थात् उत्तमोत्तम तो अड़तालीसवें वर्ष में ववाह करना।

आज वज्ञानं सम्मत है, ये चार चरण, बाल्यावस्था, युवावस्था, परिपक्व और वृद्ध ये चार अवस्थाये हैं, ऋष ने यही समझाने का प्रयास कया है, वज्ञानं भी मानता है की स्त्री का शरीर कम से कम 16-18 वर्ष का होना ही चाहिए और पुरुष का कम से कम 25 वर्ष। अधक से अधक ववाह योग्य आयु का ऋष ने वधान दिया है क्योंक इस अवस्था में शरीर परिपक्व और बुद्ध मच्योर होती है।

यूके में स्थित नई केस्टल यूनिवर्सटी के वज्ञानिको द्वारा की गयी शोध से प्रमाणत हुआ की महिलाये पुरुषो के मुकाबले जल्दी यहाँ तक की बहुत जल्दी परिपक्व होती हैं वहीँ "दी नई यॉर्क टाइम्स" में पछले साल दिसम्बर २०१४ में छपी खबर के मुताबिक ३२ वर्ष की उम्र में ववाह हुए पुरुषो की शादी कम उम्र में हुई शादियों के मुताबिक बेहतर रिजल्ट देती है।

3. गर्भ स्थिति का निश्चय होने पर एक वर्ष तक स्त्री-पुरुष का समागम नहीं होना चाहिए। (2-2) (4-65)

समीक्षा : हमारे शंकाकर्ता बंधू गुप्ता जी शायद समीक्षा करने हेतु ये भूल गए की ववाह का दायित्व संतानोत्पत्त के साथ साथ अपनी जीवनसंगनी का स्वास्थय और शरीररक्षा भी होती है, शायद हमारे बंधू यौनसुख को ज्यादा महत्त्व देने के कारण ये बुनियादी नियम भी भूल गए की यौन सुख महज कुछ मनट का होता है जबक इस यौन सुख के कारण यदि भ्रूण या गर्भ में इस यौनकर्षण के द्वारा कुछ अकस्मात् गंभीर हो गया तो ये बेहद गलत बात होगी। क्योंक गर्भ में भ्रूण बनने के बाद यदि यौन क्रया करते रहे तो इससे गर्भ में मौजूद शशु पर बुरा प्रभाव पड़ता है। ऋष ने ये बात इसलए भी लखा है ताक ब्रह्मचर्य को जीवन में अपनाया जाए, क्योंक सभी जानते हैं वीर्य की रक्षा जीवन की रक्षा है। अब जो लोग यौनसुख

के अ भलाषी हैं उनको ब्रह्मचर्य जल्दी समझ नहीं आ सकता। ये बहुत शोध और समझने का वषय है।

4. जब पति अथवा स्त्री संतान उत्पन्न करने में असमर्थ हों तो वह पुरूष अथवा स्त्री नियोग द्वारा संतान उत्पन्न कर सकते हैं। (4-122 से 149)

समीक्षा : हमारे शंकाकर्ता बंधू शायद भूल गए की यदि जिसके संतान न हो पाती हो तो उसके पास दो उपाय होते हैं, 1. संतान गोद लेना अथवा नियोग जिसे आज के समय में IVR के नाम से भी जाना जाता है। इस वषय पर वस्तार से आगे के अध्याय में लखा जायेगा।

5. यज्ञ और हवन करने से वातावरण शुद्ध होता है। (4-93)

समीक्षा : हमारे शंकाकर्ता बंधू गुप्ता जी शायद वज्ञानं और रासायनिक क्रया को भूल गए, क्यों क वेद और आर्ष साहित्य को ठीक ढंग से न पढ़ पाने के यही परिणाम होता है, खैर गुप्ता जी ये दे खये आधुनिक वज्ञानं के अनुसार सूर्य की धुप क्षयरोग के लए बचाव और उपचार दोनों है
http://www.dailymail.co.uk/…/Sunshine-vitamin-helps-treat-p…
अब इस समय पर यज्ञ करना लाभदायक ही होगा क्यों क यज्ञ में प्रयुक्त होने वाली सामग्री में मुख्य रूप से गौघृत, खांड अथवा शक्कर, मुनक्का, कश मश आदि सूखे फल जिनमे शक्कर अ धक होती है, चावल, केसर और कपूर आदि के संतु लत मश्रण से बनी होती है।
अब इस वषय पर कुछ वैज्ञानिको के वचार :

१. फ्रांस के वज्ञानवेत्ता ट्रिलवर्ट कहते हैं : जलती हुई शक्कर में वायु – शुद्ध करने की बहुत बड़ी शक्ति होती है। इससे क्षय, चेचक, हैजा आदि रोग तुरंत नष्ट हो जाते हैं।

२. डॉक्टर एम टैल्ट्र ने मुनक्का, कश मश आदि सूखे फलो को जलाकर देखा है। वे इस निर्णय पर पहुंचे हैं की इनके धुंए में टायफाइड ज्वर के रोगकीट केवल तीस मनट तथा दूसरी व्या धयों के रोगाणु घंटे – दो घंटे में मर जाते हैं।

३. प्लेग के दिनों में अब भी गंधक जलाई जाती है, क्यों क इसमें रोगकीट नष्ट होते हैं। अंग्रेजी शासनकाल में डाकटर करनल कंग, आई एम एस, मद्रास के सेनेटरी क मश्नर थे। उनके समय में वहां प्लेग फ़ैल गया। तब १५ मार्च १८९८ को मद्रास वश्व वद्यालय के वद्या र्थयों के समक्ष भाषण देते हुए उन्होंने कहा था – "घी और चावल में केसर मलकर अग्नि में जलाने से प्लेग से बचा जा सकता है।" इस भाषण का सार श्री हैफ कन ने "ब्यूबॉनिक प्लेग" नामक पुस्तक मे देते हुए लखा है, "हवन करना लाभदायक और बुद् धमत्ता की बात है।"

मह र्ष दयानंद ने अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में लखा है :

"जब तक इस होम करने का प्रचार रहा ये तब तक ये आर्यवर्त देश रोगो से रहित और सुखो से पूरित था अब भी प्रचार हो तो वैसा ही हो जाए।"
(स. प्र. तृतीय समुल्लास)

यहाँ ऋ ष इसी वज्ञानं को समझाने की को शश कर रहे हैं जो आज का आधुनिक वज्ञानं मानता है। इस वषय पर वस्तार से आपको आगे के अध्यायों में बताया जायेगा।

5-5 पॉइंट के हिसाब से लेखक की 15 शंकाओ का जवाब दिया जा रहा है जिस वषय को शार्ट में लखा है उसका पूरा वस्तार उक्त वषय से सम्बं धत अध्याय में पूर्ण रूप से प्रस्तुत करने का ध्येय रहेगा। क्यों क हमारे बंधू गुप्ता जी लेखन को नहीं जानते होंगे इस लए जो १५ पॉइंट इन्होने पहले अध्याय में उठाये वही १५ पॉइंट पर पूरी कताब बेस है, इस लए यहाँ जिन पॉइंट को वस्तार से बताया उनका सम्बन्ध आगे की अध्याय में नहीं है इस लए यही सम्पूर्ण बता दिया है, क्यों क बार बार एक ही वषय को बताते रहने से "पुनरुक्ति दोष" होता है जो हम नहीं चाहते, ले कन हमारे शंकाकर्ता बंधू की तो पूरी पुस्तक ही इस दोष से युक्त है, क्यों क जगह जगह एक ही वषय को बार बार व्यर्थ ही घसीटा जा रहा है ता क इनकी पुस्तक बड़ी हो जाए और ऋ ष पर लेखक कुछ आप त दर्ज करवा सके, सो ये तो हो नहीं सका उलटे शायद लेखक पर ही अब कुछ सवाल खड़े हो गए हैं जिनमे प्रमुख है "पुनरुक्ति दोष"

ऋ ष के लेखन पर तो लेखक ने व्यर्थ ही सवाल खड़े करे मगर जो इनकी पुस्तक में पुनरुक्ति दोष है उसपर लेखक कब वचार करेंगे ?

"सत्यार्थ प्रकाश : समीक्षा की समीक्षा का जवाब PART 3″

OCTOBER 24, 2015 LEAVE A COMMENT

"पहले अध्याय का जवाब पार्ट 3″

पछली पोस्ट में सतीश चंद गुप्ता जी द्वारा ल खत पुस्तक के पहले अध्याय में उठाये 15 पॉइंट में से 5 के जवाब दिए गए अब गत लेख से आगे बढ़ते हुए 6 से 10 पॉइंट तक के जवाब इस लेख के माध्यम से देने का प्रयास कया जाएगा।

6. मांस खाना जघन्य अपराध है। मांसाहारियों के हाथ का खाने में आर्यों को भी यह पाप लगता है। पशुओं को मारने वालों को सब मनुष्यों की हत्या करने वाले जानिएगा। (10-11 से 15)

समीक्षा : लेखक की इस समीक्षा का जवाब देने से पहले हम बता दे की ये पॉइंट भी "पुनरक्ति दोष" में आता है, क्यों क लेखक की पुस्तक में "जीव हत्या और मांसाहार" – अहिंसा परमो धर्मः" और "शाकाहार का प्रोपेगंडा" ये तीन अध्याय मांस भक्षण पर ही आधारित है तब पहले अध्याय में भी इस पॉइंट को जताना और फर तीन अध्याय एक ही वषय पर बनाने, ये कोई वद्वान लेखक का काम तो हो नहीं सकता, शायद इसी कारण से लेखक मह ष दयानंद की सत्यार्थ प्रकाश समझ भी न सका और समीक्षाओं का समीक्षा कर डाली,

खैर पॉइंट बनाया है तो इस पॉइंट का जवाब भी शार्ट में ही दिया जाएगा, क्यों क हम अपने लेखन में "पुनरक्ति दोष" नहीं चाहेंगे। वस्तार से जवाब सम्बं धत वषय के अध्याय में दिया जायेगा।

इस पॉइंट का जवाब देने के लए हम क़ुरान की कुछ आयते प्रकट करना चाहते हैं दे खये :

और धरती पर चलने वाले सब के सब जानवर तथा अपने दोनों पंखो से उड़ने वाले पक्षी तुम्हारी तरह की जमाते (दल) हैं। (क़ुरान ६:३८)

इस आयात में बताया की जैसे मनुष्य हैं वैसे ही हमारी तरह पशु पक्षी भी हैं।

क्या तू देखता नहीं की अल्लाह वह है की जो कोई आसमानो और जमीन में निवास करते हैं सब उसी का गुण-गान करते हैं और उसी के सामने पक्षी पंक्तिबद्ध हो कर उपस्थित हैं। उनमे से प्रत्येक (अपने प्राकृतिक स्वाभाव के अनुसार) अपनी उपासना एवं अपने स्तुति गान को जानता है ……………
(क़ुरान २४:४२)

इस आयत में बताया जैसे मुस्लिम बंधू नमाज करते हैं वैसे ही प्रत्येक पशु पक्षी अपनी अपनी भाषा में उस ईश्वर की उपासना करते हैं यानी वो पशु पक्षी भी मुस्लिम हैं। यदि ऐसा कहो की प्रत्येक माँसाहारी पशु शाकाहारी पशु को अपना भोजन बनाता है, तो यहाँ ये समझने वाली बात होगी की यदि हम भी खुद को पशु मान ले तब तो हमें कसी अन्य पशु को खाने में कोई बुराई न दिखेगी, मगर हम अपने को पशु समझते हैं ? हम तो मनुष्य हैं जो अल्लाह की बनाई सर्वोत्कृष्ट रचना है तो क्या हम अपनी बुद् ध उपयोग न करे ? या केवल पशु के मांस खाने के चक्कर में अपनी जीभ लोलुपता से मनुष्य होते हुए भी पशु से भी निम्न दर्जे के जाकर हैवान बनकर मांसभक्षण करे ?

क्या ये मनुष्यता होगी ?

अथवा मुहम्मद साहब की सखाई तालीम की पशुओ की सेवा करो, पशुओ को ना मारो, आदि उत्तम बातो का ग्रहण कर वेद धर्म का पालन कर मनुष्य बने रहे।

और हमने धरती को सारी मखलूक के भले के लए बनाया है।
(क़ुरान ५५:११)

जैसे मनुष्यो है वैसे ही पशु पक्षी भी हैं और सभी मखलूक के जीने का अ धकार अल्लाह ने दिया है , उनके भले के लए धरती बनाई है तब कैसे कसी मनुष्य को कसी पशु अथवा पक्षी की जान लेने का अ धकार मला ? क्यों वो कसी पशु पक्षी की जिंदगी लेकर अपनी भूख मटाता है ? क्या अल्लाह यही चाहता है या मुहम्मद साहब ने ऐसा आदेश कया है ?

आइये हदीस से दिखाते हैं मुहम्मद साहब ने क्या निर्देश कया है :

अबु हुरैरा ने बताया की रसूल से कुछ लोगो ने पूछा की क्या पशुओ की सेवा सुश्रुवा करने से हमें प्रतिफल (इनाम) मलेगा ?

रसूल ने कहा हाँ, कसी भी पशु पक्षी व जी वत प्राणी की सेवा करने से प्रतिफल (इनाम) मलता है, ऐसी सेवा करने वाले मनुष्यो को अल्लाह धन्यवाद देता है और उनके पाप माफ़ करता है।

Reference : Sahih al-Bukhari 6009
In-book reference : Book 78, Hadith 40
USC-MSA web (English) reference : Vol. 8, Book 73, Hadith 38

अब बताओ, लेखक महोदय क्या अब भी अल्लाह, क़ुरान और रसूल की इतनी दयापूर्ण बातो को नकार कर, केवल जीभ के स्वाद के लए पशुओ की निर्दयता से हत्या करकर अपना पेट भरना चाहोगे ?

जब क़ुरान भी पशु प क्षयों को मनुष्यो की जमात मानता है, उन्हें भी धरती पर रहने का सामान अ धकार अल्लाह और क़ुरान देता है, मुहम्मद साहब पशु प क्षयों को बेजबान मानकर उनकी सेवा करने को उम्दा कर्म बताते हैं, और तो और पशु प क्षयों को अल्लाह ने नमाज़ पढ़ने वाला मुस्लिम तक मान
लया तब भी क्या एक मुस्लिम दूसरे मुस्लिम का क़त्ल कर उसे खा कर पेट भरे तो उसे पाप नहीं तो क्या लेखक महोदय पुण्य का कार्य कहेंगे ?

The Holy Prophet(s) used to say: "Whoever is kind to the creatures of God, is kind to himself." (Wisdom of Prophet Mohammad(s); Muhammad Amin; The Lion Press, Lahore, Pakistan; 1945).

इसे पढ़िए और सम झए – मुहम्मद साहब जो इतने बड़े और महान पशु पक्षी प्रेमी थे जो सभी पशु प क्षयों मनुष्यो में एक ही जीव देखते थे, जो दयालुता के पैरोकार थे, कृपया उनके नाम पर जीव-हत्या करके खाना और पाप न मानना उलटे मह र्ष दयानंद जी पर आक्षेप कर देना जो क़ुरान और मुहम्मद साहब की कही सत्य बात "जीव हत्या पाप" के सन्दर्भ में ही लेखक का शंका और सवाल उठा देना ये कोई वद्वान मनुष्य का कार्य नहीं हो सकता।

7. मुर्दों को गाड़ना बुरा है क्यों क वह सड़कर वायु को दुर्गन्धमय कर रोग फैला देते हैं। (13-41, 42)

समीक्षा : यहाँ इस वषय पर केवल शार्ट में प्रकाश डाला जा रहा है ता क वस्तार से सम्बं धत वषय पर आधारित अध्याय में बताया जा सके। दे खये कोई भी जीव चाहे मनुष्य हो अथवा पशु व पक्षी मरते ही हैं और शरीर से आत्मा का वयोग होने पर वह शरीर रोगाणुओं और जीवाणुओ का घर बन जाता है जो सड़ता है, क्यों क शरीर में मौजूद जो मक्रोजियम्स हैं वह शरीर को अंदर से सडाना स्टार्ट करते हैं जिससे मृत शरीर का pH बैलेंस बिगड़ता है और अति दुर्गन्ध बदबू आनी स्टार्ट हो जाती है, जब यह मृत शरीर जमीन में गाड़ा जाता है तब pH बैलेंस बहुत अ धक हो जाता है और प्राकृतिक रूप शरीर के "गुड न्यूट्रिएंट्स" बाहर नहीं निकल पाते जिससे जमीन के अंदर ही वकार उत्पन्न होता है और अ धक बदबू आती है।

इसका एक दूसरा पहलु और भी है इस तरह के मृत शरीर को दफनाए जाने से जमीन में सो डयम की मात्रा २०० से २००० गुना अ धक तक बढ़ जाती है जिससे पेड़ पौधों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है।

तीसरा महत्वपूर्ण कारण है की मृत शरीर को दफनाने पर जमीन में अनेक तरह के बेक्टेरिआ और जानलेवा टॉक्सिन्स का निर्माण होने लगता है, अ धकतर पशुओ को जमीन में दफनाने से एक खतरनाक टोक्सिन botulinum टोक्सिन उत्पन्न होता है जो धरती में मौजूद पानी को वषैला करता जाता है जिससे कैंसर और अनेक प्रकार की भयंकर बीमारिया उत्पन्न होती हैं।

अब आप लोग खुद भी सो चये की क़ुरान में कहीं भी मृत शरीर को दफनाने का वर्णन मलता भी नहीं है, तो क्यों व्यर्थ ही शरीर को दफनाया जाता है ? क्या लेखक कोई आयत क़ुरान में से दे सकते हैं जो मृत शरीर को दफनाने के लए अल्लाह ने नाजिल की हो ?

8. लघुशंका के पश्चात् कुछ मुत्रांश कपड़ों में न लगे, इस लए ख़तना कराना बुरा है। (13-31)

समीक्षा : लेखक ने ऋ ष की क़ुरान पर की गयी समीक्षाओं पर अपनी इतनी व्यर्थ समीक्षाएं की हैं की वे शायद भूल गए की खतना करना खुद क़ुरान का आदेश नहीं है, पूरी क़ुरान में कहीं भी अल्लाह ने खतना का आदेश नहीं दिया, जब क़ुरान खुद खतना का आदेश नहीं करती तब लेखक को इसके फायदे व नुकसान का अंदाजा नहीं हो सकता, क्यों क अल्लाह सर्वज्ञ है इस लए उसने क़ुरान में खतना का आदेश नहीं कया क्यों क वो जानता है की खतना करना वैज्ञानिक नहीं। क्यों क ऋ ष की बात जायज़ है, यदि अल्लाह खतना का आदेश करता तो पहले ही मनुष्य को खतना करके भेजता ले कन ऐसा नहीं कया इसके वपरीत लेखक ने खुदाई काम यानि मानव शरीर से छेड़छाड़ और क़ुरान की शक्षा पर ही आक्षेप कया है, दे खये :

(यह सभी गवाहियाँ बताती हैं की) निसंदेह हम ने मानव को अच्छी से अच्छी अवस्था में पैदा कया है।
(क़ुरान 95:4)

और हमने मनुष्य को गीली मटटी के सत से बनाया। (१३)

फर उसे एक ठहरने वाले स्थान में वीर्य के रूप में रखा। (१४)

फर वीर्य को प्रगति देकर ऐसा रूप प्रदान कया की वह चपकने वाला एक पदार्थ बन गया, फर उस चपकने वाले पदार्थ को मांस की एक बोटी बना दिया, फर हमने इसके बाद उस बोटी को हड् डयों के रूप में बदल दिया, फर हमने उन हड् डयों पर मांस चढ़ाया। फर उसे एक और रूप में बदल दिया। अतः बड़ी बरकत वाला है वह अल्लाह जो सब से अच्छा पैदा करने वाला है। (१५)

(क़ुरान २३:१३-१५)

जिस ने जो कुछ भी पैदा कया है सर्वोत्तम शक्तियों से पैदा कया है और मनुष्य को गीली मटटी से पैदा कया है। (८)

फर उसे पूर्ण शक्तिया प्रदान की और उसमे अपनी और से आत्मा डाली तथा तुम्हारे लए कान, आँख और दिल बनाये, परन्तु तुम लेश मात्र भी धन्यवाद नहीं करते। (१०)

(क़ुरान ३२:८-१०)

अतः तू अपना सारा ध्यान धर्म में लगा दे, इस प्रकार की तुम में कोई टेढ़ापन न हो। तू अल्लाह के पैदा कये हुए प्राकृतिक स्वाभाव को अपना, (वह प्राकृतिक स्वाभाव) जो अल्लाह ने लोगो में पैदा कया है। अल्लाह की रचना में कसी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं हो सकता। यही कायम रहने वाला धर्म है, कन्तु बहुत से लोग जानते नहीं।

(क़ुरान ३०:३०)

उपरोक्त आयतो पर ध्यान से पढ़ने पर ज्ञात होता है की क़ुरान में अल्लाह ने स्पष्ट रूप से बता दिया है की अल्लाह ने मनुष्य को पूर्ण, उत्तम और सबसे बेहतर शरीर के साथ बनाया है, साथ ही अल्लाह ने बता दिया की उसकी बनाई संरचना में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता, न ही कोई करेगा, जो ऐसा कार्य करता है वह धर्म का कार्य नहीं हो सकता क्यों क अल्लाह ने क़ुरान में ही कहा है :

इसी प्रकार उन लोगो को मूर्खता पूर्ण बातो की और बहका कर ले जाया जाता है जो अल्लाह की आयतो का हठ से इंकार करते हैं। (६४)

क़ुरान ४०:६४)

अब शायद लेखक को समझ आ जाना चाहिए की अल्लाह की बनाई सम्पूर्ण और सर्वोत्कृष्ट रचना जिसमे कोई खोट नहीं उसमे जबरदस्ती खतना करवाना न तो वज्ञानं पूर्ण कोई तथ्य है न ही क़ुरान का आदेश बल्कि अल्लाह की अवज्ञा करना ही सद्ध होता है जिसे क़ुरान में मूर्खतापूर्ण बातो की और बहकाना या फर शैतान का काम कहा जा सकता है।

अतः जो काम मात्र कुछ सेकंड में पानी से धोकर साफ़ कया जा सकता है , उसके लए खतना करवाना क़ुरान अनुसार ठीक वदित नहीं होता। अतः ऋ ष का कथन युक्तियुक्त है। इस वषय पर वस्तार से लेख भी लखा जाएगा ता क जो मथक लेखक ने एड्स से बचाव के दिए हैं उनका खंडन आप सबको वदित होगा। अब लेखक बताये की वो क्यों क़ुरान के खलाफ जाकर खतना करवाने की सलाह दे रहे हैं ?

9. दंड का वधान ज्ञान और प्रतिष्ठा के आधर पर होना चाहिए। (6-27)

समीक्षा : लेखक शायद समीक्षा करने में ये बात भूल गए की ऋ ष ने कतनी उत्तम दंड वधान की और इशारा कया है, शायद लेखक केवल पूर्वाग्रह का शकार है जो ऋ ष की इतनी महान सोच को भी न समझ पाया दे खये :

जिस अपराध में साधारण मनुष्य पर एक पैसा दण्ड हो उसी अपराध में राजा को सहस्र पैसा दण्ड होवे अर्थात् साधारण मनुष्य से राजा को सहस्र गुणा दण्ड होना चाहिये। मन्त्री अर्थात् राजा के दीवान को आठ सौ गुणा उससे न्यून सात सौ गुणा और उस से भी न्यून को छः सौ गुणा इसी प्रकार उत्तर-उत्तर अर्थात् जो एक छोटे से छोटा भृत्य अर्थात् चपरासी है उस को आठ गुणे दण्ड से कम न होना चाहिये। क्यों क यदि प्रजापुरुषों से राजपुरुषों को अ धक दण्ड न होवे तो राजपुरुष प्रजा पुरुषों का नाश कर देवे, जैसे सह अ धक और बकरी थोड़े दण्ड से ही वश में आ जाती है। इस लये राजा से लेकर छोटे से छोटे भृत्य पर्य्यन्त राजपुरुषों को अपराध में प्रजापुरुषों से अ धक दण्ड होना चाहिये।।३।।

वैसे ही जो कुछ ववेकी होकर चोरी करे उस शूद्र को चोरी से आठ गुणा, वैश्य को सोलह गुणा, क्षत्रिय को बत्तीस गुणा।।४।।

ब्राह्मण को चौसठ गुणा वा सौ गुणा अथवा एक सौ अट्ठाईस गुणा दण्ड होना चाहिये अर्थात् जितना जितना ज्ञान और जितनी प्रतिष्ठा अ धक हो उस को अपराध में उतना ही े अ धक दण्ड होना चाहिए।।५।।

राज्य का अ धकारी धर्म्म और ऐश्वर्य की इच्छा करने वाला राजा बलात्कार काम करने वाले डाकुओं को दण्ड देने में एक क्षण भी देर न करे।।६।।

(षष्ठम समुल्लास)

अब सो चये ऐसी महान वचारधारा और दण्डव्यवस्था केवल वैदिक धर्म में ही मल सकती है और मह र्ष दयानंद जैसे आप्त पुरुष ही इसका उद्घोष कर सकते हैं तथा वैदिक जनता ही मान्य करेगी। क्यों क लेखक को तो इसमें भी दोष नजर आ रहा है।

आप खुद सो चये यदि कोई जज गलत निर्णय से कसी सामान्य निरपराध पुरुष को सजा देवे तो क्या ऐसे निर्णयकारी जज को सामान्य से अ धक दंड नहीं मलना चाहिए ? बिलकुल तर्कपूर्ण और सामाजिक व्यवस्था को सुदृढ़ करने वाली दण्डव्यवस्था है ले कन क्या क़ुरान ऐसी व्यवस्था देती है ? क्या लेखक बताएँगे ऐसी समृद्ध और तर्कपूर्ण दण्डव्यवस्था का ववरण क़ुरान या अन्य कसी धर्म ग्रन्थ के आधार पर ?

10. ईश्वर के न्याय में क्षणमात्र भी वलम्ब नहीं होता । (14-105)

समीक्षा : लेखक ने ऋ ष के क़ुरान पर उठाये आक्षेपों की समीक्षा में ईश्वर की न्यायवेवस्था पर ही प्रश्न चन्ह खड़े कर दिए, क्या ऐसे लेखन और सोच को बुद् धमानी के स्तर पर कुछ अंक दिए जा सकते हैं ? नित दैनिक रूप से हम देखते हैं की हमें क्षण प्रतिक्षण सुख दुःख आदि का अनुभव होता है, प्रत्येक क्षण में हम सुखी व दुखी अनुभव करते हैं क्या ये सुख दुःख हमें कर्मो के आधार पर प्रत्येक क्षण में प्राप्त नहीं हो रहा ?

क्या ये दुःख सुख जो हम जीवन के प्रत्येक क्षण में अनुभव करते हैं ये ईश्वर की न्यायवेवस्था नहीं है ? क्या लेखक को ये सुख दुःख अनुभव नहीं होते ? इस आक्षेप पर इससे अ धक और क्या लख सकते हैं जब क लेखक केवल पूर्वाग्रह से ग्र सत होकर ईश्वर की

न्यायकारी व्यवस्था पर ही प्रश्न चन्ह लगा रहा हो ? शायद क़ुरान की "अंतिम दिन" वाली न्यायकारी व्यवस्था से लेखक पूर्ण सहमत है, मगर हम लेखक से ही पूछना चाहेंगे यदि अंतिम दिन ही सबका न्याय होगा तो फर जो प्रत्येक जीव जीवन के हर क्षण में सुख दुःख अनुभव कर रहा वो कस प्रभाव के कारण ? क्यों क लेखक शायद पूर्वजन्मों का फल तो मानता नहीं तो जब पुर्जन्मों का फल नहीं तो आपके कये इसी जन्म के कर्म फल अनुसार आपको हर क्षण सुख दुःख अनुभव हो रहे हैं तब "अंतिम दिन" न्याय होगा ये वयवस्था तो ठप हो गयी।

तो अब लेखक बताये यदि वो पूर्वजन्म भी नहीं मानते और केवल अंतिम दिन ही न्याय होने पर वश्वास करते हैं तो जो हर क्षण में सुख दुःख अनुभव हो रहा वो कस कारण ?

लेख बहुत बड़ा हो गया और अभी और भी लखते गए तो बहुत बढ़ जाएगा इससे पाठकगण इतने से ही समझ जायेंगे बाकी आगे के लेख में लेखक के उठाये १०-१५ पॉइंट के जवाब दिए जायेंगे।

लौटो वेदो की और।

नमस्ते।

"सत्यार्थ प्रकाश : समीक्षा की समीक्षा का जवाब PART 4"

OCTOBER 24, 2015 LEAVE A COMMENT

"पहले अध्याय का जवाब "पार्ट 4"

पछली पोस्ट में सतीश चंद गुप्ता जी द्वारा लखत पुस्तक के पहले अध्याय में उठाये 15 पॉइंट में से 10 पॉइंट तक के जवाब दिए गए अब गत लेख से आगे बढ़ते हुए 11 से 15 पॉइंट तक के जवाब इस लेख के माध्यम से देने का प्रयास कया जाएगा।

11. ईश्वर अपने भक्तों के पाप क्षमा नहीं करता। (7-52) (14-15)

समीक्षा : प्रस्तुत पुस्तक के लेखक शायद अपनी लेखनी में वो वजन नहीं बना रहे की मह ष के द्वारा क़ुरान पर उठाई गयी शंकाओ और समीक्षाओं पर वाजिब टिप्पणी कर पाये या फर लेखक को क़ुरान और बाइबिल आदि अन्य मत मतांतरों की शक्षाओ का ज्ञानाभाव है क्यों क क़ुरान में ही अल्लाह मयां अनेको जगह अपने भक्तो के पाप क्षमा नहीं करते।

बाबा आदम और हव्वा ये वो नाम है जो अल्लाह ने अपने हाथो से बनाया और इनको वो ज्ञान दिया जो सर्वोत्कृष्ट था, मगर शायद उतना ज्ञान भी नहीं दिया जितना शैतान को था तो बाबा आदम को सर्वोत्कृष्ट ज्ञान दिया इसपर शंका होती है, क्यों क जो अपने नंगे होने को नहीं जान पाये उनके ज्ञान (इल्म) में अल्लाह ने कमी रखी और उन्हें ज्ञान प्राप्त करने वाले

फल से भी दूर रखा ले कन शैतान ने क़ुरान में बाबा आदम और हव्वा को सच बोल दिया और अंततः आदम हव्वा को अदन का बाग़ (जन्नत) से निकलवा कर पृथ्वी पर लड़ाई झगड़ा और खून खराबा खातिर एक दूसरे का शत्रु बनवाकर भजवा दिया। ले कन सोचने वाली बात ये है की बाबा आदम अपनी इस गलती पर अल्लाह से माफ़ी मांगते रहे, मगर अल्लाह मयां ने माफ़ नहीं कया दे खये :

उन दोनों ने कहा की हे हमारे रब ! हम ने अपने आप पर अत्याचार कया। यदि तू हमें क्षमा नहीं करेगा एवं हम पर दया नहीं करेगा तो हम अवश्य घाटा पाने वालो में से हो जायेंगे। (२४)

तब उस (अल्लाह) ने कहा की तुम सारे के सारे यहाँ से चले जाओ। तुम में से कुछ लोग दूसरे कुछ लोगो के शत्रु होंगे और तुम्हारे लए इसी धरती में ठिकाना तथा कुछ समय तक (भाग्य) में लाभ उठाना होगा। (२५)

फर कहा की इसी पृथ्वी में तुम जी वत रहोगे और इसी में मरोगे और इसी में से निकले जाओगे। (२६)

(क़ुरान ७:२४-२६)

अब यहाँ लेखक को ज्ञात होना चाहिए की जो ईश्वर के क्षमा करने पर मह र्ष के आक्षेप पर समीक्षा की वो क़ुरान के हिसाब से भी ठीक वदित नहीं होती क्यों क ये कोई ऐसा पाप नहीं था जिसे अल्लाह माफ़ नहीं कर सकता था, न ही आदम ने अल्लाह से हटकर कोई पूज्य बनाया, ना ही कुफ्र कया, न पत्थर पूजा, बल्कि उसने तो ज्ञान बढ़ाने वाले वृक्ष का फल खाया, जिससे अल्लाह ने रोका था, अब ये बात तो सद्ध है की ईश्वर पाप का फल देता है, ले कन यहाँ तो इस आयत में पाप की जगह पुण्य कार्य यानी ज्ञान वृद् ध को ही पाप मान कर अल्लाह ने आदम हव्वा को गुनहगार बना दिया, जब क मह र्ष ने इसी बात पर सत्यार्थ प्रकाश में जो समीक्षा की वो समझने वाली है, दे खये :

"(समीक्षक) अब दे खये खुदा की अल्पज्ञता! अभी तो स्वर्ग में रहने का आशीर्वाद दिया और पुनः थोड़ी देर में कहा क निकलो। जो भ वष्यत् बातों को जानता होता तो वर ही क्यों देता? और बहकाने वाले शैतान को दण्ड देने से असमर्थ भी दीख पड़ता है। और वह वृक्ष कस के लये उत्पन्न कया था? क्या अपने लये वा दूसरे के लये ? जो अपने लये कया तो उस को क्या जरूरत थी? और जो दूसरे के लये तो क्यों रोका? इस लये ऐसी बातें न खुदा की और न उसके बनाये पुस्तक में हो सकती हैं। आदम साहेब खुदा से कतनी बातें सीख आये? (१२)"
(सत्यार्थ प्रकाश चतुर्दश समुल्लास)

यदि अल्लाह अपने भक्तो के पाप क्षमा करता होता तो बाबा आदम और हव्वा कभी धरती पर आते ही नहीं, इस लए सद्ध है की अल्लाह न तो आदम के न ही जिन्नो के पाप क्षमा करता है, ले कन यहाँ तो अल्लाह मया पर ही आक्षेप खड़ा हो जाता है की बहकाने वाले को तो मोहलत दी और जिसकी कोई गलती नहीं उसे दंड दिया, अब लेखक इस पर समीक्षा कब करेंगे ?

12. तथ्य – सूर्य केवल अपनी परि ध (Axis) पर घूमता है कसी लोक के चारों ओर (Orbit) नहीं घूमता। (8-71)

समीक्षा : अब दे खये लेखक की कतनी बड़ी अज्ञानता की मह र्ष की बात को बिना सोचे समझे ही क्या से क्या लख डाला, मुझे तो लेखक पूर्वाग्रह से अत्य धक पी ड़त लगता है क्यों क जो बिना पूर्वाग्रह के सत्यार्थ प्रकाश पढ़ लया होता तो इतनी बड़ी अवैज्ञानिक बात नहीं करता, दे खये मह र्ष ने क्या लखा और लेखक ने अल्पज्ञता से क्या समझा :

आ कृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च ।
हिरण्ययेन स वता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ।।
यजुः० अ० ३३। मं० ४३।।

जो स वता अर्थात् सूर्य्य वर्षादि का कर्त्ता, प्रकाशस्वरूप, तेजोमय, रमणीयस्वरूप के साथ वर्त्तमान; सब प्राणी अप्रा णयों में अमृतरूप वृष्टि वा करण द्वारा अमृत का प्रवेश करा और सब मूर्तिमान् द्रव्यों को दिखलाता हुआ सब लोकों के साथ आकर्षण गुण से सह वर्त्तमान; अपनी परि ध में घूमता रहता है कन्तु कसी लोक के चारों ओर नहीं घूमता। वैसे ही एक-एक ब्रह्माण्ड में एक सूर्य्य प्रकाशक और दूसरे सब लोकलोकान्तर प्रकाश्य हैं। जैसे-

दि व सोमो अ ध श्रतः।। -अथर्व० कां० १४। अनु० १। मं० १।।

जैसे यह चन्द्रलोक सूर्य्य से प्रका शत होता है वैसे ही पृ थव्यादि लोक भी सूर्य्य के प्रकाश ही से प्रका शत होते हैं। परन्तु रात और दिन सर्वदा वर्त्तमान रहते हैं क्यों क पृ थव्यादि लोक घूम कर जितना भाग सूर्य के सामने आता है उतने में दिन और जितना पृष्ठ में अर्थात् आड़ में होता जाता है उतने में रात। अर्थात् उदय, अस्त, सन्ध्या, मध्याह्न, मध्यरात्रि आदि जितने कालावयव हैं वे देशदेशान्तरों में सदा वर्त्तमान रहते हैं अर्थात् जब आर्य्यावर्त्त में सूर्योदय होता है उस समय पाताल अर्थात् 'अमेरिका' में अस्त होता है और जब आर्य्यावर्त्त में अस्त होता है तब पाताल देश में उदय होता है। जब आर्य्यावर्त्त में मध्य दिन वा मध्य रात है उसी समय पाताल देश में मध्य रात और मध्य दिन रहता है। जो लोग कहते हैं क सूर्य घूमता और पृ थवी नहीं घूमती वे सब अज्ञ हैं। क्यों क जो ऐसा होता तो कई सहस्र वर्ष के दिन और रात होते। अर्थात् सूर्य का नाम (ब्रध्नः) है। यह पृ थवी से लाखों गुणा बड़ा और क्रोड़ों कोश दूर है। जैसे राई के सामने पहाड़ घूमे तो बहुत देर लगती और राई के घूमने में बहुत समय नहीं लगता वैसे ही पृ थवी के घूमने से यथायोग्य दिन रात होते हैं; सूर्य के घूमने से नहीं। जो सूर्य को स्थिर कहते हैं वे भी ज्योति र्वद्या वत् नहीं। क्यों क यदि सूर्य न घूमता होता तो एक रा श स्थान से दूसरी रा श अर्थात् स्थान को प्राप्त न होता। और गुरु पदार्थ वना घूमे आकाश में नियत स्थान पर कभी नहीं रह सकता।
(सत्यार्थ प्रकाश अष्टम समुल्लास)

मह र्ष दयानंद ने वेदो और आर्ष ग्रंथो के गहन शोध पश्चात ही सत्यार्थ प्रकाश लखा, जिसमे साफ़ साफ़ लखा है की सूर्य अपनी परि ध में तो घूमता है साथ ही आकाशगंगा का चक्कर भी लगाता है क्यों क यदि सूर्य न घूमता तो एक रा श से दूसरी रा श को प्राप्त न होता। ये बात पूर्णतः वैज्ञानिक है, इसका प्रबल प्रमाण है की हम आर्य लोग मकर संक्रांति नामक पर्व

मानते हैं क्यों क इसी दिन सूर्य धनु रा श को छोड़ मकर रा श में प्रवेश करता है। मकर संक्रान्ति के दिन से ही सूर्य की उत्तरायण गति भी प्रारम्भ होती है। इस लये इस पर्व को कहीं-कहीं उत्तरायणी भी कहते हैं।

सूर्य कसी लोक का चक्कर नहीं लगाता क्यों क सभी लोक सूर्य का चक्कर लगाते हैं, शायद आपको गांगेयवर्ष समझ नहीं आ रहा इस लए कुछ दिक्कत हो रही है, आइये आपको गंगेयवर्ष समझाने का प्रयास करते हैं, दे खये हमारा सौरमंडल सूर्य और उसकी परिक्रमा करते ग्रह, क्षुद्रग्रह और धूमकेतुओं से बना है। इसके केन्द्र में सूर्य है और सबसे बाहरी सीमा पर वरुण (ग्रह) है। वरुण के परे यम (प्लुटो) जैसे बौने ग्रहो के अतिरिक्त धूमकेतु भी आते है।

जब केंद्र में सूर्य है, और वो अपनी धुरी पर घुमते हुए अन्य लोको को आकर्षण से बांधते हुए अपनी कक्षा में घूम कर अन्य लोको के साथ सौरमंडल के केंद्र में रहते हुए एक चक्कर लगता है उसे गांगेय वर्ष कहते हैं, क्यों क सूर्य सौरमंडल के केंद्र में है इस लए वो कसी ग्रह का चक्कर नहीं लगा सकता यदि सूर्य सौरमंडल के केंद्र में न होता और कोई अन्य ग्रह केंद्र में होता तब आप कह सकते थे की सूर्य उस ग्रह का चक्कर लगता है, हालाँ क ये हो ही नहीं सकता, क्यों क सूर्य स्वयं सौरमंडल के केंद्र में है जिससे सभी ग्रहो को आकर्षण से बंधे रखता है और सभी ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं साथ ही सूर्य उन सभी ग्रहो को लेकर गांगेय वर्षी कर चक्र अपनी कक्षा से पूरा करता है। ज्यादा लखने से लेख बड़ा हो जायेगा, अ धक जानकारी के लए गांगेय वर्ष पढ़े, साथ ही सूर्य सद्धांत।

शायद लेखक को हमारे आर्य पर्व पद्धति और आर्य ज्योतिष वज्ञानं का सद्धांत ज्ञात नहीं मेरी उनसे वनती है की वो एक बार सूर्य सद्धांत पुस्तक पढ़ कर स्वाध्याय करे व्यर्थ के आक्षेप और टीका टिप्पण्यो में समय व्यर्थ न करे। यदि हो सके तो क़ुरान से प्रमा णत कर दिखाए की सूर्य अपनी धुरी पर घूमता है ऐसी कोई आयत क़ुरान में निर्दे शत की हो ?

13. सूर्य, चन्द्र, तारे आदि पर भी मनुष्य सृष्टि है। (8-73)

समीक्षा : इस पुस्तक में जो लेखक हैं वो शायद अपनी इसी पुस्तक में प्रस्तुत “निवेदन” को खुद नहीं पढ़ पाये हैं, या फर मुम कन है की कसी अन्य व्यक्ति से लखवा दिया हो, क्यों क इनके इस “निवेदन” में ही जो इन्होने लखा उसे हम यहाँ दोहराना चाहते हैं दे खये :

यह ब्रह्माण्ड जिसमे हम रहते हैं, अत्यंत वशाल, वस्तृत और अद्भुत है। इसकी वशालता का अंदाजा ……………… इस ब्रह्माण्ड में न जाने कतने आकाशीय पंड हमारे सूर्य से लाखो गुना बड़े हैं और न जाने कतने सौर मंडल हैं। करोडो सौर मंडलों से बनने वाली एक आकाश गंगा है। जिसमे अरबो खरबो तारे हैं। इस ब्रह्माण्ड में न जाने कतनी करोड़ आकाश गंगाये हैं। …………… हर आकाशीय पंड गतिमान है। आकाशीय पंडो की गति में एक नियमबद्धता है, दिन रात के प्रत्यावर्तन में नियमबद्धता है। वनस्पति जगत में नियमबद्धता है। प्राणी जगत में नियमबद्धता है।

कतना व चत्र है यह ब्रह्माण्ड। देखकर आश्चर्य होता है। प्रश्न यह की जहाँ नियम हो क्या वहां नियामक नहीं होना चाहिए ? …. ब्रह्माण्ड की नियमबद्धता इस बात का प्रमाण है की

कोई चेतन शक्ति इसका सञ्चालन कर रही है। यहाँ की नियमबद्धता इस बात का भी प्रमाण है की वह परम शक्ति एक है।

………..शेष

ये यहाँ आप सभी पाठको दिखाना इस लए भी आवश्यक था की इस पुस्तक के लेखक या तो बुद् धमान हैं या फर केवल मह र्ष के सत्य सद्धांतो से अन भज्ञ और पूर्वग्रह से ग्र सत हैं, क्यों क खुद मान रहे हैं की इतना बड़ा ब्रह्माण्ड है, उसमे करोडो आकाशगंगाये, अनेक पंड, असंख्य ग्रह आदि, साथ ही नियमबद्धता और एक ही ईश्वर जो चेतन है, तो मेरे लेखक महोदय, मह र्ष दयानंद ने भी तो यही सत्यार्थ प्रकाश में बताया है, जब नियम बद्धता है तभी तो इस पृथ्वी जैसे ग्रह पर हम जीवन ले रहे हैं, ऐसे ही अनेको ग्रहो आदि पर जीवन क्यों नहीं होगा ? क्या वो अनेको आकाशगंगा और ग्रह सर्फ ब्रह्माण्ड को भरने और सजाने का शोपीस मात्र हैं ? क्या बुद् धमानी की बात है लेखक की खुद ही अपनी निवेदन में सत्य भी लखता है और फर मह र्ष की बातो पर आक्षेप भी करता है, क्या इसे लेखक का मान सक दिवा लयापन घो षत न कया जाए ?

आइये एक नजर मह र्ष दयानंद के उस वचार पर जो सत्यार्थ प्रकाश में लखा गया :

(प्रश्न) सूर्य चन्द्र और तारे क्या वस्तु हैं और उनमें मनुष्यादि सृष्टि है वा नहीं?

(उत्तर) ये सब भूगोल लोक और इनमें मनुष्यादि प्रजा भी रहती हैं क्यों क-

एतेषु हीदँ्सर्वं वसुहितमेते हीदँ्सर्वं वासयन्ते तद्यदिदँ्सर्वं वासयन्ते तस्माद्वसव इति।। -शत० का० १४।।

पृ थवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, चन्द्र, नक्षत्र और सूर्य इन का वसु नाम इस लये है क इन्हीं में सब पदार्थ और प्रजा वसती हैं और ये ही सब को वसाते हैं। जिस लये वास के निवास करने के घर हैं इस लये इन का नाम वसु है। जब पृ थवी के समान सूर्य चन्द्र और नक्षत्र वसु हैं पश्चात् उन में इसी प्रकार प्रजा के होने में क्या सन्देह? और जैसे परमेश्वर का यह छोटा सा लोक मनुष्यादि सृष्टि से भरा हुआ है तो क्या ये सब लोक शून्य होंगे? परमेश्वर का कोई भी काम निष्प्रयोजन नहीं होता तो क्या इतने असंख्य लोकों में मनुष्यादि सृष्टि न हो तो सफल कभी हो सकता है? इस लये सर्वत्र मनुष्यादि सृष्टि है।

(प्रश्न) जैसे इस देश में मनुष्यादि सृष्टि की आकृति अवयव हैं वैसे ही अन्य लोकों में होगी वा वपरीत?

(उत्तर) कुछ-कुछ आकृति में भेद होने का सम्भव है। जैसे इस देश में चीने, हबशी और आर्य्यावर्त्त, यूरोप में अवयव और रंग रूप आकृति का भी थोड़ा-थोड़ा भेद होता है इसी प्रकार लोकलोकान्तरों में भी भेद होते हैं। परन्तु जिस जाति की जैसी सृष्टि इस देश में है वैसी जाति ही की सृष्टि अन्य लोकों में भी है। जिस-जिस शरीर के प्रदेश में नेत्रदि अंग हैं उसी-उसी प्रदेश में लोकान्तर में भी उसी जाति के अवयव भी वैसे ही होते हैं। क्यों क-

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् ।

दिवं च पृथवीं चान्तरिक्षमथो स्वः ।। – ऋ० मं० १०। सू० १९०।।

धाता परमात्मा (ने) जिस प्रकार के सूर्य, चन्द्र, द्यौ, भूम, अन्तरिक्ष और तत्रस्थ सुख वशेष पदार्थ पूर्वकल्प में रचे थे वैसे ही इस कल्प अर्थात् इस सृष्टि में रचे हैं तथा सब लोक लोकान्तरों में भी बनाये गये हैं। भेद कञ्चित्मात्र नहीं होता।

(प्रश्न) जिन वेदों का इस लोक में प्रकाश है उन्हीं का उन लोकों में भी प्रकाश है वा नहीं?

(उत्तर) उन्हीं का है। जैसे एक राजा की राज्यव्यवस्था नीति सब देशों में समान होती है उसी प्रकार परमात्मा राजराजेश्वर की वेदोक्त नीति अपने सृष्टिरूप सब राज्य में एक सी है।

(सत्यार्थ प्रकाश अष्टम समुल्लास)

अब बताओ लेखक महोदय क्या अपना निवेदन ही पुस्तक से हटवा दोगे या महर्षि दयानंद की बात को अपना लोगे, आओ आपको वज्ञानं से भी प्रमाणत करता हु देखो :

"Scientists have been saying for years that nothing could possiblily live on this star's surface, but we've scanned Andross's ships going to and from the star. Only he would be foolhardy as to try to find military benefit in exploring a red dwarf like Solar. It's another situation we need to have you to check out for us Fox. Nothing in the Cornerian armoury can withstand the extreme temperature near the surface of the star, but your Arwings should be able to make it."
—General Pepper's Flight Log, pg 70

ये खोज पढ़ी सूर्य पर मलट्री बेनिफट और जहाजो का बेडा आदि बनाने की योजना है, पता नहीं लेखक कौन सी दुनिया में जी रहे, खैर अभी नासा की खोज पढ़िए :

WASHINGTON—In an announcement that could forever change the way scientists study the hydrogen-based star, NASA researchers published a comprehensive study today theorizing that the sun may be capable of supporting fire-based lifeforms. "After extensive research, we have reason to believe that the sun may be habitable for fire-based life, including primitive single-flame microbes and more complex ember-like organisms capable of thriving under all manner of burning conditions," lead investigator Dr. Steven T. Aukerman wrote, noting that the sun's helium-rich surface of highly charged particles provides the perfect food source for fire-based lifeforms. "With a surface temperature of 10,000 degrees Fahrenheit and frequent eruptions of ionized gases flowing along strong magnetic fields, the sun is the first star we've seen with the right conditions to support fire organisms, and we believe there is evidence to support the theory that fire-bacteria, fire-insects, and even tiny fire-fish were once perhaps populous on the sun's surface."

ज्यादा जानकारी के लए लंक :

http://www.theonion.com/article/scientists-theorize-sun-could-support-fire-based-l-34559

इससे भी ज्यादा जानकारी के लए बता दू, जितनी भी रिसर्च होती हैं बायोलॉजी में उसमे ये सद्धांत है की "All life's energy was solar".

ये सद्धांत है अटल सद्धांत, इस लए वेद ज्ञान ही सत्य और परम प्रमाण है, और भी अनेको प्रमाण हैं वज्ञानं से ही पर लेख बढ़ता जाएगा इस लए ववशता है पर पता नहीं इस पुस्तक के लेखक को वेद ज्ञान और मह र्ष दयानंद की वद्वत्ता का बोध कब होगा ?

14. सर के बाल रखने से उष्णता अ धक होती है और उससे बुद् ध कम हो जाती है। (10-02)

समीक्षा : लेखक के आक्षेप ही ऐसे हैं की जिनपर केवल हंसी आती है क्यों क जो पूरा प्रकरण पढ़ लया होता तो आपको शंका न होती, केवल एक हिस्सा उठा कर सोचो की मह र्ष पर आक्षेप सद्ध हो जायेगा सो संभव नहीं, पहले आपको दिखाते हैं मह र्ष ने क्या लखा है :

ब्राह्मण के सोलहवें, क्षत्रिय के बाईसवें और वैश्य के चौबीसवें वर्ष में केशान्त कर्म और मुण्डन हो जाना चाहिये अर्थात् इस व ध के पश्चात् केवल शखा को रख के अन्य डाढ़ी मूँछ और शर के बाल सदा मुंडवाते रहना चाहिये अर्थात् पुनः कभी न रखना और जो शीतप्रधान देश हो तो कामचार है; चाहै जितने केश रक्खे और जो अति उष्ण देश हो तो सब शखा सहित छेदन करा देना चाहिये क्यों क शर में बाल रहने से उष्णता अ धक होती है और उससे बुद् ध कम हो जाती है। डाढ़ी मूँछ रखने से भोजन पान अच्छे प्रकार नहीं होता और उच्छिष्ट भी बालों में रह जाता है।।१३।।
(दशम सम्मुलास)

अब दे खये लेखक की पूर्वाग्रह से ग्र सत मान सकता की जो ऋ ष ने समझाया उसे तो समझे नहीं उलटे अपनी पुस्तक में तथाक थत समीक्षा करने चल पड़े, सम झए ऋ ष की बात को,

यदि शीत प्रदेश, यानी जो ठंडा इलाका में रहने वाले लोग हो, तो वो सर के बाल ना कटाये, चाहे बढे बाल ही क्यों न रखे क्यों क बाल जो होते हैं वो तंतु (फाइबर) पदार्थ से बने होते हैं क्यों क ये गर्मी उत्पन्न करते हैं इस लए शीत प्रदेशो में उत्पन्न हुए पशुओ के बाल सामान्य मौसम के देशो में उत्पन्न हुए पशुओ से अ धक पाये जाते हैं, बाल में सबसे ज्यादा कार्बन होता है, जो थर्मल इंसुलेशन उत्पन्न करके गर्मी को सोख्ता है, जिससे सर में पसीना जल्दी नहीं सूखता और उससे अनेक प्रकार के फंगस और बेक्टेरिअ उत्पन्न होते हैं, अभी हाल में की गयी शोध के अनुसार Cutaneous Allodynia ये बीमारी जो माइग्रेन से सम्बं धत है इसी कारण होती है, और जैसे की आप जानते ही हैं की माइग्रेन जो है वो बुद् ध को कमजोर करता है, इससे ऋ ष की बात सत्य सद्ध होती है।

हम लेखक को केवल ऋ ष के सत्य सद्धांत पर खोज करने हेतु आग्रह करेंगे ता क व्यर्थ के आक्षेप से लेखक अपना और दुसरो का समय बर्बाद न करते जाए।

15. स्वामी दयानंद ने लखा है क वेदों का अवतरण ऋ षयों की मातृभाषा में न होकर संस्कृत भाषा में हुआ। संस्कृत भाषा उस समय कसी देश अथवा क़ौम की भाषा नहीं थी। कारण यह लखा है क अगर ईश्वर कसी देश अथवा क़ौम की भाषा में वेदों का अवतरण करता तो ईश्वर पक्षपाती होता, क्यों क जिस देश की भाषा में वेदों का अवतरण होता उसको पढ़ने और पढ़ाने में सुगमता और अन्यों को कठिनता होती। (7-89) (7-92)

समीक्षा : यदि इस पुस्तक के लेखक ने कभी भी संस्कृत वद्या को समझने का गंभीर प्रयास कया होता तो शायद मह र्ष की इस बात का भी जवाब खुद ही मल जाता, मगर खेद की लेखक को केवल और केवल आक्षेप करने की ही फुर्सत मली, स्वाध्याय की नहीं, क्यों क लेखक को ज्ञात होना चाहिए की वेदो में जो संस्कृत पायी जाती है उसे वैदिक संस्कृत कहते हैं, जो कभी कसी काल में कसी भी देश व समाज की भाषा नहीं रही, क्यों क इस वैदिक संस्कृत से ही लौ कक संस्कृत का ज्ञान ऋ ष मुनि वक सत कर पाये अतः लौ कक संस्कृत ही भारत की भाषा थी ले कन वैदिक संस्कृत तो सभी भाषाओ की जननी है, ऐसा वचार और मत तो अनेको पश्चिम वज्ञानिको का भी है। शायद लेखक को ज्ञात नहीं, आइये हम ही समझने का प्रयास करते हैं :

"अब हम समझते हैं भाषा का वस्तार कस प्रकार हुआ –

दे खये वेद में वैदिकी वाणी को नित्य कहा है –

तस्मै नूनम भद्यवे वाचा वरूप नित्यया। (ऋग्वेद 8.75.6)

नित्यया वाचा – अर्थात नित्य वेदरूप वाणी –

यानी की वैदिक संस्कृत यह सब वा णयों (भाषाओ) की अग्र और प्रथम है –

बृहस्पते प्रथमं वाचो अग्नं (ऋग्वेद 10.71.1)

प्रभु से दी गयी वेदवाणी ही इस सृष्टि के प्रारं भक शब्द थे। ईश्वर की प्रेरणा से यह वाणी सृष्टि के प्रारम्भ में ऋ षयों पर प्रकट होती है।

यज्ञेन वाचः पदवीयमायणतामानव वन्दन्नृ षषु प्र वष्टाम्। (ऋग्वेद 10.71.3)"

"प्रभु अग्नि आदि को वेदज्ञान देते हैं इससे अन्य यज्ञीय वृ त्तवाले ऋ षयों को यह प्राप्त होती है –

इसी मन्त्र में आगे लखा है –

इस ही प्रथम, निर्दोष और अग्र वाणी को लेकर लोग बोलने की भाषा का वस्तार करते हैं।

तामाभृत्या व्यदधुः पुरूत्रा तां सप्त रेभा अभी सं नवंते।। (ऋग्वेद 10.71.3)

इस वाणी को ऋ ष मानव समाज में प्रचारित करते हैं। यह वेदवाणी सात छन्दो से युक्त है अर्थात २ कान – २ नाक – २ आँख और एक मुख ये सात स्तोता बनकर इसे प्राप्त करते हैं – उपरोक्त प्रमाणों और तथ्यों से सद्ध होता है की मनुष्य की एक ही भाषा थी – और मनुष्यो ने इसी वेद वाणी से अर्थात प्रथम व पूर्ण भाषा संस्कृत से – अपूर्ण भाषाए – अर्थात जितनी भाषाए आज प्रच लत हैं उनका निर्माण कया – ले कन वैदिक संस्कृत में आज भी कोई फेर बदल नहीं हो सका – क्यों क वैदिक संस्कृत पूर्ण भाषा है –"

अब यहाँ सोचने वाली बात है की अलक़ुरआन एक संयुक्त शब्द है जो अरबी के दो शब्दों से बना है, एक "अल" जिसका अर्थ है " वशेष" दूसरा "कुरान" जो " करतैअन" धातु से निकला है जिसका अर्थ "पढ़ना" है अतः अलक़ुरआन का अर्थ हुआ वह जो लेख वशेष प्रकार से पढ़ा जाये। इस से सद्ध हुआ की अलक़ुरआन भी लखी हुई पुस्तक का नाम है न की ईश्वर के ज्ञान का। तो हमारे लेखक बंधू इस तथ्य पर कब शंका प्रकट कर रहे हैं की क़ुरआन केवल पढ़ने के लए है, ज्ञान के लए नहीं ?

जब क "वेद" " वद्" ज्ञाने धातु से निकला है। वेद का अर्थ है "ज्ञान"। यह कसी लेख वा पुस्तक का नाम नहीं प्रत्युत उस ज्ञान का नाम है जो परमात्मा ने मनुष्यो के कल्याणार्थ प्रका शत कया है।

अतः इतने से सद्ध है की मह र्ष दयानंद का सत्यार्थ प्रकाश में व र्णत वेदो और आर्ष साहित्यो का ज्ञान वज्ञानं सत्य पर आधारित है, हम लेखक के पहले अध्याय में मौजूद कुछ और आक्षेपों के भी वज्ञानसम्मत जवाब देंगे।

आओ लौटो वेदो की और

नमस्ते।

"सत्यार्थ प्रकाश : समीक्षा की समीक्षा का जवाब PART 5"

OCTOBER 24, 2015 LEAVE A COMMENT

पहले अध्याय का जवाब "पार्ट 5"

पछली पोस्ट में सतीश चंद गुप्ता जी द्वारा ल खत पुस्तक के पहले अध्याय में उठाये 15 पॉइंट में से 10 पॉइंट तक के जवाब दिए गए अब गत लेख से आगे बढ़ते हुए बाकी बचे हुए अन्य आक्षेपों तक के जवाब इस लेख के माध्यम से देने का प्रयास कया जाएगा।

1. ईश्वर जगत का नि मत्त (Efficient Cause) कारण है, उपादान कारण (Material Cause) नहीं है। (७-४५) (८-३)

इस आक्षेप में लेखक आगे लखता है :

वैदिक धर्म एकेश्वरवाद का प्रतिपादन करता है और उसे सृष्टिकर्ता भी मानता है, मगर स्वामी दयानंद ने कहा की उपादान कारण के बिना जगत की उत्प त्त संभव नहीं। ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनो अनादि हैं। ईश्वर मात्र शल्पी है, उसने सृष्टि का वकास कया है, सृजन नहीं कया। अर्थात जिस प्रकार कुम्भकार ने घड़ा बनाया, मटटी नहीं बनाई, ठीक इसी प्रकार परमेश्वर ने जगत बनाया। प्रकृति और जीव दोनों संसाधन (Material) पहले से मौजूद थे।

समीक्षा : आइये दे खये लेखक ने मह र्ष की बात को कतना समझा और जाना, मह र्ष दयानंद ने ईश्वर, जीव और प्रकृति ये तीनो अनादि हैं का सार्वभौ मक और अटल सद्धांत वेद ज्ञान के आधार पर ही दिया है, ले कन कुछ लोग इसे पूर्ण न समझकर व्यर्थ आक्षेप करते हैं, दे खये मह र्ष ने क्या समझाने का प्रयास कया है :

६-'अनादि पदार्थ' तीन हैं। एक ईश्वर, द् वतीय जीव, तीसरा प्रकृति अर्थात् जगत् का कारण, इन्हीं को नित्य भी कहते हैं। जो नित्य पदार्थ हैं उन के गुण, कर्म, स्वभाव भी नित्य हैं।

८-'सृष्टि' उस को कहते हैं जो पृथक् द्रव्यों का ज्ञान युक्तिपूर्वक मेल होकर नाना रूप बनना।

(स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाशः)

यहाँ वचारणीय है की ऋ ष जिस महत्वपूर्ण सद्धांत की और ध्यानाक र्षत कर रहे वो कतना वज्ञानपूर्ण महत्त्व रखता है दे खये, ये जगत जो कार्य रूप दिख रहा है, वह जड़ यानी अचेतन है, और ईश्वर चेतन सत्ता है, कोई भी चेतन सत्ता अपने में से कभी भी जड़ पदार्थ उत्पन्न नहीं कर सकती। क्यों क चेतन सत्ता चेतन ही उत्पन्न करती है जो उसके जैसा ही होता है ये सार्वभौ मक नियम है। मनुष्य, पशु, पक्षी चेतन सत्ता हैं वे कभी जड़ पदार्थ उत्पन्न नहीं कर सकते। और जड़ पदार्थ जड़ होता है वो वैसे भी स्वयं से कुछ उत्पन्न नहीं कर सकता है। मुस्लिम बंधू अल्लाह को चेतन मानते हैं, ले कन उसी चेतन से जड़ पैदा हुआ ये तथ्य कैसे स्वीकार्य है जब क क़ुरान में कहीं नहीं लखा की अल्लाह ने अपने में से धरती आकाश पैदा कये। यदि कहीं लखा हो तो लेखक दिखाए ?

अब कुछ ऐसा भी कहते हैं चेतन से चेतन उत्पन्न होता है तो ईश्वर से जीव क्यों नहीं क्यों क दोनों चेतन हैं तो इसका जवाब केवल इतने से ही समझ आ जायेगा की ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वव्यापी है तथा जीव अल्पज्ञ और एकदेशी है, ये दोनों सत्ता वस्तुतः चेतन हैं मगर दोनों के गुण भन्न हैं, अतः ये सद्ध है की ईश्वर और जीव भन्न भन्न चेतन सत्ता है क्यों क यदि ईश्वर से ही जीव की उत्प त्त हुई होती तो जीव भी सर्वज्ञ, सर्वव्यापी होना चाहिए ले कन ऐसा नहीं होता, ले कन दोनों ही चेतन सत्ता अजर हैं क्यों क इनकी उत्प त्त कभी नहीं होती और प्रकृति निर्जीव सत्ता है जो उपादान कारण है। इसमें वेद से प्रमाण है :

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते
तयोरन्यः पप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अ भ चाकशीति ||
ऋग्वेद म.1| सू.164| म.20||

मह र्ष दयानन्द जी ने इसके अर्थ इस प्रकार कये हैं –
(द्वा) जो ब्रह्म और जीव दोनों (सुपर्णा) चेतनता और पालनादि गुणों में सद्दश (सयुजा) व्याप्य व्यापक भाव से संयुक्त (सखाया) परस्पर मत्रतायुक्त सनातन अनादि हैं और (समानम्) वैसा ही (वृक्षम्) अनादि मूलरूप कारण और शाखारूप कार्ययुक्त वृक्ष अर्थात् जो स्थूल होकर प्रलय में छिन्न भन्न हो जाता है वह तीसरा अनादि पदार्थ इन तीनों के गुण, कर्म और स्वभाव भी अनादि हैं (तयोरन्यः) इन जीव व ब्रह्म में से एक जो जीव है वह इस वृक्षरूप संसार में पापपुण्यरूप फलों को (स्वाद्वति) अच्छे प्रकार भोक्ता है और दूसरा

परमात्मा कर्मों के फलों को (अनश्नन्) न भोक्ता हुआ चारों ओर अर्थात् भीतर बाहर प्रकाशमान हो रहा है |जीव से ईश्वर, ईश्वर से जीव और दोनों से प्रकृति भन्न स्वरूप; तीनों अनादि हैं ।

अब क़ुरान से प्रमाण दिखाते हैं की ईश्वर (अल्लाह), जीव और प्रकृति तीन सत्ताएं अनादि हैं दे खये :

अल्लाह का ९९वे वा नाम "अल-बरी" है जिसके मायने हैं, " वकासक" अर्थात जो वकास करता है। अब क़ुरान से वो आयत दिखाते हैं जहाँ अल्लाह को वकासक बताया है :

"अल्लाह प्रत्येक वस्तु को उस की स्थति के अनुसार उसे आकृति एवं रूप प्रदान करने वाला है।"

(क़ुरान ५९:२५)

आइये अब दिखाते हैं क़ुरान की वो आयत जिसमे सृष्टि को अनादि बताया गया है :

फर उसने आकाश की और ध्यान दिया और (आकाश) केवल एक प्रकार के कुहरा सामान था। उस (अल्लाह) ने उस (आकाश) से तथा धरती से कहा की तुम दोनों स्वेच्छापूर्वक या अनिच्छापूर्वक मेरी आज्ञा का पालन करने के लए आ जाओ, तो वे दोनों बोले की हम आज्ञाकारी बन कर आ गए हैं।

(क़ुरान ४१:१२)

उपरोक्त आयत में आकाश और धरती पहले से वद्यमान है, जब अल्लाह ने बुलाया तो अत्यंत आज्ञाकारी बनकर आ गए। अतः इस आयत में अल्लाह के अतिरिक्त एक निर्जीव सत्ता वद्यमान तो है, पर वो निर्जीव सत्ता सुन सकती है, ऐसा अद्भुद वज्ञानं हमें क़ुरान पढ़ने पर ही ज्ञात हुआ।

क्या इंकार करने वालो ने यह नहीं देखा की आकाश तथा धरती दोनों बंद थे। अतः हमने उन्हें खोल दिया।

(क़ुरान २१:३१)

यहाँ भी आकाश और धरती पहले से ही वद्यमान हैं जो कारण रूप में हैं उन्हें अल्लाह मयां कार्य रूप में ले आये।

निस्संदेह तुम्हारा रब अल्लाह ही है जिसने आसमानो और जमीन को छह दिनों में पैदा कया है, फर वह राज संघासन पर दृढ़ता पूर्वक वराजमान हो गया।

(क़ुरान ७:५५)

यहाँ अल्लाह और अल्लाह का संघासन पहले से वद्यमान है, अतः सद्ध है की अल्लाह के साथ साथ एक निर्जीव सत्ता अनादि है। ले कन सोचने वाली बात यह यह की जो सर्वशक्तिमान सत्ता "अल्लाह" मात्र कहता है और हो जाता है, इसमें संदेह नहीं है मगर सृष्टि को बनाने में छह दिन लग गए ? ये हमें क़ुरान पढ़ने पर ही ज्ञात हुआ।

और वही है जिसने आसमानो और जमीन को छह दिनों में पैदा कया है ता क वह तुम्हारी परीक्षा ले की तुम में से कन कर्म अ धक अच्छे हैं और उसका अर्श पानी पर है।

(क़ुरान ११:८)

यहाँ अल्लाह के संघासन के साथ साथ पानी भी अनादि तत्व वद्यमान है।

और आसमान फट जाएगा तथा वह उस दिन बिलकुल कमजोर दिखाई देगा (१७)

और फ़रिश्ते उस के कनारो पर होंगे तथा उस दिन तेरे रब्ब के अर्श (संघासन) को आठ फ़रिश्ते उठा रहे होंगे। (१८)

क़ुरान (६९:१७-१८)

यहाँ जब प्रलय आ जाएगी उसके बाद की कहानी बताई जा रही है, अतः सद्ध है की अल्लाह का संघासन और उसको उठाने वाले फ़रिश्ते अनादि हैं। ले कन आकाश फाड़कर प्रलय आएगी ये क़ुरान का वज्ञानं सोचने वाला है।

वे नरक (की आग में पड़ने) वाले हैं और इसमें पड़े रहेंगे। (८२)

और जो लोग ईमान लाये हैं तथा शुभ कर्म कये हैं वे उसमे सदैव निवास करेंगे। (८३)

(क़ुरान २:८२-८३)

यहाँ जीवो की स्थति बताई है, जो अल्लाह और रसूल का इंकार करने वाले और अल्लाह की नजर में यही सबसे बुरा कर्म है, अतः जो ऐसे बुरे कर्म करने वाले हैं नरक में जायेंगे और जो ईमान लाये वो जन्नत जायेंगे तथा उसमे वे सदैव रहेंगे।

अर्थात क़ुरान के अनुसार भी ईश्वर, जीव और प्रकृति अनादि सद्ध होते हैं। क्यों क प्रलय (क़यामत) के बाद अल्लाह जीवो को इकठ्ठा करेगा और जन्नत जहन्नम को उनसे भरेगा। अब हमारा सवाल लेखक से है की जब क़यामत में यदि पूरी दुनिया और सब कुछ नष्ट हो जाएगा तो जन्नत में अंगूर, दूध की नहर, सोने के कड़े, सुन्दर बिछौने, और हूरे गलमा आदि जन्नती मनुष्यो के साथ सदैव रहेंगे और जहन्नम में आग, जक्कूम का वृक्ष और खोलता पानी वहां के जीवो के साथ सदैव रहेगा तो ऐसा कैसे संभव है की दुनिया भी नष्ट होगी और ये सब भी रहेगा ? क्या लेखक को अब भी संदेह है की सृष्टि अनादि नहीं ?

ये ही कुछ उपरोक्त आयतो और क़ुरान में मौजूद अनेको आयतो को पढ़ने के बाद ये सद्ध हो जाता है की लेखक ने केवल पूर्वाग्रह के आधार पर ही ऋ ष के सत्यार्थ प्रकाश पर अपनी अज्ञानता पूर्ण टिका टिप्पणी की हैं, यदि क़ुरान का अवलोकन ही कर लया होता तो ऐसी शंकाए उठाने की आवश्यकता महसूस नहीं होती।

2. सृष्टि का प्रारम्भ नहीं है, अर्थात सृष्टि का कोई आदि सरा नहीं है। (८:५३)

समीक्षा : शायद लेखक ने मह र्ष की बात को सही से समझने का प्रयास ही नहीं कया क्यों क लेखक के लेखन से महसूस होता है की लेखक केवल ऋ ष की बातो पर आक्षेप ही करना चाहता है, समझना कुछ भी नहीं, दे खये ऋ ष ने क्या कहा :

८-'सृष्टि' उस को कहते हैं जो पृथक् द्रव्यों का ज्ञान युक्तिपूर्वक मेल होकर नाना रूप बनना। (स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाशः)

यानि जब जब कारण रूप से कार्य रूप में सृष्टि आएगी यानि जब जब जगत लय (छुप, कारण) को प्राप्त होकर दृश्य (कार्य) रूप में आएगा आएगा ये सृष्टि है। ये कार्य निरंतर चलता है। यानी जब जब प्रलय आएगी तब रात्रि और जब जब सृष्टि पुनः अस्तित्व में आयगी तब दिन स्वरुप समझे। ये प्रत्येक कल्प (१४ मन्वन्तर) तक सृष्टि कार्य रूप रहती है, इसे सामान्य भाषा में ब्रह्म दिन के नाम से जानते हैं। और जब ये समय पूरा हो जाता है तब प्रलय होती है इसे इसे सामान्य भाषा में ब्रह्म रात्रि के नाम से जानते हैं। जितने समय यानी १४ मन्वन्तर का दिन होता है उतने ही समय की रात्रि होती है। यानी प्रलय के बाद ये सब जगत सूक्ष्म रूप (कारण अवस्था) में रहता है।

७-'प्रवाह से अनादि' जो संयोग से द्रव्य, गुण, कर्म उत्पन्न होते हैं वे वयोग के पश्चात् नहीं रहते परन्तु जिस से प्रथम संयोग होता है वह सामर्थ्य उन में अनादि है और उस से पुनर प संयोग होगा तथा वयोग भी, इन तीनों को प्रवाह से अनादि मानता हूँ। (स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाशः)

जैसे दिन के बाद रात और रात के बाद दिन, ऐसे ही रात से पूर्व दिन और दिन से पूर्व रात रहता है, इसी कारण से ऋ ष ने सृष्टि क्रम को अनादि कहा है। इसे प्रवाह रूप कहते हैं, अब इसमें दिन पहले आया या रात शायद लेखक बता सके ?

आइये अब लेखक को क़ुरान क्या कहती है वो दिखाते हैं :

और वह संसार की उत्प त्त को आरम्भ भी करता है और फर उसे बार बार दोहराता रहता है और यह बात उसके लए अति सुगम है।

(कुरान ३०:२८)

यहाँ संसार की उत्प त्त बताई है और आरम्भ साथ में ये प्रोसेस बार बार चलता रहता है ये भी स्पष्ट कर दिया है, क्या अब समीक्षा करने में निपुण लेखक क़ुरान की इस आयात की

समीक्षा करके बता पाएंगे की जब बार बार यानि प्रवाह से अनादि चक्र सृष्टि का चल रहा है तो इसका पहली बार सृजन कब हुआ ?

ऐसी ही क़ुरान में अनेको आयते हैं जिनमे सृष्टि को प्रवाह से अनादि बताया है, जब ऋ ष ने वेदादि आर्ष ग्रंथो को पढ़कर सत्यार्थ प्रकाश में भी यही बताया तो इससे लेखक की सत्याग्रही सोच प्रद र्शत नहीं होती जब क पूर्वाग्रह से ग्रस्त मान सकता का बोध अवश्य ही होता है।

3. सम्पूर्ण मानवता एक माँ बाप की संतान नहीं है (८:५१)

समीक्षा : समीक्षक महोदय अपने आक्षेपों की प्र क्रया में कुछ इस कदर फंसे की वज्ञानं और सामजिक ताने बाने को पूरी तरह ताक पर रख दिया, यहाँ तक की समीक्षक ने उस सद्धांत की धज्जिया उड़ा दी जिससे सामजिक परिवेश में नैतिक मूल्यों को बढ़ावा मलता है और सामाजिक संरचना और पारिवारिक मूल्यों में बढ़ती होती है, मगर समीक्षक को शायद सामाजिक परिवेश और नैतिक मूल्यों से कोई सरोकार नहीं मगर नियोग जैसी व्यवस्था पर बेवजह एक अध्याय लखने तक को तैयार हैं, मगर कुरान में प्रतिपादित अनेको कुरीतियों और व्यवस्थाओ पर समीक्षा को तैयार नहीं उसी का नतीजा है की पूरी तरह अप्राकृतिक और अवैज्ञानिक आधार पर भी सम्पूर्ण मानवता को एक माँ बाप की संतान सद्ध करने पर समीक्षक का पूरा जोर है, जब क ये सद्धांत न तो कुरान मानने को तैयार है और ना ही मह र्ष दयानंद को ही ये बात स्वीकार हुई मगर समीक्षक को आप त्त है, आइये पहले क़ुरान, बाइबिल और वेद के आलोक में देखे :

बाइबिल :

“Polls by Gallup and the Pew Research Center find that four out of 10 Americans believe humanity descend from Adam and Eve, but NPR reports that evangelical scientists are now saying publicly that they can no longer believe the Genesis account and that it is unlikely that we all descended from a single pair of humans.’That would be against all the genomic evidence that we’ve assembled over the last 20 years so not likely at all,’says biologist Dennis Venema, a senior fellow at BioLogos Foundation,

गैलप एंड द पउ रिसर्च सेंटर द्वारा कये गए पोल्स में प्रत्येक १० अमेरिकी नागरिको में से ४ ने स्वीकार कया की सम्पूर्ण मानवता आदम और हव्वा से निकली है, लेकन एनपीआर रिपोर्ट्स के मुताबिक इंजील के शोधकर्ताओं का अब ये मानना है और ये बात वो सार्वजानिक तौर से बता भी रहे हैं की उत्प त्त अध्याय के आधार पर सम्पूर्ण मानवता एक माता पता (आदम हव्वा) की संतान नहीं है। डेनिस वेनेमा बायोलोगोस फाउंडेशन की वरिष्ठ बाेलॉजिस्ट का कहना है की उनकी संस्था द्वारा पछले २० वर्षो में एकत्र कये गए जेने मक प्रमाणों से आदम हव्वा का सद्धांत एकदम उलट है, यानी सम्पूर्ण मानवता के जो जेने मक आंकड़े पाये गए वो एक माता पता के नहीं अनेको माता पता के हैं।

“दा इकोनॉ मस्ट” द्वारा नवंबर २०१३ में प्रायोजित चर्चा कार्यक्रम में इंजील के शोधकर्ताओं ने माना और वज्ञानिक आंकड़ों के आधार पर ये सद्ध करने का प्रयास कया गया की सम्पूर्ण मानवता कम से कम १०,००० (दस हजार) दम्प तयों (माता पता) की संतान है, एक आदम और हव्वा की नहीं।

अब थोड़ा क़ुरान का नजरिया :

हमने उन्हें कहा की "निकल जाओ। तुम में से कुछ व्यक्ति एक दूसरे के हैं।

(क़ुरान २:३७)

यहाँ ध्यान देने वाली बात है की अल्लाह मयां वर्तमान भाव में कह रहे हैं की तुम में कुछ व्यक्ति एक दूसरे के शत्रु हैं, यहाँ भ वष्यवत आधार पर नहीं कहा जा रहा की तुम में से कुछ एक दूसरे के शत्रु होंगे, क्यों क उस समय भी आदम हव्वा अकेले नहीं थे, अनेको स्त्री पुरुष थे।

तब हमने कहा की तुम सब के सब इस में से निकल जाओ।

(क़ुरान २:३९)

यहाँ भी अल्लाह मयां ने पहले वाली आयत के आधार पर ही सभी को निकलने का आदेश दिया है, क्यों क यदि अकेले आदम हव्वा होते तो "सब के सब" निकल जाओ ये न कहते, तुम दोनों निकल जाओ ऐसा कहते। अतः सद्ध है की अनेको आदि मनुष्यो द्वारा मनुष्य जाती उत्पन्न हुई।

अब थोड़ा वैज्ञानिक नजरिया :

आस्तिक वकासवाद की धारा से ओतप्रोत डॉ. फ्रां सस कॉ लन्स अपनी पुस्तक The Language of God: A Scientist Presents Evidence for Belief में लखते हैं की मनुष्य जाती की उत्प त्त कम से कम दस हजार दम्प तयों (माता पता युग्म) द्वारा संभव है जो आज से १ लाख से लेकर 1.5 लाख वर्षो पूर्व रहे होंगे।

यहाँ इस पुस्तक में डॉ फ्रां सस कॉ लन्स ने वैज्ञानिक (जेनेटिक) आधार पर इस बात का निष्कर्ष निकाला है। और इसी पुस्तक के आधार पर आदम हव्वा का महज ५००० वर्ष पुराना इतिहास होना खं डत हो जाता है। क्यों क वैज्ञानिको ने हाल में ही ४ लाख वर्ष पुराना ह्यूमन फॉ सल खोज निकाला है। अतः जैसे जैसे वैज्ञानिक नए शोध करते जाएंगे वैसे वैसे वेद और आर्य सद्धांत प्रबल होते जायेंगे। हम समीक्षक से आग्रह करते हैं वो वज्ञानं आधार पर आदम और हव्वा से मानव सृष्टि की उत्प त्त महज ५००० वर्ष पूर्व हुई ये साबित कर दिखाए अथवा इस वषय पर भी समीक्षा करे ता क सत्य का ज्ञान मनुष्यो के बीच प्रकट हो सके।

4. वेद आवागमनीय पुनर्जन्म की अवधारणा का प्रतिपादन करते हैं। (9-75)

समीक्षा : वैदिक सद्धांत सार्वभौ मक हैं, अटल हैं, शाश्वत सत्य हैं, कभी नहीं बदल सकते मगर लेखक शायद समीक्षाओं की समीक्षा में इतना व्यस्त हुए की सत्य को भी नजर अंदाज़ कर दिया। आइये पहले हम क़ुरान में देखते हैं की पुनर्जन्म वषय पर क़ुरान का क्या कहना है :

जिस प्रकार उसने तुम्हारा प्रारम्भ किया था। तुम फिर एक दिन उसी पहली हालत की ओर लौटोगे।

(क़ुरान ७:३०)

पहली बार कैसे पैदा किया था जरा उस पर ध्यान दीजिये :

हमने तुम्हे सर्वप्रथम मिटटी से पैदा किया था, फिर वीर्य से, फिर उन्नति दे कर एक ऐसी अवस्था से जो चिपट जाने का गुण रखती थी, फिर ऐसी अवस्था से की वह मांस की एक बोटी के सामान थी, ……… फिर हम तुम्हे एक बच्चे के रूप में निकलते हैं।

(क़ुरान २२:५)

यहाँ प्रथम बार कैसे उत्पत्ति की जाती है उसका विस्तार से उल्लेख है और ऊपर वाली आयत में बताया गया की जैसे पहली बार उत्पन्न किया वैसे ही पहले वाली हालत में पुनः लौटोगे। तो ये पुनर्जन्म क्यों नहीं ?

अन्य क़ुरानी आयत

फिर जब उन्होंने उन बातो से रुकने की अपेक्षा जिन से उन्हें रोका गया था और भी आगे बढ़ना शुरू किया तो हमने उन्हें कहा की तुच्छ (जलील) बंदर बन जाओ।

(क़ुरान ७:१६७)

यहाँ आयत में पुनर्जन्म सिद्ध होता है क्योंकि अल्लाह ने पूरी बस्ती के लोगो यानी मनुष्यो को बन्दर बना दिया क्योंकि उन्होंने अल्लाह की केवल नसीहत मानने से मना कर दिया। क्या ये अल्लाह की दया और कृपा है ? लेखक इस पर अपने विचार कब प्रकट करेंगे ?

यहाँ ये बात स्पष्ट है की जीव जो है वो पशु में भी है और मनुष्य में भी, और ये भी सिद्ध हुआ की मनुष्य में जो जीव है वो ही पशु आदि में पुनर्जन्म धारणा से शरीर धारण कर सकता है और जो पशु आदि का जीव है वो मनुष्य का लेकिन इसके पीछे कर्मो के फल की धारणा अवश्य होनी चाहिए अन्यथा यदि केवल अल्लाह की नसीहत नहीं मानने के कारण ही ऐसा हो तो ऐसे में अल्लाह अन्यायकारी ही ठहरेगा।

4. वे कहेंगे की हे हमारे रब ! तूने हमें दो बार मौत दी और दो बार जीवित किया।
(क़ुरान ४०:१२)

यहाँ भी इस आयत में पुनर्जन्म सिद्ध होता है, क्योंकि यदि एक बार ही मौत और एक बार ही जन्म होता तो यहाँ ऐसे नहीं लिखा जा सकता था, इसके अतिरिक्त भी पूरी क़ुरान में अल्लाह ने पुनर्जन्म विषय में अनेक बार मृत जमीन और वर्षा का दृष्टांत किया जिसमे अल्लाह ने बार बार जोर देकर समझाया है की ईमान वालो को और धरती में मौजूद सभी लोगो के लिए बड़ी निशानी है की वो मृत जमीन पर आकाश से पानी बरसता है तो वो

जीवत हो उठती है क्या वो तुम्हे इसी प्रकार जीवत नहीं करेगा। (क़ुरान ४५:६, २:१६५) आदि अनेको प्रमाण क़ुरान में ही मौजूद हैं जो अल्लाह द्वारा बुद्धमान जाती के लए बड़ी निशानियों में शुमार है की वर्षा केवल एक बार ही नहीं होती जो मृत धरती को जिन्दा करे बल्कि बारम्बार होती है, ये निरंतर प्रक्रया है, शाश्वत सत्य है, अब देखना ये है की समीक्षक इस वषय पर अपनी समीक्षा कब करते हैं।

अब इस वषय पर वज्ञानं से रौशनी डालते हैं, जो भी पदार्थ है वो कभी नष्ट नहीं होता जैसे पानी भाप बनकर उड़ जाता है पुनः बादलो के रूप में एकत्रित होकर बरसता है फर भाप बनकर उड़ जाता है, ठीक ऐसे ही लकड़ी से सामान बना, उसके बाद अन्य कार्य में लया गया अलमारी आदि बनाने में, पश्चात ख़राब होने पर जलाया तो कोयला बना, कोयले से राख, राख से मटटी और फर उसी मटटी से पुनः पेड़ पौधों के रूप में उग आता है। यह सार्वभौमक सत्य है, आपने न्यूज चॅनेल और अनेको अखबारों में खबर भी पढ़ी होंगी की अमुक व्यक्ति को अपना पछला जन्म याद आ गया, अमुक ने अपने पूर्व जन्म की माता पता आदि कुटुम्बियों से मेल कया आदि अनेको खबरे प्राप्त होती हैं, इस वषय पर अनेको वज्ञानिको ने रिसर्च भी की है और प्रमाणत भी कया है उनमे से एक प्रसद्ध मनोवैज्ञानिक डॉ इयान स्टेवेंसन्स हैं, उन्होंने अपनी अनेको कताबो "Twenty Cases Suggestive of Reincarnation (1966), "European Cases of the Reincarnation Type" (1972), आदि अनेको पुस्तको के माध्यम से पुनर्जन्म अवधारणा को प्रमाणत कया जिनको आज तक मनोवैज्ञानिक अपने वैज्ञानिक आधार पर प्रमाणत करने की कोशश कर रहे हैं। वैसे तो यहाँ ही वस्तार से बता दिया फर भी वषय से सम्बंधत अन्य अध्याय में वस्तार से बताया जा सकता है, क्योंक समीक्षक की पुस्तक में पुनरुक्ति दोष का बारम्बार प्रकट होना समीक्षक की पुस्तक और लेखन तथा ज्ञान पर दोष प्रकट करता है, अब चाहे तो समीक्षक अपनी अगली पुस्तक में ऐसी गलती न दोहराये ये उनकी इच्छा पर निर्भर है।

5. मनुष्य और पशु आदि में जीव एक सा है। (९:७४)

समीक्षा : वैसे तो समीक्षक की हास्यास्पद बात पर अनेको तथ्य इसी पॉइंट में लखे जा सकते हैं, मगर इसी वषय से सम्बंधत एक अध्याय भी है "मरणोत्तर जीवन – तथ्य और सत्य" समुचत व्याख्या उस अध्याय में की जाएगी, यहाँ केवल संक्षेप में समझाने की कोशश करते हैं, जो भी चेतन शक्ति हैं उनमे वज्ञानिक दृष्टिकोण से इन्द्रियों का समावेश होता है, जिन चेतन सत्ताओ में इन्द्रियां पायी जाती हैं उनमे जीव होता है, इसलए उन्हें सजीव कहा जाता है, क्योंक इन्द्रिया जीव के सूक्ष्म शरीर का हिस्सा है ये आध्यात्मिक दृष्टिकोण है अतः इस पर समुचत व्याख्या सम्बंधत वषय में करेंगे यहाँ केवल इतना समझते हैं की चाहे मनुष्य हो या पशु इनके शरीर में जीव रहता है तब तक शरीर कार्य करता है। इन्दिर्यो का सुचारू रूप से कार्य करना स्वस्थ शरीर की निशानी है। जैसे जैसे शरीर कमजोर होता जाता है उसमे इन्द्रियों को धारण करने की शक्ति क्षीण होती जाती है और जब शरीर इन्द्रियों को धारण करने की अवस्था में बिलकुल भी नहीं रहता तब जीव (आत्मा और सूक्ष्म शरीर) इस भौतिक शरीर का त्याग कर एक नए शरीर अर्थात पुनर्जन्म धारण करती है। इसे ही मृत्यु और जीवन का निरंतर चक्र अथवा प्रक्रया कहा जाता है। अब यदि समीक्षक अति वद्वान और वैज्ञानिक है तो जैसा क़ुरान बताती है उसके आधार पर तो पशु में जीव (आत्मा) नहीं की थ्योरी मानने वाले कृपया बताये की पशु मर क्यों जाता है ? जिस शरीर में जीव होगा वह

शरीर संयोग और वयोग करेगा पशु और मनुष्य में केवल यही समानता ही नहीं और भी अनेको समानताये पायी जाती हैं, पशु में भी वही इन्द्रियाँ हैं जो मनुष्य में हैं, आँख (देखना) कान (सुनना) नाक (सूंघना) त्वचा (स्पर्श) जीभ (स्वाद ग्रहण करना), रक्त, हड्डी, नस, नाड़ी इत्यादि अनेको शरीर में वद्यमान प्र क्रया जो मनुष्यो में भी होती हैं, इनके अतिरिक्त आहार लेना, निद्रा, मैथुन आदि द्वारा संतानोत्प त्त करना, संतान का रक्षण और उसे शकार आदि करने की शक्षा देना जैसे मानो मनुष्य अपने संतान को शक्षा आदि ग्रहण करवाने को गुरु, वद्यालय आदि भेजते हैं सब कुछ वही प्र क्रया जो मनुष्य में पायी जाती है वही पशुओ में भी यहाँ तक की दोनों ही शरीरो का जीवन और मृत्यु से भी संबंध है क्यों क दोनों ही मनुष्य और पशु मृत्यु के गाल में समाते ही हैं।

हाँ ये सत्य है की मनुष्यो में बुद् ध का जो गुण परम पता परमात्मा ने दिया है वो पशुओ के पास वैसी बुद् ध नहीं दी क्यों क ईश्वर ने पशु प क्षयों को स्वाभा वक ही वो ज्ञान दिया है जो उनके लए जरुरी है जैसे मगरमच्छ का बच्चा अंडे से निकलते ही तैराकी के गुण जानता है, प क्षयों के बच्चे उड़ने का गुण लए पैदा होते हैं, ठीक वैसे ही मनुष्य की संतान उत्पन्न होते ही दूध पीने आदि गुणों से संयुक्त उत्पन्न होती है क्यों क ये व्यवस्था ईश्वर की है, मगर मनुष्य में सोचने और समझने की बुद् ध ईश्वर ने इसी लए दी ता क मनुष्य परमात्मा का ज्ञान प्राप्त कर मोक्ष ग्रहण कर सके। ईश्वर ने बुद् ध केवल इस लए नहीं दी की नाहक ही पशुओ को मारकर उनका खून बहकर अपनी क्षुधा शांत करे, इस वषय पर सम्बं धत वषय में लखेंगे।

कुरान में अल्लाह मयां ने स्पष्ट कर दिया है की मनुष्यो को अन्य जी वत प्रा णयों का खलीफा बनाकर पृथ्वी पर भेजा जा रहा है यानी कुरान इस बात का पूर्णतया समर्थन करता है की मनुष्य को अन्य पशु प क्षयों की सत्ता पर अ धकार देकर खलीफा बना कर भेजा गया (कुरान 2:31) अब सोचने की बात है, क्या खलीफा (अ धनायक) सत्ताधारी पक्ष, केवल बेजुबान पशु प क्षयों पर अत्याचार करके, उन्हें मारकर उनका मांस खाने वाला बन कर अपनी सत्ता का गलत और नाजायज़ फायदा नहीं उठा रहा ? क्या ऐसे अत्याचारी और हत्यारे को खलीफा (अ धनायक) घो षत कया जा सकता है ? शायद यही वजह थी की अल्लाह के पास मौजूद अनेको फरिश्तो ने भी इस कार्य के लए अल्लाह को चेताया था (क़ुरान 2:31) क्या अब भी ये बताने की जरुरत है की खलीफा (अ धनायक) का दायित्व है बेजुबान पशु प क्षयों की रक्षा करना ना की उन्हें अपनी जीभ के स्वाद लेने हेतु हत्या कर खा जाना। आइये क़ुरान से ही स्पष्ट करते हैं की मनुष्य और पशु पक्षी आदि में एक ही जीव है वैसे तो इस वषय को पहले भी बताया जा चूका है मगर एक बार पुनः दे खये :

फर जब उन्होंने उन बातो से रुकने की अपेक्षा जिन से उन्हें रोका गया था और भी आगे बढ़ना शुरू कया तो हमने उन्हें कहा की तुच्छ (जलील) बंदर बन जाओ।

(क़ुरान ७:१६७)

समीक्षक के अनुसार यदि कुरान में पशु पक्षी में आत्मा (जीव) का होना नहीं पाया जाता तो जो ये समंदर के पास रहने वाली बस्ती के मनुष्यो को बन्दर बनाने की बात क़ुरान में अल्लाह ने बताई ये मथ्या है ? क्या ये कोई व शष्ट प्रकार के बन्दर थे जिनमे मनुष्य जैसा

ही जीव था अथवा कोई सामान्य बन्दर थे ? समीक्षक को कुरान पढ़ने पर ये भी ज्ञात होगा की कुरान में ही अनेको जगह मनुष्य और पशु प क्षयों यहाँ तक की जितनी भी जी वत सत्ताएं पृथ्वी पर पायी जाती हैं सब की सब पानी से ही बनी है दे खये :

हमने पानी के द्वारा प्रत्येक सजीव को जीवन प्रदान कया है।

(क़ुरान २१:३१)

मैं तुम्हारे भले के लए गीली मटटी का स्वाभाव रखने वालो (अर्थात वनम्र स्वाभाव वालो) से पक्षी (के पैदा करने) की तरह (प्राणी) पैदा करूँगा, फर मैं उनमे एक नयी रूह फूकूंगा जिस से वे अल्लाह के आदेश के साथ उड़ने वाले हो जायेंगे।

(क़ुरान ३:४९)

यहाँ भी पशु प क्षयों में मनुष्य के जैसे ही अल्लाह के आदेश से रूह फूकने की बात एक पैगम्बर ने बताई जो अल्लाह की तरफ से चमत्कार रूप में प्रकट कया। क्या इससे स्पष्ट नहीं की समीक्षक को क़ुरान का जरा भी ज्ञान नहीं जो वज्ञानं वरुद्ध लखकर कहा की पशु प क्षयों में आत्मा नहीं होती ? आइये एक और आयत जिससे पूर्णतया स्पष्ट हो जायेगा की पशु प क्षयों की आत्माओ के साथ भी अंतिम दिन इन्साफ होगा अर्थात मनुष्यो की तरह ही पशु प क्षयों की आत्माओ को भी इकठ्ठा कया जाएगा और अल्लाह इंसाफ करेगा दे खये :

धरती में चलने फरनेवाला कोई भी प्राणी हो या अपने दो परो से उड़नेवाला कोई पक्षी, ये सब तुम्हारी ही तरह के गरोह हैं। हमने कताब में कोई भी चीज़ नहीं छोड़ी है। फर वे अपने रब की और इकट्ठे कये जायेंगे।

(क़ुरान ६:३८)

उपरोक्त आयत स्पष्ट वर्णन करती है की पशु हो या पक्षी सब मनुष्यो के जैसे ही गरोह हैं यानी मनुष्य के जैसे जमात है, और अंतिम दिन पशु पक्षी भी रब की और इकट्ठे कये जाएंगे, अब इससे भी बड़ा सबूत समीक्षक को और क्या चाहिए ? क्या समीक्षक की इस वषय पर की गयी बेतुकी समीक्षा को दिमागी बुखार या पूर्वाग्रही मान सकता न कहा जाए ?

6. स्वर्ग नरक का कोई अलग लोक नहीं है। (९-७९)

समीक्षा : पुस्तक के लेखक ने या तो वेदादि सत्य शास्त्रो को ध्यानपूर्वक नहीं पढ़ा अथवा ऐसी समीक्षाओं का कारण केवल मह र्ष दयानंद की कुरान पर की गयी ज्ञानवर्धक समीक्षाओं पर व्यर्थ का प्रलाप भंजन है। दे खये इस वषय में भी पुनरक्ति दोष है अतः सम्बं धत वषय के अध्याय में वस्तार से वैदिक स्वर्ग और इस्लामी बहिश्त तथा मरणोत्तर जीवन वषय पर तर्क और प्रमाण के साथ लखा जायेगा, यहाँ केवल संक्षेप में बताया जाता है :

स्वर्ग शब्द स्वः (सुख) से बना है। 'सुखम गच्छति यस्मिन् स स्वर्गः' अर्थात जिसमे सुख की प्राप्ति हो वह स्वर्ग है। अतः प्रत्येक अवस्था तथा प्रत्येक वह स्थान जिसमे मनुष्य सुखी

रहता है और दुःख से बचता है स्वर्ग है। आत्मिक स्वर्ग के लए मुक्ति शब्द है। इसका अर्थ भी दुखो से छूटना है। सांसारिक जीवन में भी मनुष्य कसी वशेष बंधन से छूटता है तो कहता है "मैं इससे मुक्त हो गया" और सुख मलता है तो कहता है मैं स्वर्ग में हु"

आत्मा के लए सर्वोत्कृष्ट सुख का आदर्श यह है की वह शरीर अर्थात जन्म मृत्यु के बंधन से छूटकर सर्वसुख तथा आनंद स्वरुप प्रभु (ईश्वर, अल्लाह) की संगती से आनंद प्राप्त करे। कुरआन में जन्नत शब्द शारीरिक और आत्मिक दोनों प्रकार की सफलता के लए प्रयुक्त कया गया है। बहिश्त में सारे सांसारिक सुख, उत्तम पदार्थ तथा मान सक शांति आदि फल मलते हैं वहीँ दूसरी और मुक्ति में ज्ञान, आत्मिक आनन्दादि का प्रवाह चलता है, क्या लेखक इस वषय पर समीक्षा करेंगे की जो सांसारिक सुख इस लोक में हैं जिसमे मनुष्य फंसकर दुःख उठता है, वही सांसारिक सुख, हूरे, गलमा, सोने के कड़े, चांदी के आभूषण, त कये गलाफ, मोती ज ड़त बर्तन आदि में फंसकर कौन सा सुख मलेगा ?

हाँ सर सैयद अहमद खान इसी वषय पर अपनी पुस्तक में क्या लखते हैं, शायद लेखक ने कभी उसपर वचार प्रकट करते हुए इस्लामी बहिश्त की समीक्षा करने का ख्याल तक न रखा ?

वैदिक स्वर्ग और इस्लामी बहिश्त के वषय में ज्यादा जानकारी वषय से सम्बं धत अध्याय में प्रकट की जायेगी फलहाल कुछ प्रमाण यहाँ दिए जाते है जिससे पाठकगण स्वर्ग का वशुद्ध स्वरुप ज्ञात कर सके :

ज्योतिष्टोमयाजी स्वर्गं समश्नुते।।
या एवं वहानस्माच्छरीरभेद।
दूर्ध्व उत्क्रामयामुष्मिन स्वर्गे लोके सर्वान् कामानापत्वामृताः समभवत् समभवत्।।
(ऐ० उ० खं० ४ मं ६)
ज्योतिष्टोम यज्ञ करने वाला स्वर्ग को पाता
है।

जो वद्वान इस शरीर के भेद को जानकर पार हो जाता है वह इसी लोक में सब मनोरथो को पूरा करके स्वर्ग को पाटा और अमर हो जाता है और हो भी गए हैं।

अनस्थाः पूताः पबनेन शुद्धाः शुचयः शु चम प यन्ति लोकम।
नैषां शश्नम प्रदहति जात वेदः स्वर्गे लोके बहुस्त्रैणमेषाम्।।

अस्थियां जिनकी नज़र न आती हो अर्थात हृष्ट, पुष्ट और ब लष्ठ ब्रह्मचारी, प वत्र आचरण युक्त, प्राणायामादि से शुद्ध और निरोग तथा प वत्र मनवाले पुरुष इस प वत्र लोक (गृहस्थ) में प्र वष्ट होते हैं। उनका प्राप्त कया हुआ ज्ञान उनकी काम शक्ति को नष्ट नहीं होने देता। चाहे इस स्वर्ग लोक (गृहस्थ) में उनके आस पास बहुत स्त्रियां रहती हो।

इस मन्त्र में जो बहुस्त्रेण शब्द आया है, उसने उन लोगो को बड़े चक्कर में डाला है जो ब्रह्मचर्यादि के महत्व को अनुभव नहीं कर सकते। उन्होंने समझ लया की स्वर्ग में बहुत सी स्त्रियां मलेंगी यहाँ तक ७२ हूरो का ख्याल प्र सद्द हो चूका है। यह स्वर्ग सच्चे अर्थो में

इसी गृहस्थ का नाम है। पर अज्ञानवश लोगो ने इसे कसी ऊपर के गुप्त स्थान में मान रखा है। इस मन्त्र में जो बहुत स्त्रियों का वर्णन आया है वो भी समझ लेना चाहिए, क्यों क जो गृहस्थ में प्रवेश करता है, तब उसके अनेको नए रिश्ते बनते हैं, और मनुष्य सामाजिक प्राणी है अतः जिस नगर में मनुष्य रहता है उसमे अन्य अनेको पुरुषो की अनेको रिश्तो वाली स्त्रीया रहती हैं, अतः स्वर्गलोक (गृहस्थ) में बहुत स्त्रियों का शब्द आना साधारण बात है और जो सदाचारी, संयमी, प वत्र आत्मा, ब्रह्मचारी गृहस्थ में प्रवेश करे उसको यह शक्षा देना भी परमावशयक है की गृहस्थ आश्रम में भी वह ब्रह्मचर्य का पूरा ख्याल रखे। स्त्रियों की आसपास वद्यमानता होने से जो ब्रह्मचर्य के वरुद्ध भाव उत्पन्न हो सकता है उसमे सावधान करने के लए वेद का ऐसी नैतिक और उत्तम चारित्रिक शक्षा देना ही गृहस्थ को स्वर्गधाम बनाने में सहायक हो सकता है। अतः सद्ध है की स्वर्ग और नरक सुख और दुःख का बोध और बोध करवाने वाले साधनो को ही कहते हैं अन्य लोकादि को नहीं, क़ुरान भी यही आदेश करती है, इस वषय पर वस्तृत व्याख्या वषय से सम्बं धत अध्याय में की जायेगी।

पहले अध्याय में और भी थोड़े आक्षेप समीक्षक ने कये हैं जो अगले अध्यायों में एकसमान ही हैं अतः आगे अध्यायों में उन आक्षेपों का भी निराकरण करने का प्रयास कया जाएगा। यहाँ पहले अध्याय के आक्षेप का वस्तार और संक्षेप दोनों ही प्रकार से उत्तर देने का प्रयास कया गया है। कुछ वषयो पर संक्षेप में लखा गया है क्यों क अन्य अध्यायों में भी वही आक्षेप का उत्तर वस्तार से बताया जायेगा।

आप सभी बंधुओ से निवेदन है कृपया अपने महत्वपूर्ण वचार पोस्ट पर अवश्य प्रकट करे।

धन्यवाद

"सत्यार्थ प्रकाश : समीक्षा की समीक्षा का जवाब PART 6″

OCTOBER 24, 2015 LEAVE A COMMENT

"तीसरे अध्याय का जवाब"

नियोग को अरबी में निकाह अल इस्तिब्दाद कहते हैं।

प्री इस्ला मक एरा (इस्लाम से पूर्व अरबी रीति रिवाज) में मुख्य रूप से ४ प्रकार के निकाह ज्यादातर अम्ल में लाये जाते थे,

1. पति, अपनी पत्नी को कसी अन्य पुरुष के साथ संसर्ग करने हेतु भेज देता था, ता क उत्तम गुणों से युक्त संतान पैदा हो, (यानी अपने से उच्च वर्ण में) फर जब महिला को ज्ञात हो जाता था की गर्भ ठहर गया है तब वो अपने पति के पास आ जाती थी।

पति अपनी पत्नी के साथ सम्बन्ध नहीं बना सकता था जब तक वह पत्नी संतान उत्पन्न न कर दे।

यहाँ ध्यान देने वाली बात है की महिला जो संतान उत्पन्न कर रही है वो उसके पति की ही संतान मानी जाती थी।

2. एक तरीका निकाह का वही है जो आज अपनाया जाता है, जिसमे एक कॉन्ट्रैक्ट होता है, महिला से उसका मेहर लखवाया जाता है, जिसके द्वारा पुरुष कभी भी अपनी पत्नी को ३ तलाक़ कहकर, मेहर देकर अपने घर से वदा कर सकता है।

3. एक बड़ा अजीब निकाह का कांसेप्ट उस काल में अरब में व्याप्त था, एक महिला के साथ दस पुरुष सम्भोग करते थे, जब महिला को गर्भ ठहर जाता और वो संतान पैदा हो जाती तब उन दसो मनुष्यो को बुलावा भेजा जाता, कोई भी पुरुष आने से इंकार नहीं कर सकता था, तो जब दस के दस आ जाते तब वो महिला कसी भी एक को उस बच्चे का पता बताती और ये उस मनुष्य को मान्य होता था, वो इंकार नहीं कर सकता था, तब वो उस बच्चे को अपने साथ ले जाता।

4. अनेको मनुष्य, एक तरह का वैश्यालय जहाँ पहचान के लए झण्डिया लगाईं जाती थी, वहां जाते, जिस महिला से चाहते सम्भोग करते, चाहे एक महिला से अनेको करते हो, यदि उक्त महिला को गर्भ ठहर जाता और वो संतान उत्पन्न कर देती थी, तब सभी मनुष्यो को बुलावा भेजा जाता, यहाँ भी कोई आने से इंकार नहीं कर सकता था, सब आते, और बच्चे की शक्लो सूरत, हाव भाव, जिस पुरुष से मेल खाते, उसे उस बच्चे का पता घो षत कर दिया जाता, वो मनुष्य इंकार नहीं कर सकता था, तब वो उस बच्चे को अपने साथ ले जाता।

उक्त चारो प्रकार के निकाह इस्लाम के आने से पूर्व अरब में अपनाये जाते थे वहां की संस्कृति के हिस्सा था, इन चारो प्रकार के निकाह में जो सबसे इंट्रेस्टिंग पॉइंट है वो है की अरब में नियोग प्रथा का महत्त्व था, अरबी लोग नियोग को जानते थे, यानी वहां वैदिक सभ्यता के प्रमाण मलते हैं, हालां क अन्य ३ प्रकार के निकाह का होना दर्शाते हैं की अरबी लोग जाहिल और व्य भचारी भी हो चुके थे, ले कन वो नियोग को मान्यता देते थे ये बात अरब में नियोग प्रथा का वर्णन खुद मुहम्मद साहब की प्यारी बेगम आईशा ने सहीह बुखारी में व र्णत कया है।

Reference : Sahih al-Bukhari 5127
In-book reference : Book 67, Hadith 63
USC-MSA web (English) reference : Vol. 1, Book 62, Hadith 58
(deprecated numbering scheme)

हालां क ये बात भी इस हदीस में मौजूद है की मुहम्मद साहब ने उक्त ४ निकाह में से ३ प्रकार के निकाह अमान्य, निरस्त और जाहि लयत करार दिए, ले कन एक प्रकार का निकाह जो आज भी मुस्लिम अपनाते हैं, उसे सही बताया, ये प्रथा भी अरबी समाज में व्याप्त थी, जिसमे अनेको खा मया हैं, फर इसे अपना कर अन्य तीन को निरस्त करना समझ नहीं आया, ले कन यदि आप मुहम्मद साहब की जीवनी पढ़े तो पाएंगे की उनकी अनेको बि वया थी और लौं डया भी इस लए शायद यही वजह थी यदि ये निकाह का कॉन्सेप्ट नहीं होता तो

शायद वो इतनी बि वया नहीं रख पाते, या हो सकता है अल्लाह ने उनके लए ये तरीका जायज़ बनाया हो, जब जाहि लयत काल के ये ३ निकाह गलत थे तो चौथा सही कैसे ? क्या जाहि लयत काल की भी कोई प्रथा सत्य हो सकती है ? यदि हाँ तो फर मुहम्मद साहब ने नयी प्रथा क्या दी ? ये तो पहले से मौजूद थी। बस इतना ही की कुछ प्रथाओ को बंद करवा दिया, सर्फ जाहि लयत के नाम पर, मगर जिस प्रथा से फायदा था उसे अपनाये रखा भले ही वो भी जाहि लयत का ही हिस्सा थी, क्या ये न्यायकारी प्र क्रया थी ?

खैर जो भी हो इस पर मेरे कुछ सवाल खड़े होते हैं :

1. महिला को मैहर देना, यानी उसकी शारीरिक सेवा का मूल्य पहले ही निर्णीत कर लेना और जब चाहे तब ३ तलाक़ बोलकर रिश्ते को खत्म कर लेना, क्या ये ऐसा नहीं लगता जैसे महिला को सेक्स (सम्भोग) के लए ख़रीदा गया और इस्तेमाल के बाद "यूज़ एंड थ्रो" बना दिया ? क्या ये प्र क्रया आधुनिकता का प्रतीक है ?

2. महिला को यदि पुरुष से सम्बन्ध वच्छेद करना हो यानी तलाक़ लेना हो तो मेहर की रकम छोड़नी होगी साथ ही अन्य भी शर्ते माननी होंगी ता क पुरुष तलाक दे, तब कहीं महिला इस सम्बन्ध से मुक्ति पाएगी, क्या ये महिला का शोषण नहीं ?

3. यदि कसी कारण तलाक़शुदा महिला और पुरुष जो पहले रिश्ते में थे, पुनः निकाह करना चाहे तो महिला को पहले कसी अन्य पुरुष से निकाह करके एक रात बिताकर (सम्भोग करवाकर) उसके बाद नए पति से तलाक़ पाकर तब जाकर अपने पूर्व पति के साथ पुनः सम्बन्ध बना सकती है। क्या ये वैश्यावृति नहीं, क्या यहाँ नैतिकता और चरित्रता दोनों को तिलांज ल नहीं दी गयी ?

4. पुरुष जब चाहे महिला को तलाक़ दे सकता है, मौ खक, ल खत, टेलीफोन पर, यानी कैसे भी, और वो महिला को मान्य करना ही होगा, क्यों क ३ तलाक़ के पश्चात वो महिला, तलाक़ देने वाले पुरुष के लए हलाल (वैध) नहीं है। क्या यहाँ महिला को केवल मेहर देकर, वदा करने की परंपरा शर्मसार नहीं है ? क्या ये निकाह प्री-प्लान तरीके से कसी महिला की इज्जत ख़राब करने के मनसूबे से काम में नहीं लाये जाते ?

5. यदि तलाक़ शुदा महिला, एक नया खा वंद (पति) बना ले, मगर वो नपुंसक (वीरहीन, निस्तेज) निकले और महिला को शारीरिक सुख प्रदान न हो सके, तब इस स्थति में महिला क्या करेगी ? क्या वो शारीरिक सुख (सम्भोग) के लए अन्य पुरुषो से व्य भचार नहीं करेगी ? इससे तो व्य भचार बढ़ेगा। घटने का तो सवाल ही नहीं क्यों क जब तक वो नपुंसक खा वंद उक्त महिला के साथ सम्भोग नहीं करता, उसका तलाक़ देना मंजूर नहीं, न ही वो महिला तीसरा निकाह कर सकती है, इस लए उसे मजबूरन अपना शारीरिक शोषण और दोहन करवाना ही होगा।

कतनी ही कुरीतिया जो इस्लाम में व्याप्त हैं, खुला, हलाला, मुताह, निकाह मस्यार (कॉन्ट्रैक्ट मैरिज), जिहाद अल निकाह आदि अनेको कुरीतिया जो केवल और केवल, महिलाओ का शोषण करती हैं, उन्हें भोग की वस्तु मानकर महिला की अस्मत आबरू बर्बाद करती हैं, महिला को

खेलने वाला खलौना बना डालती हैं, ले कन इन वषयो पर कभी बुद् धजी वयों का ध्यान नहीं जाता, ये वषय कभी भी सामाजिक पटल पर नहीं उठाये जाते, हाँ मह र्ष दयानंद द्वारा जो नियोग वषय है, उसपर सभी बुद् धजी वयों के कान खड़े हो जाते हैं, जब क आज उसी आधुनिक रीति वाले नियोग को वैज्ञानिक IVR कहते हैं, जिससे निसंतान दंप त्त को संतान सुख प्राप्त होता है, इस व्यवस्था को वज्ञानं ने नया आयाम दिया, उसको दिन रात कोसना, मगर जो कुरीतिया समाज को बर्बाद कर रही, महिला की अस्मत को नेस्तनाबूत कर रही उन पर कोई वचारक, बुद् धजीवी अपना मत प्रकट नहीं करता।

खेद है की अपने को आधुनिक, चंतक और बुद् धजीवी कहलाने वाले, नियोग (IVR) को तो कोसते हैं, मगर जो खुला, मुताह और हलाला जैसे घिनौने और दुष्कृत्य समाज में व्याप्त हैं उनपर चुप्पी साध लेते हैं। नियोग का वैज्ञानिक नजरिया कोसना, और महिलाओ पर अत्याचार करने वाली कुरीतिया पर मूक हो जाना निसंदेह कसी भी राष्ट्र के लोगो के लए ठीक बात नहीं।

पोस्ट को पढ़ने हेतु धन्यवाद, ये पोस्ट सतीशचंद गुप्ता ल खत "सत्यार्थ प्रकाश समीक्षा की समीक्षा" के नियोग वषय से सम्बं धत अध्याय का जवाब है, इसके अभी और भी पार्ट आएंगे जिसमे वस्तार से समझाने का प्रयास कया जाएगा।

अगली पोस्ट में जो वचार हम करेंगे वो है :

1. नियोग और नारी का सम्मान

2. नियोग का आज के समाज में महत्त्व

3. इस्लाम में नियोग का महत्त्व

4. नियोग और वज्ञानं

5. संतान और नियोग व्यवस्था

धन्यवाद।

आइये लौटिए वेदो की और।

"सत्यार्थ प्रकाश : समीक्षा की समीक्षा का जवाब PART 7"

OCTOBER 24, 2015 LEAVE A COMMENT

चौथे, पांचवे, छठे व सोलहवे अध्याय का एकमुश्त जवाब

कोई क्या खाए, क्या ना खाए ये व्यक्ति की अपनी स्वतंत्रता है, मगर यहाँ ध्यान देने वाली बात है की मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वो जो खाए उससे समाज पर गहरा प्रभाव पड़ता है। क्यों क एक कहावत है "जैसा खाए अन्न वैसा होए मन" और ये कोई लोकोक्ति नहीं एक यथार्थ सत्य है। यदि मांसाहार बहुत उत्तम वस्तु होती, जो समाज में सदैव ही प्रच लत रही होती, खासकर भारतीय परिवेश में तो इस पर कभी भी शंका और सवाल नहीं उठ सकते थे, मान लीजिये आप यज्ञ और हवन करते हैं, तो ये भारतीय संस्कृति का हिस्सा रहा है अतः इस वषय पर कभी कोई आक्षेप नहीं उठा, महिलाओ को आदर देना भारतीय संस्कृति का हिस्सा रहा है, इसपर कभी कसी ने आक्षेप नहीं कया, ऐसे अनेको क्रयाकलाप हैं, ऐसी अनेको सामाजिक गति व धया हैं जिनपर कभी कसी ने आक्षेप नहीं कया क्यों क ये सनातन संस्कृति का अहम हिस्सा रही हैं। अब बात आती है मांसाहार की, यदि मांसाहार सनातन संस्कृति का हिस्सा रहा है तो इसपर आक्षेप क्यों लगाये जाते हैं ?

आक्षेप उन्ही संदिग्ध और ववादस्पद वषयो पर लगते हैं जो गलत, भ्रामक और निंदनीय होती हैं, जैसे सती प्रथा, भ्रूण हत्या, चाइल्ड मैरिज, गे रिलेशन, होमोसेक्सुअल्टी आदि। अब वो लोग जो सती प्रथा, भ्रूण हत्या, चाइल्ड मैरिज, गे रिलेशन, होमोसेक्सुँ लटी को प्रामा णक और ता र्कक मानते हैं, इनके लए वो प्रमाण भी पेश करते हैं तो क्या इन्हे भी समाज में मान्यता दे दी जाए ? यदि कसी देश वशेष ने इन कुरीतियों को अपना रखा हो, मान्यता दे दी हो, तो क्या इस आधार पर ऐसी बुराइयो को समाज में अपना लया जाए ? क्या ऐसी कुरीतियों पर तर्क, और प्रमाण देने पर भरोसा करा जा सकता है ?

नहीं, कदा प नहीं, क्यों क जो लोग ऐसी कुरीतियों को मान्यता दे अथवा तर्क से सद्ध करने की को शश करे उनको सभ्य समाज में कुतर्की और असभ्य ही कहा जाएगा, क्यों क वो उसे सद्ध करने की को शश कर रहे हैं जो सद्ध हो ही नहीं सकता, यदि सद्ध हो सकता होता तो आज तक उसपर आक्षेप न लग रहे होते। यदि ये सद्धांत और रीति सही होती तो आज समाज में मान्य होती, अमान्य नहीं करते। ऐसे ही कुछ तर्क और प्रमाण देकर कुछ मांसाहारी भ्रष्ट लोग मांस को भोज्य और गुणवत्ता वाला बता कर इसकी भूरि भूरि प्रशंसा करके लोगो को बहकाकर अपनी बात को सद्ध करना चाहते हैं आइये एक नजर, धा र्मक, आध्यात्मिक, वैज्ञानिक और प्राकृतिक दृष्टिकोण से डाल कर सोच वचार करते हैं :

धा र्मक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण : धर्म ये वो वषयवस्तु है जिसको ठीक ठीक वदित हो जाए तो वो जन्म मरण के चक्कर से छूटकर मोक्ष प्राप्त कर ले। मगर धर्म वो गूढ़ तत्त्व है जिसे समझना सबसे आसान कार्य भी है और सबसे मुश्किल भी, आसान उनके लए जो मनुष्य हैं और मुश्किल उनके लए जो मनुष्य रूप में भी पशु हैं, दे खये :

ईश्वर ने मनुष्य को सत्य ग्रहण करने की बुद् ध दी है, क्यों क पशुओ में वो स्वाभा वक ज्ञान दिया है जो उनके लए जरुरी है, ले कन मनुष्यो में ववेक और स्वाध्याय का वो गुण दिया है जिससे मनुष्य मननशील होकर ज्ञान और वज्ञानं द्वारा नित नए आयाम प्राप्त करके समस्त मनुष्य और पशु पक्षी जाति का कल्याण कर सकता है, ये गुण पशुओ में नहीं देखे जाते इसी लए मनुष्य पशुओ से श्रेष्ठ और उत्तम जाति है। ले कन यही श्रेष्ठता और उत्तमता मनुष्य को पशु बनने की और भी प्रेरणा दे देती है, क्यों क मनुष्य जब ववेक और स्वाध्याय को छोड़ कर मननशील नहीं रहता तब अपने दुर्व्यसन और उदर पूर्ति हेतु पापकर्म की और

खींचा चला जाता है, तब ऐसी स्थति में अपनी वासनाओ और दुर्व्यसनों के चलते अपने पापकर्मों को सही सद्ध करने हेतु तर्क और प्रमाण जुटाने लगता है। यही आकर मनुष्य, निकृष्ट और पशु योनि से भी निम्न स्तर पर चला जाता है, शायद इसी लए धर्म शास्त्रो में स्थावर योनि का वधान है, क्यों क स्थावर योनि ऐसी भोग्य योनि है जिसपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, न उसे दर्द होता, न सोचने वचरने की क्षमता रहती, इसीकारण पेड़ पौधों में जीव होते हुए भी दर्द और सोचने वचरने की क्षमता नहीं पायी जाती, और जो मनुष्य मांसाहार करते हैं, अपने इस कुकृत्य को अपनी कपटी, थोति तर्क आधारित बातो से सही सद्ध करने की को शश करते हैं वो मानो मनुष्य होते हुए भी स्थावर हैं, क्यों क उनमे मननशीलता का गुण नहीं, वे कदा प मनुष्यता के लक्षण नहीं रखते अतः उन्हें मनुष्य कहलवाने का कोई अ धकार नहीं।

धा र्मक आधार और सैद्धांतिक तौर पर भोजन वो होना चाहिए जिससे न तो कसी का दोष लगा हो – ना पाप करके चोरी करके लाये हो – न ही हत्या अथवा हिंसा करके।

हिंसा कहते हैं – जो वैर भाव से कया गया कृत्य हो।" ऐसे में हमारे मस्तिष्क में सवाल उठता है आ खर फर मनुष्य व पशु की भोजन व्यवस्था ईश्वर ने क्या दी है ? हमें क्या खाना चाहिए ?

ईश्वर की न्याय व्यवस्था में एक नियम है, ईश्वर ने मनुष्य और पशु बनाये तो उनकी खाद्य सामग्री भी अवश्य ही बनाई होगी। अतः हम आगे पढ़ेंगे की मनुष्य और पशु की खाद्य सामग्री क्या है। आइये दे खये

मांसाहारी पशु और शाकाहारी पशु तथा मनुष्य, इन सभी का निर्माण ईश्वरीय न्यायवेवस्था से होता है, जो पशु मर जाते हैं उनका मांस सड़कर प्रकृति में बिगाड़ पैदा करता है इस लए वो बिगड़ पैदा न हो प्रकृति दू षत न हो इस लए मांसाहारी पशुओ का सृजन होता है जैसे गद्ध, चील, कौव्वा आदि।

कुछ पशु अपना पेट भरने हेतु हिंसक गति व ध करते हु शकार करते हैं यथा शेर, चीता, जंगली कुत्ता, लोमड़ी आदि इनमे प्रमुख हैं, अ धकतर मांसाहारी मनुष्य इन्ही पशुओ का दृष्टान्त देते हुए कहते हैं दे खये यदि मांसाहार ठीक नहीं होता तो ईश्वर मांसाहारी पशु नहीं बनाता, ले कन इस कुतर्क के पीछे का ज्ञान कभी नहीं समझते, ईश्वर ने माँसाहारी पशुओ को हिंसक ही बनाया है और वो हिंसा करके ही अपना भोजन प्राप्त करते हैं, ये सर्वमान्य तथ्य है, तो क्या मांसाहारी मनुष्य ये बात स्वीकार करते हैं की वे भी हिंसक, जंगली और हिंसा करके ही उदार पूर्ति करते हैं ? ये सवाल पूछते ही वो कहते हैं नहीं हम तो अहिंसक है, मनुष्य हैं। भाई वाह ! कार्य करते हो जंगली और पशुता वाले, कहते हो खुद को मनुष्य ? आइये आपको वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझाते हैं, दे खये :

वैज्ञानिक दृष्टिकोण : सात्विक भोजन से न्यूरो इनहीबीटरी ट्रान्समीटर्स उत्पन्न होते हैं, जिनसे मस्तिष्क शांत रहता है। वहीं असात्विक (मॉस) भोजन से मस्तिष्क में उत्तेजक तंत्रिका संचारक (न्यूरो इक्साइटेटरी ट्रान्समीटर्स) उत्पन्न होते हैं जिससे मस्तिष्क अशांत रहता है। गाय, बकरी, भेड़ आदि शाकाहारी जन्तुओं में सरोटो गन की अ धकता के कारण ही उनमें

शांत प्रवृ त्तयाँ पायी जाती हैं जब क माँसाहारी जन्तुओं जैसे शेर आदि में सरोटोनिन के अभाव से उनमें अ धक उत्तेजना, अशांति एवं चंचलता पायी जाती है। इसी परिप्रेक्ष्य में सन् 1993 में जर्नल ऑफ क्र मनल जस्टिक एज्युकेशन में फ्लोरिडा स्टेट के अपराध वज्ञानी सी.रे.जैफरी का वक्तव्य भी महत्वपूर्ण हो जाता है क वह चाहे कोई भी हो, मस्तिष्क में सरोटोनिन का स्तर कम होते ही व्यक्ति आक्रामक और क्रूर हो जाता है। शकागो ट्रिब्यून में प्रका शत अग्रलेख भी बताता है क मस्तिष्क में सरोटोनिन की मात्रा में गरावट आते ही हिंसक प्रवृ त्त में उफान आता है।

यहाँ यह बताना उ चत होगा क मॉस से जिनमें ट्रिप्टोपेन नामक अमीनों अम्ल नहीं होता है, मस्तिष्क में सरोटोनिन की कमी हो जाती है एवं उत्तेजक तंत्रिका संचारकों की वृद् ध हो जाती है। इसी से योरोप के व भन्न उन्नत देशों में नींद ना आने का एक प्रमुख कारण वहाँ के लोगों को माँसाहारी होना भी हैं उपरोक्त सरोटोनिन एवं अन्य तंत्रिका संचारकों की क्रया व ध पर काम करने से श्री पॉल ग्रीन गार्ड को सन् 2000 का नोबल पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है।

अतः वज्ञानं भी मानता है की मांस भक्षण से मनुष्य में क्रूरता, हिंसा और अपराध करने की प्रवृति जागती है, इसी लए इस मांस भोजन को तामसी भोजन कहा जाता है। यहाँ ध्यान देने वाली बात है की पशुओ में तो मननशील स्वाभाव नहीं होता इस लए पशुता निभाते हुए, अपने कर्मफल भोग करके हिंसा द्वारा मांसाहारी होते हैं, ले कन मनुष्य जिसका कर्तव्य ही मनुष्यता है क्या वो ऐसी हिंसा करके अपना भोजन करे तो उसे मनुष्य कहा जा सकता है ?

मांसाहारी मनुष्यो का दूसरा कुतर्क होता है पेड़ पौधों में जीव होता है, जिससे उन्हें भी दर्द होता है, यहाँ तक की पशु तो चीख चल्ला कर अपना दर्द प्रकट करते हुए जिबह (मरते) हैं। ले कन बेचारे पेड़ पौधे तो ऐसा भी नहीं कर सकते, उनकी चीख तो सुनाई भी नहीं देती, ये बड़ा अपराध है।

अब दे खये कुतर्क, जिन पशुओ की चीख, दर्द, चल्लाहट प्रत्यक्ष अनुभव कर रहे उनपर दया का रत्ती भर प्रभाव नहीं, ले कन जो पेड़ पौधों की चीख तक सुनाई नहीं देती उनपर दया और रहम की पट्टी बंधने को तैयार हैं। खैर इनके कुतर्क का जवाब देना हमारी जिम्मेदारी है, दे खये एक भारतीय वैज्ञानिक हुए थे जगदीश बासु जी, जिन्होंने ऐसा कोई तथाक थत वज्ञानिक यंत्र ईजाद कया था जिससे पेड़ पौधों की चीख सुनाई देती थी, ले कन हम आधुनिक वज्ञानं में जी रहे हैं भाइयो, आधुनिक वज्ञानं के अनुसार, न तो पेड़ पौधों को दर्द होता है, न ही उन्हें कुछ महसूस होता है क्यों क दर्द की अनुभूति और कुछ भी महसूस करने हेतु बुद् ध और नर्वस सस्टम होना जरुरी है मगर पेड़ पौधों में ये नहीं पाया जाते (Bhalla, US; Iyengar, R (1999). "Emergent properties of networks of biological signaling pathways". Science 283 (5400): 381–7)

ऐसी अनेको रिसर्च से आधुनिक वज्ञानं का पटारा भरा हुआ है जो सद्ध करता है की पेड़ पौधों में बुद् ध और नर्वस सस्टम नहीं होता इस लए उन्हें दर्द की अनुभूति नहीं हो सकती। ले कन यहाँ ध्यान देने वाली बात है की पेड़ पौधे सजीव होते हैं, जैसे आज मांसाहारी स्थावर हो चुके हैं उन्हें पशुओ का दर्द और पीड़ा आदि कुछ नहीं सूझ रहा ऐसे ही वो पेड़ पौधों में भी ईश्वरीय व्यवस्था से यही गुण दे दिए जाते हैं अतः मांसाहारी मनुष्य अगले जन्म में

स्थावर या फर हिंसक पशु उत्पन्न होंगे इसमें कोई शक नहीं। वैसे भी इस जन्म में मांसाहारी मनुष्य हिंसक और स्थावर तो हैं ही अतः ये भी अतिश्योक्ति नहीं की ये पेड़ पौधों व मांसाहारी पशुओ से मनुष्य श्रेणी में आये हो इस लए ये गुण पाये जाते हो।

प्राकृतिक दृष्टिकोण : वगत कुछ वर्षों से वश्वव्यापी खाद्यान्न समस्या चर्चा का वषय बनी हुयी है। इस समस्या का समाधान निम्नां कत वैज्ञानिक तथ्य करके दिखाते हैं :— (अ) एक कलोग्राम जन्तु प्रोटीन (माँस) हेतु लगभग ८ कलोग्राम वनस्पति प्रोटीन की आवश्यकता होती है। सीधे वनस्पति उत्पादों का उपयोग करने पर माँसाहार की तुलना में सात गुना व्यक्तियों को पोषण प्रदान कया जा सकता है।

(आ) कसी खाद्य शृंखला में प्रत्येक पोषक स्तर पर ९० प्रतिशत ऊर्जा का खर्च होकर मात्र १० प्रतिशत ऊर्जा ही अगले पोषक स्तर पर पहुँच पाती है। पादप प्लवक, जन्तु प्लवक आदि से होते हुए मछली तक आने में ऊर्जा का बड़ा भाग नष्ट हो जाता है और ऐसे में एक चंताजनक तथ्य यह है क वश्व में पकड़ी जाने वाली मछ लयों का चौथाई भाग माँस उत्पादक जानवरों को खला दिया जाता है।

(इ) समुद्र की खाद्य श्रंखला को देखने पर पता चलता है क वहाँ पादप प्लवकों द्वारा सं चत 31080 खरब ऊर्जा बड़ी मछली तक आते—आते मात्र 126 खरब बचती है। समुद्री शैवालों का वश्व में वािषक जल संवर्धन उत्पादन लगभग ६.२५ १००, ००,००० टन है। जापान तथा प्रायद्वीपों सहित दूरस्थ पूर्वी देशों में इसके अ धकांश भाग का सब्जी के रूप में उपयोग कया जाता है। समुद्री घासों में प्रोटीन काफी मात्रा में पायी जाती है। इसमें पाये जाने वाले एमीनो अम्ल की तुलना सोयाबीन या अण्डा से की गयी है। अतएव मछली पालन के स्थान पर पादप प्लवक पल्लवन से अहिंसा , ऊर्जा एवं धन तीनों का संरक्षण कया जा सकता है।
(ई) वश्व में प्रतिवर्ष २० लाख लोग कीटानाशी वषाक्तता से ग्र सत हो जाते हैं, जिनमें से लगभग २० हजार की मृत्यु हो जाती है। कीटनाशक जहर जैसे होते हैं और ये खाद्य शृंखला में लगातार संग्रहीत होकर बढ़ते जाते हैं। इस प्र क्रया को जैव आवर्धन कहते हैं। उदाहरण के लये प्रातिबं धत कीटनाशक डी. डी. टी. की मात्रा मछली में अपने परिवेश की तुलना में १० लाख गुना अ धक हो सकती है और इन मछ लयों को खाने वालों का स्वाभा वक रूप से अत्य धक जहर की मात्रा निगलनी ही पड़ेगी।
यही प्र क्रया अन्य माँस उत्पादों के साथ भी लागू होती है। कीटनाशकों, रसायनों से मुक्त आधुनिक जै वक कृ ष आज सारे वश्व का ध्यान आ कर्षत कर रही है। इसके अलावा वृक्ष खेती तथा मशरूम खेती भी खाद्यान्न समस्या के शानदार समाधान है।

वश्व के करीब १.२ अरब व्यक्ति साफ पानी (पीने योग्य) के अभाव में जी रहे हैं। ऐसा अनुमान लगाया जाता है क वर्ष २०२५ तक वश्व की करीब दो तिहाई आबादी पानी की समस्या से त्रस्त होगी। वश्व के ८० देशों में पानी की कमी है। इस समस्या के संदर्भ में जहाँ १ कलोग्राम गेहूँ के लये मात्र ९०० लीटर जल खर्च होता है वहीं गोमाँस के उत्पादन में १ लाख लीटर जल खर्च होता है। इस तथ्य से जल समस्या का समाधान भी शाकाहार में दिखायी देता है।

मानव मस्तिष्क में हुयी सबसे बड़ी वृद् ध का कारण हार्वर्ड वश्व वद्यालय के रिचर्ड रैंधम और नेन्सील कांक लन ब्रिटेन तथा मनेसोटा वश्व वद्यालय के ग्रेग लेडन के अनुसार पका हुआ शाकाहारी भोजन है। अतः प्राकृतिक दृष्टिकोण से भी मांसाहार अनु चत है।

मांसाहार से सम्बं धत कुछ अन्य वचार : वश्व स्वास्थ्य संगठन की बुलेटिन संख्या ६३७ के अनुसार माँस खाने से शरीर में लगभग १६० बीमारियाँ प्र वष्ट होती हैं। अ धकांश औष धयाँ वनस्पतियों से ही प्राप्त होती है।

कैंसर—अमरीकी वैज्ञानिकों की एक अध्ययन रिपोर्ट के अनुसार यदि लोग अ धक भुने हुये माँस तथा सड़ी चर्बी न खाये तो उन्हें कैंसर होने की आशंका बहुत कम रहेगी। इंटरनेशनल एजेन्सी ऑफ रिसर्च ऑन कैंसर के निर्देशक पॉल क्लीहाज के अनुसार पश्चिमी देशों में १० में से १ मरीज फल और सब्जी नहीं खाने की वजह से इस बीमारी की चपेट में आता है। के लर्फो िनया वश्व वद्यालय के जीव रसायन वभाग के अध्यक्ष श्री ब्रूस एन एम्स ने बताया क भोजन पकाने की प्र क्रया में खाद्य तेल और चर्बी गोश्त में वकृति बढ़ाते हैं जिससे इनके सेवन में कुछ ऐसी वकृत स्थितियाँ बनती हैं जिनसे आनुवां शकी द्रव्य क्षतिग्रस्त होते हैं और शरीर में कैंसर होने की आशंका बढ़ जाती है। संतरे के रस और हरी सब्जियाँ में फोलेट नामक तत्व होता है जो स्तन कैंसर के खतरों को कम करता है। प्रमुख कैंसर रोधी औष धयाँ इ वनग प्राइमरोज के बीज, लंदूसी नामक बूटी की प त्तयों का सलाद इत्यादि शाक पात हैं।

शाकाहार से सम्बं धत कुछ अन्य वचार : हरी सब्जियों में उपस्थित पोषक तत्व तथा वटा मन ई एवं सी प्रति ऑक्सीकारकों की तरह कार्य करते हैं। अल्जाइमर रोग से बचाने में इन प्रति आक्सीकारकों की ही भू मका होती है, शरीर से मुक्त मूलकों की सफाई में प्रति आक्सीकारक अपनी महत्वपूर्ण भू मका निभाते हैं। मुक्त मूलक कैंसर सहित अनेक घातक रोगों के लये उत्तरदायी होते हैं।

टी. बी. हमारी सफेद रक्त को शकाओं एवं रोगाणु का पेगोसोम बंद करवाती है फर इसे लाइसोसोम के संपर्क में लाकर नष्ट करवा देती है परन्तु टी.बी. का कीटाणु पेगोसोम को लाइसोसोम से जुड़ने नहीं देता है और अंदर बैठा—बैठा बढ़ता रहता है।
यूरो पयन मा लक्यूलर बायोलॉजिकल रिसर्च सोसायटी जर्मनी के एक अनुसंधान के अनुसार वनस्पति तेलों में पाई जाने वाली वसाएँ एरे चडोनिक अम्ल और सेरेमाइड पेगोसोम को लाइसोसोम से जुड़ने नहीं देता है और अंदर बैठा—बैठा बढ़ता रहता है।

यूरो पयन मा लक्यूलर बायोलॉजिकल रिसर्च सोसायटी जर्मनी के एक अनुसंधान के अनुसार वनस्पति तेलों में पाई जाने वाली वसाएँ एरे चडोनिक अम्ल और सेरेमाइड पेगोसोम को लाइसोसोम से जोड़ने में मदद करती हैं जब क मछली के तेल में पाई जाने वाली वसाएँ इस क्रया में बाधक होती हैं। अर्थात् शाकाहार टी. बी. को रोकता है जब क माँसाहार इस मारक रोग को बढ़ाता है। इस शोध के प्रमुख गेरेथ ग्र फथ्स के अनुसार शायद इसी लए खूब मछली खाने वाले इनुइट लोग टी. बी. से जल्दी ग्र सत हो जाते हैं। इस संदर्भ में यह तथ्य ध्यान देने योग्य हैं क भारत में प्रतिवर्ष लगभग ५ लाख लोग टी. बी. से मर रहे हैं।

वेदादि सत्य आर्ष ग्रंथो और ऐतिहासिक प्रमाणों से सिद्ध होता है की आर्य जाती पूर्णतया शाकाहारी है देखिये

कात्यान्न श्रोतसूत्र मे आया है-
दुष्टस्य ह विषोऽप्सवहरणम् ।।२५ ,११५ ।।
उक्तो व मस्मनि ।।२५,११६ ।।
शिष्टभक्षप्रति षिध्द दुष्टम।।२५,११७ ।।
अर्थात होमद्रव्य यदि दुष्ट हो तो उसे जल मे फेक देना चाहिए उससे हवन नहीं करना चाहिए , शिष्ट पुरुषो द्वारा निषिध मांस आदि अभक्ष्य वस्तुयें दुष्ट कहलाती है ।

शतपत में मॉस भोजी को यज्ञ का अधिकार नही दिया है देखिये :-
"न मॉसमश्रीयात् ,यन्मासमश्रीयात,यन्मिप्रानमुपेथादिति नेत्वेवैषा दीक्षा ।"(श. ६:२)
अर्थात मनुष्य मॉस भक्षण न करे , यदि मॉस भक्षण करता है अथवा व्यभिचार करता है तो यज्ञ दीक्षा का अधिकारी नही है

मनुस्मृति के प्रक्षिप्त श्लोक देकर अपने मांसभक्षण को सही सिद्ध करने वालो की ऐसा मालूम होता है इन लोगो की बुद्धि कहीं घास चरने चली गयी है, अन्यथा वे ऐसा कभी न कहते क्योंकि देखिये मनु महाराज ने "वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति" का क्या अर्थ दिया है –

या वेदविहिता हिंसा, नियतास्मिंश्चराचरे। अहिंसामेव तां विद्याद्, वेदाद धर्मो हि निर्बभौ।।
योहिंसकानि भूतानि, हिनस्त्यात्मसुखेच्छया। स जीवंश्च मृत्श्चैव, न कश्चित् सुखमेधते।।
(५.४४-४५)

अर्थात, जो विश्व संसार में दुष्टो – अत्याचारियो – क्रूरो – पापियो को जो दंड – दान रूप हिंसा वेदविहित होने से नियत है, उसे अहिंसा ही समझना चाहिए, क्योंकि वेद से ही यथार्थ धर्म का प्रकाश होता है। परन्तु इसके विपरीत जो निहत्थे, निरपराध अहिंसक प्राणियों को अपने सुख की इच्छा से मारता है, वह जीता हुआ और मरा हुआ, दोनों अवस्थाओ में कहीं भी सुख को नहीं पाता। दुष्टो को दंड देना हिंसा नहीं प्रत्युत अहिंसा होने से पुण्य है, अतएव मनु ने (8.351) में लिखा है –

गुरुं वा बालवृद्धौ वा ब्राह्मणं वा बहुश्रुतम्। आततायिनमायान्तं हन्यादेवाविचारयन।।
नाततायिवधे दोषो हन्तुर्भवती कश्चन। प्रकाशं वाप्रकाशं वा मन्युस्तं मन्युमृच्छति।।

अर्थात, चाहे गुरु हो, चाहे पुत्र आदि बालक हो, चाहे पिता आदि वृद्ध हो, और चाहे बड़ा भरी शास्त्री ब्राह्मण भी क्यों न हो, परन्तु यदि वह आततायी हो और घात-पात के लिए आता हो, तो उसे बिना विचार तत्क्षण मार डालना चाहिए। क्योंकि प्रत्यक्षरूप में सामने होकर व अप्रत्यक्षरूप में लुक-छिप कर आततायी को मारने में, मारने वाले का कोई दोष नहीं होता क्योंकि क्रोध को क्रोध से मारना मानो क्रोध की क्रोध से लड़ाई है।

""यज्ञ में हिंसा की निंदा और अहिंसा की प्रशंसा"

ये वृतांत महाभारत में शांतिपर्व के अंतर्गत अध्याय २७२ में आता है – केवल इतना ही नहीं – यहाँ ये भी बताया गया है की यदि कोई यज्ञ में पशु वध करता है – तो निश्चय ही उसका सब तप नष्ट हो गया।

तस्य तेनानुभावेन मृगहिसात्मनस्तदा।
तपो महत समुच्छिन्नं, तस्माद्धहिंसा न य ज्ञया।।
अहिंसा सकलो धर्मोहिंसा धर्मस्तथा वधः।
सत्यंतेहं प्रवक्ष्या म, यो धर्मः सत्यवादिनाम्।।

इस प्रकरण में महाराज यु धष्ठर ने भीष्म पतामह से पूछा है की धर्म तथा सुख के लए यज्ञ कैसा करना चाहिए ? उसके उत्तर में पतामह ने एक तपस्वी ब्राह्मण -ब्राह्मणी दंप त का वृतांत देते हुए बतलाया है की कसप्रकार उस तपस्वी ब्राह्मण का महान तप, यज्ञ में पशुब ल देने के लए एक वन्य मृग को मारने की इच्छा मात्र से वनष्ट हो गया। इस लए यज्ञ में कभी हिंसा न करनी चाहिए। अहिंसा सार्वत्रिक और सारका लक नित्य धर्म है। इस प्रमाण से ज्ञात होता है की न तो महाभारत काल में यज्ञ में पशु हिंसा का वधान था – न ही उससे पहले के काल में क्यों क अथर्ववेद 11.7.7 में लखा है –

राजसूयं वाजपेयमग्निष्टोमस्तदध्वरः।
अकार्श्वमेधावुच्छिष्टे जीव बर्हिममन्दितमः।।

राजसूय, वाजपेय, अग्निष्टोम, अर्कमेध, अश्वमेध आदि सब अध्वर अर्थात हिंसा रहित यज्ञ हैं, जो क प्रा णमात्र की बुद् ध करने वाला और सुख शांति देने वाला है। एवं इस मन्त्र में राजसूय आदि सभी यज्ञो को "अघ्वर" कहा गया है जिसका एकमात्र सर्वसम्मत अर्थ "हिंसा रहित यज्ञ है" जो क निषेधार्थक नञ पूर्वक 'ध्वर' हिंसायां धातु से बनता है। घ्वरो हिंसा तदभावोत्र सोध्वरः। अतः स्पष्ट है की वेदने कसी भी यज्ञ में पशुवध की आज्ञा नहीं दी, उल्टा पशुवध करने पर उसे यज्ञ ही नहीं माना। इस लए वेद के नाम पर यज्ञो में पशुवध करना अपने को धोखा देना है, दुसरो को उल्टा रास्ता बतलाना, अथवा अपनी अज्ञानता प्रकट करना है। फर यह भी दे खये की पशु वध करने पर प्रा णमात्र की क्या वृद् ध हुई और उसे क्या सुख शांति मली, उल्टा प्राणी की हत्या करते समय उसे घोर यातना दी जाती है और उसका जीवन तक समाप्त कर दिया जाता है, तब वह कर्म "बर्हिममन्दितमः" कैसे रहा ?"

उपरोक्त मनु स्मृति के प्रमाण से भी स्पष्ट है की यज्ञ में पशु वध का निषेध है। वेद प्रमाणों से स्पष्ट है की वेदो में पशु वध निषेध है – जब क वेदो में पशुओ को पालने का स्पष्ट निर्देश है – यहाँ तक की – गाय, घोड़ा आदि पशुओ की हत्या करने वालो को "प्राणदंड" तक का वधान है – मनु स्मृति भी इस बात की पुष्टि करती है – ब्राह्मण ग्रन्थ भी यही कहते हैं = महाभारत भी यही कहती है – तो इससे सद्ध है – न तो वैदिक काल में यज्ञ में पशु वध होता था – ना ही महाभारत काल में – ये सब महाभारत युद्ध के ५००-१००० वर्ष बाद की उपज ही सद्ध होती है –

मैं उन सभी बंधुओ को इस माध्यम से सूचित करना चाहता हु, जब वेद, ब्राह्मण ग्रन्थ, इतिहास, और मानवशास्त्र धर्मग्रन्थ आदि भी मांसाहार को पाप कर्म बताते हैं तब हमारे इतिहास के श्री राम आदि महापुरष किस प्रकार माँसाहारी हो सकते हैं ?

जो भी मनुस्मृति में मांसाहार सम्बंधित श्लोक हैं वे प्रक्षिप्त हैं क्योंकि महाभारत का श्लोक ऊपर दिया है, जिसमे इसी विषय पर संकेत किया गया है।

अतः सत्य सनातन वैदिक स्वरुप को पहचानिये, शाकाहार अपनाये, बीमारी दूर भगाए, शुद्ध सात्विक और सनातन संस्कृति हमारी पहचान

लौटो वेदो की और

नमस्ते

"सत्यार्थ प्रकाश : समीक्षा की समीक्षा का जवाब PART 8"

OCTOBER 24, 2015 2 COMMENTS

"सातवे अध्याय का जवाब"

पुनर्जन्म, मजहब, पंथ, सम्प्रदाय व धर्म के आलोक में

मित्रो, सतीशचंद गुप्ता जी द्वारा उठाया गया पुनर्जन्म पर आक्षेप की मरणोत्तर जीवन : तथ्य और सत्य में वे स्वयं भी स्वीकार करते हैं की पुनर्जन्म होता है, मगर खेद की खुद अपनी ही बात को नकार भी देते हैं, पिछली पोस्ट में भी सिद्ध किया गया था की पुनर्जन्म होता है, ये कोई ख्याली पुलाव नहीं है, सभी मजहबो में पुनर्जन्म माना जाता है, क्योंकि पुनर्जन्म के आभाव में मनुष्य की किये कर्मो का फल कैसे भोग किया जा सकेगा ? इसका प्रामाणिक और संतोषजनक जवाब आज तक कोई व्यक्ति नहीं दे पाया है, देखिये हम पहले भी बता चुके हैं दुबारा बताते हैं :

दुनिया मैं मौजूद लगभग सभी मजहब, पंथ, मत, समुदाय, पुनर्जन्म को पूर्णरूपेण अथवा आंशिक रूप से मानते हैं,

हिन्दू मत, बुद्ध मत, सिख मत, जैन मत सभी मतों सम्प्रदायों में पुनर्जन्म को माना जाता है, मानने का तरीका और प्रक्रिया किंचित भेद है, पर माना जाता है।

लेकिन ईसाई और इस्लाम मत की ये मान्यता है, की मरणोपरांत आत्मा, कब्र में विश्राम करती है, और आखरी दिन आने पर अल्लाह के हुक्म से उठ खड़ी होगी। लेकिन यहाँ भी वो ये मानते हैं की आत्मा को पुनः एक नया शरीर मिलेगा, और वो अपने किये कर्मो के फल उसी शरीर में जन्नत व जहन्नम में भोगेगी। क्या ये पुनर्जन्म नहीं ? क्योंकि पुनर्जन्म का

तो कांसेप्ट ही है कर्मो का फल भोग करने हेतु नया शरीर धारण करना, भले ही ये प्र क्रया थोड़ी अलग हो, ले कन है तो पुनर्जन्म ही।

ले कन यहाँ भी एक आक्षेप खड़ा हो जाता है, क्यों क ईसाई और मुस्लिम दोनों ही सम्प्रदाय का मानना है की ईसाई मसीह साहब जो बड़े पैगम्बर हुए हैं, वो इसी धरती पर आखरी दिन आने से पहले आएंगे, यानी वो पुनः इसी धरती पर प्रकट होंगे, तो मेरे भाइयो ये तो बताओ की जब ईसा मसीह साहब आएंगे तो वो पुनर्जन्म न होगा ? जब आप पुनर्जन्म को नहीं मानते, तो ईसा मसीह साहब कैसे पुनः वापस आएंगे ?

खैर ये तो ईसाई और मुस्लिम बंधुओ पर छोड़ते हैं, हम आपको दिखाते हैं, क़ुरान और बाइबिल के पुनर्जन्म पर क्या वचार हैं, दे खये :

13 यूहन्ना तक सारे भ वष्यद्वक्ता और व्यवस्था भ वष्यद्ववाणी करते रहे।
14 और चाहो तो मानो, ए लय्याह जो आनेवाला था, वह यही है।

(बाइबिल मत्ती ११:१३-१४)

यहाँ इस अध्याय में पैगम्बर ईसा यूहन्ना को ए लय्याह का पुनर्जन्म बता रहे हैं।

इसके बारे में और भी सटीकता से ईसा मसीह ने मत्ती के ही अध्याय १७ में और भी अ धक वस्तार से बताया है दे खये :

11 उस ने उत्तर दिया, क ए लय्याह तो आएगा: और सब कुछ सुधारेगा।
12 परन्तु मैं तुम से कहता हूं, क ए लय्याह आ चुका; और उन्होंने उसे नहीं पहचाना; परन्तु जैसा चाहा वैसा ही उसके साथ कया: इसी रीति से मनुष्य का पुत्र भी उन के हाथ से दुख उठाएगा।
13 तब चेलों ने समझा क उस ने हम से यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के वषय में कहा है।

(बाइबिल मत्ती १७:११-१३)

यहाँ सुस्पष्ट हो गया की जो ए लय्याह का पुनर्जन्म होना था वो यूहन्ना के रूप में हुआ।

ऐसी ही अनेक जगहों पर बाइबिल में पुनर्जन्म के प्रमाण मलते हैं :

5 देखो, यहोवा के उस बड़े और भयानक दिन के आने से पहिले, मैं तुम्हारे पास ए लय्याह नबी को भेजूंगा।

(बाइबिल मलाकी ४:५)

यहाँ ए लय्याह को ही यहोवा ने भेजने का वादा कया जिसकी पुष्टि ऊपर की आयतो में ईसा मसीह खुद करते हैं, अतः ईसाई बंधुओ को पुनर्जन्म के वषय में कोई शंका नहीं रखनी चाहिए, ईसाई बंधुओ को अपनी बाइबिल का वश्लेषण करना चाहिए।

अब इस्ला मक नजरिये से दिखाते हैं :

इस्लाम में कुछ फ़रक़े ऐसे भी हैं जो पुनर्जन्म पर वशवास रखते हैं, उनमे दो मुख्य हैं हालां क ये फ़रक़े जनसँख्या के हिसाब से बहुत कम हैं, पर फर भी ये मुस्लिम होते हुए भी पुनर्जन्म पर आस्था रखते हैं,

शया मुस्लिमो में अल्विया एक समुदाय है जिनकी मान्यता है की वो अपने बुरे कर्मो के आधार पर मनुष्यो में ईसाई व पशु योनि प्राप्त कर सकते हैं। (Wasserman J. The templars and the assassins: The militia of heaven: Inner Traditions International. 2001:133–7)

वहीँ मुस्लिमो में एक और समुदाय होता है गुलात, इनकी भी मान्यता है की पुनर्जन्म होते है, क्यों क गुलात पंथ के संस्थापक का वशेष परिस्थिति में पुनर्जन्म हुआ था जिसे हुलुल कहते हैं, इस लए इस मुस्लिम पंथ का पुनर्जन्म में वश्वास है (Wilson PL. Scandal: Essays in Islamic Heresy. Brooklyn, NY: Autonomedia; 1988)

अब हम कुछ क़ुरानी आयतो से समझाने की को शश करते हैं :

(हे लोगो !) तुम अल्लाह की बातो का कैसे इंकार कर सकते हो ? सच तो यह है की तुम मुर्दा थे, उसने तुम्हे जिन्दा कया। (फर एक दिन ऐसा आएगा की) वह तुम्हे मौत देगा, फर तुम्हे जी वत करेगा। इसके बाद तुम्हे उसी की और लौटाया जायेगा

(क़ुरान २:२९)

क्या यहाँ से मुस्लिम भाइयो को स्पष्ट पुनर्जन्म नहीं दिखाई देता ? यहाँ अल्लाह मयां स्पष्ट रूप से कहते हैं की तुम पहले मुर्दा थे, फर जी वत कया, फर मौत देगा, फर जी वत करेगा। ये तो स्पष्ट पुनर्जन्म है।

इसके अतिरिक्त पछले लेख में भी वज्ञानिक और वैज्ञानिको के निष्कर्ष आधार पर भी पुनर्जन्म सद्ध होता है, तथा क़ुरान की अनेक आयतो का संदर्भ भी दिया गया है।

जहाँ तक प्रथम सृष्टि के ४ ऋ षयों की बात है तो ऋ ष ने सत्यार्थ प्रकाश में ही लखा है की जीव अनादि हैं, जब जीव अनादि हैं तो उनके कर्म भी अनादि हुए, उनके जो भोग होंगे वो उन्हें कर्मफल रूप भोगने ही हैं, जब प्रथम सृष्टि, यहाँ प्रथम सृष्टि का अर्थ ये नहीं की ये सृष्टि ही प्रथम है, सृष्टि तो स्वरुप से अनादि है जैसे रात के बाद दिन, और दिन के बाद रात, तथा रात से पहले दिन, दिन से पहले रात रहती है, इसमें प्रथम क्या आया ? ले कन प्रथम का अर्थ है की जब प्रथम मन्वन्तर यानी इस सृष्टि का प्रथम मन्वन्तर आया तब ४ ऋ षयों के ह्रदय में वेद ज्ञान प्रका शत हुआ। इसी प्रकार सभी जीवो के कर्म और उनके फलभोग होते हैं। ये सृष्टि तो स्वरुप से ही अनादि है, इस बात को अल्लाह मयां खुद कुरान में स्वीकार करते हैं, फर आक्षेपकर्ता को तो हमें बताना चाहिए :

यदि पुनर्जन्म नहीं होता, तो जो मनुष्य अंधे, लंगड़े, बेहरे अनेको बीमारियो से ग्रस्त होते हैं, वो क्या अल्लाह की मर्जी है ?

यदि पुनर्जन्म नहीं होता तो जो बच्चे पैदा होते ही मृत्यु की गोद में सो जाते हैं, उनमे उन बच्चो का क्या दोष ? क्या ये एक माता पता को दुःख अल्लाह की मर्जी से होता है ?

जो पुनर्जन्म नहीं होता तो जो गरीब और अमीर हैं वो कस कारण ? क्या अल्लाह भेदभाव करता है ?

जो पुनर्जन्म नहीं होता तो लाखो, करोडो, वर्षो से जो आत्माए कब्र में सो रही, अथवा जो आत्यमाये आज कब्र में सो रही उन्होंने जो कर्म कये उनके फल उन्हें करोडो वर्षो बाद, न्याय के दिन मलेंगे, तो क्या ये लचर क़ानून व्यवस्था नहीं ? क्यों क अंग्रेजी की एक कहावत है, जस्टिस डले, मीन्स जस्टिस डनाई, अर्थात न्याय को लम्बा लटकाना न्याय नही करना के सामान है।

एक बात और यदि पुनर्जन्म नहीं होता, तो जो जीव अभी सुख दुःख प्राप्त कर रहे वो कस कर्मो के आधार पर ? जब क न्याय तो केवल न्याय के दिन होगा। क्या ये तर्कसम्मत है ?

हम तो चाहेंगे, आक्षेपकर्ता सच्चाई को जानने का प्रयास करे, महज थोड़ी झूठी प्रतिष्ठा पाने को सच्ची बातो पर भी आक्षेप करने वद्वानो का काम नहीं।

आओ लौटो वेदो की और

सत्यार्थ प्रकाश : समीक्षा की समीक्षा का जवाब PART 9″

OCTOBER 24, 2015 LEAVE A COMMENT

"आठवे अध्याय का जवाब"

कोई भी जीव चाहे मनुष्य हो अथवा पशु व पक्षी मरते ही हैं और शरीर से आत्मा का वयोग होने पर वह शरीर रोगाणुओं और जीवाणुओ का घर बन जाता है जो सड़ता है, क्यों क शरीर में मौजूद जो मक्रोजियम्स हैं वह शरीर को अंदर से सडाना स्टार्ट करते हैं, अब देखने वाली बात है की जो मनुष्य जिंदगी भर जिया, उन्न त की, इस प्रकृति से बहुत कुछ लया, और अपनी पूरी जिंदगी प्रकृति के लए यदि कुछ नहीं भी कर पाया तो, परिवार आदि के लए बहुत कुछ कया, अथवा बहुत से कुछ नहीं भी कर पाते, तो सवाल उठता है, की अंतिम जो उसका क्रयाकर्म है वो कस प्रकार अच्छा हो सकता है, जो सुलभ हो, सस्ता हो, पर्यावरण हितकारी हो, तथा मनुष्यो के लए भी लाभकारी हो।

मृत शरीर को ध्यान में रखते हुए अनेको मतों, सम्प्रदायों और पन्थो में अनेको परंपरा दे ख जाती हैं, उनमे प्रमुख हैं :

1. शव दाह क्रया।
2. मुर्दा गाड़ना।
3. मुर्दे को पानी में बहाना।
4. मुर्दे को पशु प क्षयों हेतु भोजन के लए छोड़ देना।

अब इनमे से मुर्दे को बहाना और पशु प क्षयों हेतु भोजन के लए छोड़ देना न तो युक्तिसंगत है न ही तर्कसंगत है, क्यों क इससे पर्यावरण का बहुत वकार होता है। क्यों क दोनों ही क्रयाओ से शव का अवशेष प्रकृति को दू षत करते हैं।

अब बात आती है, मुर्दा जलाये अथवा गाड़ा जाए ?

वज्ञानिक दृष्टिकोण से मृत शरीर का pH बैलेंस बिगड़ता है और अति दुर्गन्ध बदबू आनी स्टार्ट हो जाती है, जब यह मृत शरीर जमीन में गाड़ा जाता है तब pH बैलेंस बहुत अ धक हो जाता है और प्राकृतिक रूप शरीर के “गुड न्यूट्रिएंट्स” बाहर नहीं निकल पाते जिससे जमीन के अंदर ही वकार उत्पन्न होता है और अ धक बदबू आती है। आप कसी भी दफनाने वाली जगह का अवलोकन करे, वहां के वातावरण में अजीब सी दुर्गन्ध आती रहती है।

जोआन कैरोल क्रूज़ अपनी पुस्तक The Incorruptibles: A Study of the Incorruption of the Bodies of Various Catholic Saints and Beati जो की १९७७ में छपी थी, पृष्ठ संख्या ३६२ पर लखते हैं

“The sheer stench from decomposing corpses, even when buried deeply, was over overpowering in areas adjacent to the urban cemetery”

गहराई से दफ़न करने के बावजूद भी शवो के सड़ने की महा भयंकर दुर्गन्ध शहरी कब्रिस्तानों के निकटवर्ती क्षेत्रो में जोरदार तरीके से फैली थी।

इसका एक दूसरा पहलु और भी है इस तरह के मृत शरीर को दफनाए जाने से जमीन में सो डयम की मात्रा २०० से २००० गुना अ धक तक बढ़ जाती है जिससे पेड़ पौधों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है।

तीसरा महत्वपूर्ण कारण है की मृत शरीर को दफनाने पर जमीन में अनेक तरह के बेक्टेरिआ और जानलेवा टॉक्सिन्स का निर्माण होने लगता है, अ धकतर पशुओ को जमीन में दफनाने से एक खतरनाक टोक्सिन botulinum टोक्सिन उत्पन्न होता है जो धरती में मौजूद पानी को वषैला करता जाता है जिससे कैंसर और अनेक प्रकार की भयंकर बीमारिया उत्पन्न होती हैं।

“Decomposition of the human body releases significant pathogenic bacteria, fungi, protozoa, and viruses which can cause disease and illness, and many urban cemeteries were located without consideration for local groundwater. Modern burials in urban cemeteries also release toxic chemicals associated with embalming, such as arsenic, formaldehyde, and mercury. Coffins and burial equipment can also release significant amounts of toxic chemicals such as arsenic (used to preserve coffin wood) and formaldehyde (used in varnishes and as a sealant) and toxic metals such as copper, lead, and zinc (from coffin handles and flanges)”

“कब्र में मानव शरीर (शव) के सड़ने पर अनेको गंभीर और रोगजनक बेक्टेरिआ, फाँ ग (कवक), प्रोटोजोआ और वाइरेसस आदि उत्पन्न होते हैं, जो अनेको प्रकार के गंभीर रोग और बीमारियां उत्पन्न करने के लए उत्तरदायी हैं, और अनेको शहरी कब्रिस्तान बिना स्थानीय भूजल की परवाह कये स्था पत कये गए हैं। यहाँ तक की शहरी कब्रिस्तानों में मौजूद आधुनिक कब्रो में लेप कये गए शवो से हानिकारक टॉक्सिक के मकल्स जैसे आर्सेनिक, फॉरमॉल्डहाइड, और मर्करी आदि जानलेवा तत्व उत्सर्जित होते हैं। इसके अतिरिक्त शवो के साथ कफ़न और दफ़न सामग्री से भी आर्सेनिक, फॉरमॉल्डहाइड, और टॉक्सिक धातु जैसे कॉपर, लेड और जिंक आदि उत्सर्जित होते हैं।”

Taylor, Richard; Allen, Alistair (2006). “Waste Disposal and Landfill: Potential Hazards and Information Needs”. In Schmoll, Oliver; Howard, Guy; Chilton, John; Chorus, Ingrid. Protecting Groundwater for Health: Managing the Quality of Drinking-Water Sources. Cornwall, U.K.: World Health Organisation. ISBN 9781843390794

ये तो वैज्ञानिक निष्कर्षो के आधार पर है की मुर्दा गाड़ने से कतनी हानियां हो सकती हैं, अब आपको समझाते हैं की मुर्दा गाड़ना कतना खर्चीला हो सकता है, दे खये :

टाइम्स ऑफ़ इं डया, हैदराबाद संस्करण (५ मई २०१२) में छपी खबर के मुताबिक मुर्दा गाड़ने के लए उपयुक्त १५ गज जमीन का खर्च १८ हजार रूपये से १ लाख रूपये तक का है। वहीँ यदि कहीं मुर्दे को उसकी इच्छानुसार मु र्शद (आध्यात्मिक मार्गदर्शक) के नजदीक गाड़ना हो तो खर्च का कोई पारावार ही नहीं, बहुत अ धक हो सकता है, वहीँ दूसरी और नामपल्ली में ही यूसुफेन दरगाह जो ३० हजार स्क्वेर यार्ड में फैली है वहां ६ फ़ीट बाय ढाई फ़ीट की कब्र के लए आपको ३० हजार से ८० हजार तक का खर्च आता है (ध्यान रखे ये २०१२ के आंकड़े हैं)

इसके अतिरिक्त दिल्ली जैसे महानगर में कसी कब्रिस्तान में मुर्दा गाड़ने का खर्च ३ हजार रूपये है, वहीँ यदि कसी मस्जिद के निकट के कब्रिस्तान में मुर्दा गाड़ना हो तब इसका खर्च १५ हजार से शुरू होकर ५० हजार रूपये है, ले कन यदि आपको लोक नायक अस्पताल के पीछे जो ऐतिहा सक मेहदियां कब्रिस्तान है वहा मुर्दा गाड़ना हो तो उसका खर्च ५० हजार से शुरू होता है और लाखो रूपये तक खर्च करने पड़ सकते हैं।

मशकर रशीद जो दिल्ली गेट कब्रिस्तान के केयरटेकर हैं बताते हैं की “दिल्ली गेट कब्रिस्तान में कब्र का खर्च २८०० रूपये है, ले कन शहर के अलग अलग कब्रिस्तान में अ धकतर ५००० रूपये शुरूआती खर्च है, ले कन जगह की कमी के चलते, उनसे अ धक रूपये भी वसूले जा सकते हैं।
(डेक्केन हेराल्ड ४ नवम्बर २०१२)

इन खबरों में ये भी बताया गया की ईसाई समुदाय के लए जो खर्च है कब्र का वो कम से कम ३००० रूपये से १०००० रूपये तक जाता है। (डो मनिक जू लयस, सम्बं धत दिल्ली कब्रिस्तान कमेटी)

ध्यान रहे ये आंकड़े केवल २०१२ तक के हैं, अभी २०१५ चल रहा है, तो इसमें कतना इजावा हुआ होगा, कह नहीं सकते। कब्रिस्तान में मुर्दो को गाड़ना ही जब इतना महंगा है, तब इसके

अतिरिक्त जो अन्य खर्च आता है, वो अलग ही होगा, तब एक मुर्दा गाड़ने पर कतना खर्च आ सकता है, आप अंदाजा लगा सकते हैं।

अब हम आपको कब्रिस्तान की जमीन और शहरो की वास्त वकता का बोध करवाते हैं, दे खये १९०१ में अकेले दिल्ली राज्य की जनसँख्या ४ लाख थी ले कन २०१२ में दिल्ली की जनसँख्या लगभग २ करोड़ के आसपास पहुंच गयी है। ऐसे में दिल्ली में लगभग बड़े और छोटे १०० कब्रिस्तान मौजूद हैं जो मुस्लिम समाज के लए उपलब्ध हैं, इसके अतरिक्त सरकार ने सीलमपुर और कुंडली इलाके के लए कुछ साल पहले ही कब्रिस्तान की जगह मुहिया करवाई है, वहीँ ईसाई समुदाय के लए दिल्ली में ११ कब्रिस्तान मौजूद हैं, जिसमे द्वारका और बुराड़ी को अभी हाल में ही सरकार ने मुहिया करवाया है, ये सब जगह इस लए मुहिया करवाई गयी है, क्यों क पछले कब्रिस्तान में जगह नहीं बची।

अब जरा एक बार को सो चये, इतनी जगह अकेले दिल्ली में ही मुर्दो के आश्रय स्थल हेतु आर क्षत है, और वो भी कम पड़ रही है, तो नयी जगह अलॉट की जा रही हैं, जब क आबादी के हिसाब से मुस्लिम और इसाई आबादी भारत में तेजी से बढ़ रही है, और वश्व जनसँख्या के हिसाब से तो खुद मुस्लिम समुदाय स्वीकार करते हैं की वो तेजी से ग्रोथ कर रहे हैं, ऐसी स्थति में, कतनी जगह मुर्दो के आश्रय स्थली हेतु आरक्षण के लए दी जायेगी ?

जब क आज पूरी दुनिया खाद्यान्न और रहने की मूलभूत समस्याओ से ग्रस्त है, जो जिन्दा व्यक्ति हैं उनके पास रहने को जगह नहीं, कसान खेती की जमीन को तरस रहा है, वहीँ दूसरी और मुर्दो के लए इतनी बड़ी तादाद में जमीन को आश्रय स्थल बनाना क्या युक्तियुक्त है ?

अब हम आते हैं, शमशान घाट की स्थति पर, शमशान घाट एक जगह बनता है, और उसको दूर दूर के लोग भी सुगमता से उपयोग करते हैं, क्यों क शरीर के भस्मीभूत होने पर वो जगह खाली हो जाती है अतः उसी जगह अनेको शवो का शवदाह आराम से हो सकता है, रही बात खर्चे की तो सामान्य व्यक्ति के लए नाममात्र खर्च होता है, लकड़ी के अमूमन १५०० रूपये और घी के अ धकतम ६०० रूपये बाकी अन्य सामान की लगत १००० तो कुल खर्च करीब ३१०० रूपये आता है, यदि आक्षेपकर्ता मह र्ष दयानंद के ही सद्धांतो को अपनाकर खर्च सद्ध करना चाहता है तब भी ये खर्च अ धकतम 1-2 लाख रूपये तक जाता है। ले कन यहाँ इस सद्धांत में जो जमीन का खर्च है वो नगण्य है, वहीँ दूसरी और १ लाख रूपये तो कब्र के खर्चे पर भी आ रहा है, साथ ही करोडो रूपये की जमीन जो केवल मुर्दो की आश्रय स्थली बनी रह जायेगी वो अलग है। तब भी मह र्ष दयानंद का सद्धांत ही सद्ध होता है, और वो सुलभ है, सस्ता है, मनुष्यो के लए अतयंत लाभकारी है, क्यों क इससे जमीन की बचत होती है।

वही "International Cremation Statistics 2008" के मुताबिक पूरी दुनिया में भारत में ८५%, चीन 45.6% २०१४ में, जापान 99.85% २००८ में, ताइवान 92.47% 2013 में शव दाह संस्कार कर चूका है, वहीँ दूसरी और यूरोपीय देशो में १९६० में ३५% दाह संस्कार हुए थे जो २००८ में बढ़ाकर दुगने 72.44% पहुंच गए इसके अतरिक्त फ्रांस पेरिस में ३२% से बढ़कर ४५% तक दाह संस्कार का आंकड़ा पहुंच चूका है। वहीँ अमेरिका की दाह संस्कार संस्था की मानना है

की २०२५ तक दाह संस्कार का आंकड़ा ५०% को पार कर जाएगा, क्यों क १९६० में ये आंकड़ा महज 3.5% था जो २०१० तक ४१% तक पहुंच गया।

पूरी दुनिया, में आज जमीन को लेकर बड़ी समस्या है, क्यों क कोई भी वकासशील देश को वक सत होने हेतु जमीन चाहिए, कसान को खेती के लए जमीन चाहिए, उद्योग के लए जमीन चाहिए, यानी जमीन की इस कदर समस्या है की वकास के लए जमीन चाहिए मगर यही जमीन यदि केवल मुर्दो की आश्रय स्थली बना दी जाए, तो क्या देश का वकास संभव है ?

यदि शव दाह क्रया वज्ञानं सम्मत न होती तो आज जो भी वक सत राष्ट्र हैं वो क्यों इसे अपनाते ? जाहिर सी बात है, सही तरीके से कया गया शव दाह, कभी भी प्रदूषण नहीं फैलाता, उलटे वातावरण को प्रदुषण से बचाता है।

आक्षेपकर्ता को यदि अभी भी केवल आक्षेप ही करने हैं तो वो स्वतंत्र है, मगर यदि, वैज्ञानिक, और राष्ट्र को बढ़ाने के योगदान, तथा गरीबो की आ र्थक स्थति को देखते हुए अवलोकन करे, तो मुर्दा गाड़ने की बजाये शव को जलाना अ धक युक्तियुक्त, वज्ञानं समत्त और ता र्कक है, साथ ही इससे देश, कसान और खाद्यान्न की समस्या का भी छुटकरा है।

आओ लौटो वेदो की और

“सत्यार्थ प्रकाश : समीक्षा की समीक्षा का जवाब PART 10″

OCTOBER 24, 2015 LEAVE A COMMENT

“नौवे अध्याय का जवाब पार्ट 1”

सन १९४३ ई० तक इन भाषाओं में सत्यार्थ प्रकाश के अनुवाद होने का पता चलता है : बंगाली, उर्दू (दो भन्न भन्न अनुवाद) अंग्रेजी (दो भन्न भन्न अनुवाद), पंजाबी, संस्कृत, संधी, उ ड़या, कनाडी, ता मल, तेलुगु, मलयालम, मरहठी, गुजराती, फ्रेंच, जर्मन, पश्तो, ब्रह्मी, और नेपाली। इनमे से कुछ भाषाओ के अनेक संस्करण निकल चुके हैं। अब यह ज्ञात हो की कुछ भाषाओ में अनुवादों के प्रथम प्रका शत होने का समय इस प्रकार है :

उर्दू में अनुवाद (1) १८९७ ई०,
उर्दू में अनुवाद (2) १८९८ ई०
अंग्रेजी में अनुवाद (1) १९०६ ई०
अंग्रेजी में अनुवाद (2) १९०८ ई०
संस्कृत में अनुवाद १९२५ ई०

निदान सत्यार्थ प्रकाश के प्रेमी व समर्थको का अंदाजा इसी बात से बहुत कुछ हो सकता है की मूलग्रंथ व अनुवादों का प्रकाशन बहुत ज्यादा हुआ ; परन्तु साथ ही साथ इस बात से भी

इंकार नहीं कया जा सकता की इसके वरोध में भी अब (सन १८४४ ई०) तक जितना कार्य हुआ है उसको यथो चत रूप से जतलाने के नि मत्त यहाँ पर काफी स्थान नहीं।

सत्यार्थ प्रकाश का संशो धत संस्करण जो पहिले पहिले सन १८८४ ई० में प्रका शत हुआ है और जिसका आर्य सामाजिक जगत में चलन है उसके वषय में अनेक वरोधी लोगो ने इस प्रकार भरम फैलाया है की यह संस्करण मह र्ष दयानंद का लखा हुआ नहीं है क्यों क वह सन १८८३ ई० में शरीर त्याग कर गए हैं और उक्त संशो धत संस्करण उनकी मृत्यु के पश्चात सन १८८४ ई० में निकला है और असली सत्यार्थ प्रकाश वह है जो सं १८७५ ई० अर्थात उनके जीवन काल में निकला है।

ऐसी बात के वषय में यह जान लेना चाहिए की स्वामीजी ने संशो धत संस्करण की सामग्री सतमबर सन १८८२ ई० (भाद्र शुक्ल पक्ष सं० १९३९ व०) में ही तैयार कर दी थी (सत्यार्थ प्रकाश की भू मका – लेखक) उस समय में वह उदयपुर में वराजमान थे और बाद को अंत समय तक राजपुताना में ही रहे जिस का लेखा इस प्रकार है की पहली मार्च सन १८८३ ई० में गुरुवार को प्रातः काल ही उन्होंने उदयपुर से प्रस्थान कया। सांयकाल के लगभग निंबाहेड़ा में पहुंचे और रात्रि में चत्तोड़ में वराजे। इसके पश्चात राजपुताना के अन्य स्थानो में आगमन व प्रस्थान का ववरण यह था :

१ मार्च १८८३ आगमन – चत्तोड़ – प्रस्थान ७ मार्च १८८३
८ मार्च १८८३ आगमन – रूपाहेली – प्रस्थान ८ मार्च १८८३
८ मार्च १८८३ आगमन – शाहपुरा – प्रस्थान २८ मई १८८३
२८ मई १८८३ आगमन – अजमेर – प्रस्थान २९ मई १८८३
२९ मई १८८३ आगमन – पाली – प्रस्थान ३० मई १८८३
३० मई १८८३ आगमन – रोहट – प्रस्थान ३१ मई १८८३
३१ मई १८८३ आगमन – जोधपुर – प्रस्थान १६ अक्तूबर १८८३
१७ अक्तूबर १८८३ आगमन – रोहट – प्रस्थान १८ अक्तूबर १८८३
१८ अक्तूबर १८८३ आगमन – पाली – प्रस्थान २० अक्तूबर १८८३
२१ अक्तूबर १८८३ आगमन – आबू – प्रस्थान २६ अक्तूबर १८८३
२७ अक्तूबर १८८३ आगमन – अजमेर – मृत्यु ३० अक्तूबर १८८३

सत्यार्थ प्रकाश का छपना प्रयाग में हुआ था। प्रेस में छपाई वषयक जो सुगमताये इस समय (सन १९४४) में हैं वह उस समय कदा प न थी। प्रेस का प्रबंध भी बहुत संतोषजनक न था। छपाई का काम बहुत था। कुछ अन्य लोगो का कार्य भी छपाई का होता था। ('ऋ ष दयानंद के पात्र और वज्ञापन' प्रथम भाग श्री पं डत भगवद्दत्त जी द्वारा सम्पादित – अक्तूबर सन १९७२ ई० प्रका शत के पत्र संख्या ३, ८, १०, ४४, ४६, ४७, ४८, ५०, ५१ – लेखक)। हाँ ऋग्वेद और यजुर्वेद भाष्य के मा सक अंक भी प्रेस से ही निकलते थे।

उदयपुर से चत्तोड़ तक उस समय रेल न थी। शाहपुरा से सबसे अ धक नज़दीक वाला रेलवे स्टेशन १५ मील से कम दूर नहीं। पाली से जोधपुर तक रेलवे न थी। निदान डाक की सुगमताये अब जैसी उस समय न थी। सत्यार्थप्रकाश का सन १८८४ ई० का संस्करण रॉयल साइज़ कागज़ २० x २६ में १० इंच और ६।। इंच आकार में कुल ६०६ पृष्ठों का है। ५९२

पृष्ठों में मूल सामग्री है। १४ पृष्ठों में वषय सू च व शुद् ध – अशुद् ध आदि के पन्ने हैं। दो नंबर ब्लेक फेस पैका (अर्थात पतले बारीक टाइप – लेखक) में अ धकांश ग्रन्थ है। बीच बीच में श्लोक आदि कुछ मोटे टाइप में हैं कुछ पृष्ठों को छोड़कर बाकी पृष्ठों में ३५ सतरे हैं। सम्पूर्ण ग्रन्थ २ हजार की संख्या में छपा था।

स्वामीजी को सन १८८३ ई० २९ सतमबर को जहर दिया गया था। इसी सन में ३० अक्तूबर को वह शरीर छोड़ गए थे। उनकी मृत्यु से समस्त आर्य जनता तथा प्रेस के प्रबंध पर वशेष रूप से अच्छा प्रभाव न पड़ा था। पहले बतलाया जा चूका है की सत्यार्थ प्रकाश की भू मका से स्पष्ट है की उसकी सामग्री सतमबर सन १८८२ ई० में ही तैयार कर दी गयी थी अतः उक्त प्रकार की आप त्तयों अथवा वर्तमान काल (सन १९४४ ई०) की सी सुगमताओ के न होने से सत्यार्थ प्रकाश ऐसा बड़ा ग्रन्थ स्वामीजी महाराज की देख रेख में उनके जीवन काल में पूरा पूरा न छप सका था। स्वामीजी महाराज के पत्र ('ऋ ष दयानंद के पत्र और वज्ञापन' प्रथम भाग श्री पं डत भगवद्दत्त जी द्वारा सम्पादित पत्र नं० ५१ – ल खत आश्विन बदी १३ संवत १९४० व० अर्थात २९ सतम्बर सन १८८३ – लेखक) से स्पष्ट है की उनके जीवनकाल में ईसाइयो से सम्बन्ध रखने वाला तेरहवा समुल्लास छप रहा था। सत्यार्थ प्रकाश में कुल १४ समुल्लास हैं और चौदवे के पश्चात कुछ पृष्ठ "स्वमानतामंतव्य प्रकाशः के हैं। सत्यार्थ प्रकाश की भू मका वाले समय अर्थात सतमबर सन १८८२ ई० से सतम्बर सन १८८३ ई० तक में कुल बारे समुल्लास छप सके थे। निदान स्वामीजी की बीमारी व मृत्यु के पश्चात अ धक से अ धक चार मास अर्थात सं १८८४ ई० के प्रारं भक भाग में प्रका शत हो गया होगा।

(सत्यार्थ प्रकाश वषयक भ्रम, लेखक महेश प्रसाद, मौलवी आ लम फाजिल)

उक्त बाते श्रीमान लेखक ने बहुत ही सुंदरता और स्पष्टता के साथ बताई हैं जिनसे ज्ञात होता है की, सत्यार्थ प्रकाश के पूर्वरार्ध और उत्तरार्ध के समुल्लास मह र्ष दयानंद जी की ही रचना थी, इन्हे बाद में कसी अन्य व्यक्ति ने नहीं जोड़ा, हाँ क्यों क राजा जी ने सत्यार्थ प्रकाश को छपवाने का जिम्मा लया था और उस समय आज के जैसी सुगमता नहीं थी, क्यों क जहाँ सत्यार्थ प्रकाश छप रहा था वो प्रयाग था, और वहां प्रबंध संतोषजनक भी न था, बहुत अ धक काम छपाई का प्रेस में होता था, और ऋग्वेद, यजुर्वेद भाष्य के अंक भी इसी प्रेस से छप रहे थे, इस कारण अपूर्ण ग्रन्थ प्रका शत हुआ, ले कन ऊपर ये भी बताया की स्वामी जी के पत्र से ज्ञात होता है की उनके जीवन काल में ही ईसाइयो से सम्बं धत १३वा समुल्लास छप रहा था और स्वामी जी की भू मका से भी स्पष्ट है की इस ग्रन्थ के पूर्वार्ध और उत्तरार्ध के भाग मलकर १४ समुल्लास और चौदवे समुल्लास पश्चात कुछ पृष्ठ स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश के हैं, अतः आक्षेपकर्ता का कथन की तेरहवा और चौदहवाँ समुल्लास, ऋ ष दयानंद की कृति नहीं, यह खं डत हो जाता है। हाँ ऋ ष की देख रेख में उनके जीवन काल में सत्यार्थ प्रकाश पूरा का पूरा न छप सका, ये बात ठीक वदित होती है।

अब हम आगे बढ़ते हैं, आक्षेपकर्ता का वचार है की ऋ ष क़ुरान और मुहम्मद साहब पर आक्षेप करते हुए, क़ुरान को जाहिल, असभ्य, मुर्ख, अल्पज्ञ और जंगली का लखा हुआ बताते हैं, ये गलत है।

यहाँ हम केवल वो बताएँगे जो ऋ ष ने क़ुरान को देख, समझ कर अपने वचार व्यक्त करे, पाठकगण स्वयं अवलोकन करे :

९०-निश्चय परवरदिगार तुम्हारा अल्लाह है जिस ने पैदा कया आसमानों और पृ थवी को बीच छः दिन के। फर करार पकड़ा ऊपर अर्श के, तदबीर करता है काम की।। -मं० ३। स० ११। सू० १०। आ० ३।।

(समीक्षक) आसमान आकाश एक और बिना बना अनादि है। उस का बनाना लखने से निश्चय हुआ क वह कुरानकर्त्ता पदार्थ वद्या को नहीं जानता था? क्या परमेश्वर के सामने छः दिन तक बनाना पड़ता है? तो जो 'हो मेरे हुक्म से और हो गया' जब कुरान में ऐसा लखा है फर छः दिन कभी नहीं लग सकते।। इससे छः दिन लगना झूठ है। जो वह व्यापक होता तो ऊपर अर्श के क्यों ठहरता? और जब काम की तदबीर करता है तो ठीक तुम्हारा खुदा मनुष्य के समान है क्यों क जो सर्वज्ञ है वह बैठा-बैठा क्या तदबीर करेगा? इस से वदित होता है क ईश्वर को न जानने वाले जंगली लोगों ने यह पुस्तक बनाया होगा।।९०।।

१०८-और वह जो लड़का, बस थे माँ बाप उस के ईमान वाले, बस डरे हम यह क पकड़े उन को सरकशी में और कुफ्र में।। यहां तक क पहुँचा जगह डूबने सूर्य्य की, पाया उसको डूबता था बीच चश्मे कीचड़ के ।। कहा उन ने ऐजुलकरनैन! निश्चय याजूज माजूज फसाद करने वाले हैं बीच पृ थवी के।। -मं० ४। स० १६। सू० १८। आ० ८०। ८६। ९४।।

(समीक्षक) भला! यह खुदा की कतनी बेसमझ है! शंका से डरा क लड़के के माँ बाप कहीं मेरे मार्ग से बहका कर उलटे न कर दिये जावें। यह कभी ईश्वर की बात नहीं हो सकती। अब आगे की अ वद्या की बात दे खये क इस कताब का बनाने वाला सूर्य्य को एक झील में रात्रि को डूबा जानता है, फर प्रातःकाल निकलता है। भला! सूर्य्य तो पृ थवी से बहुत बड़ा है। वह नदी वा झील वा समुद्र में कैसे डूब सकेगा? इस से यह वदित हुआ क कुरान के बनाने वाले को भूगोल खगोल की वद्या नहीं थी। जो होती तो ऐसी वद्या वरुद्ध बात क्यों लख देता । और इस पुस्तक को मानने वालों को भी वद्या नहीं है। जो होती तो ऐसी मथ्या बातों से युक्त पुस्तक को क्यों मानते? अब दे खये खुदा का अन्याय! आप ही पृ थवी को बनाने वाला राजा न्यायाधीश है और याजूज माजूज को पृ थवी में फसाद भी करने देता है। यह ईश्वरता की बात से वरुद्ध है। इस से ऐसी पुस्तक को जंगली लोग माना करते हैं; वद्वान् नहीं।।१०८।।

१२०-नहीं तू परन्तु आदमी मानिन्द हमारी बस ले आ कुछ निशानी जो है तू सच्चों से।। कहा यह ऊंटनी है वास्ते उस के पानी पीना है एक बार।। -मं० ५। स० १९। सू० २६। आ० १५४। १५५।।

(समीक्षक) भला! इस बात को कोई मान सकता है क पत्थर से ऊंटनी निकले! वे लोग जंगली थे क जिन्होंने इस बात को मान लया। और ऊंटनी की निशानी देनी केवल जंगली व्यवहार है; ईश्वरकृत नहीं। यदि यह कताब ईश्वरकृत होती तो ऐसी व्यर्थ बातें इस में न होतीं।।१२०।।

१२१-ऐे मूसा बात यह है क निश्चय मैं अल्लाह हूँ गा लब।। और डाल दे असा अपना, बस जब क देखा उस को हिलता था मानो क वह सांप है—ऐ मूसा मत डर, निश्चय नहीं डरते समीप मेरे पैगम्बर।। अल्लाह नहीं कोई माबूद परन्तु वह मा लक अर्श बड़े का।। यह क मत सरकशी करो ऊपर मेरे और चले आओ मेरे पास मुसलमान होकर।।

-मं० ५। स० १९। सू० २७। आ० ९। १०। २६। ३१।।

(समीक्षक) और भी दे खये अपने मुख आप अल्लाह बड़ा जबरदस्त बनता है। अपने मुख से अपनी प्रशंसा करना श्रेष्ठ पुरुष का भी काम नहीं; खुदा का क्योंकर हो सकता है? तभी तो इन्द्रजाल का लटका दिखला जंगली मनुष्यों को वश कर आप जंगलस्थ खुदा बन बैठा। ऐसी बात ईश्वर के पुस्तक में कभी नहीं हो सकती। यदि वह बड़े अर्श अर्थात् सातवें आसमान का मा लक है तो वह एकदेशी होने से ईश्वर ही नहीं हो सकता है। यदि सरकशी करना बुरा है तो खुदा और मुहम्मद साहेब ने अपनी स्तुति से पुस्तक क्यों भर दिये? मुहम्मद साहेब ने अनेकों को मारे इस से सरकशी हुई वा नहीं? यह कुरान पुनरुक्त और पूर्वापर वरुद्ध बातों से भरा हुआ है।।१२१।।

ऐसी ऐसी अनेक बाते क़ुरान में भरी पड़ी हैं, जिनपर ऋ ष ने आक्षेप कये, अब पाठक स्वयं जाने की क्या आकाश कोई वस्तु है जो फट जावे ? क्या तारे झड़ सकते हैं ? क्या पहाड़ चल सकते हैं ? क्या सूरज और चाँद टकरा सकते हैं ? क्या चाँद के टुकड़े हो सकते हैं ? आदि अनेको बातो पर ऋ ष ने आक्षेप करते हुए इन बातो को असभ्य, जंगली और मुर्ख व्यक्ति का ज्ञान बताया था।

अब ऋ ष ने आक्षेप में क्या गलत लखा, जब क ऋ ष तो क़ुरान की लखी कुछेक अच्छी और सच्ची बात को मुक्तकंठ से सत्य बात कहते हैं दे खये :

७३-मत फरो पृ थवी पर झगड़ा करते।। -मं० २। स० ८। सू० ७। आ० ७४।।

(समीक्षक) यह बात तो अच्छी है परन्तु इस से वपरीत दूसरे स्थानों में जिहाद करना का फरों को मारना भी लखा है। अब कहो यह पूर्वापर वरुद्ध नहीं है? इस से यह वदित होता है क जब मुहम्मद साहेब निर्बल हुए होंगे तब उन्होंने यह उपाय रचा होगा और जब सबल हुए होंगे तब झगड़ा मचाया होगा। इसी से ये बातें परस्पर वरुद्ध होने से दोनों सत्य नहीं हैं।।७३।।

३९-प्रश्न करते हैं तुझ से रजस्वला को कह वो अप वत्र हैं। पृथक् रहो ऋतु समय में उन के समीप मत जाओ जब तक क वे प वत्र न हों। जब नहा लेवें उन के पास उस स्थान से जाओ खुदा ने आज्ञा दी।। तुम्हारी बी वयां तुम्हारे लये खेतियां हैं बस जाओ जिस तरह चाहो अपने खेत में।। तुम को अल्लाह लगब (बेकार, व्यर्थ) शपथ में नहीं पकड़ता।।

-मं० १। स० २। सू० २। आ० २२२। २२३। २२४।।

(समीक्षक) जो यह रजस्वला का स्पर्श संग न करना लखा है वह अच्छी बात है। परन्तु जो यह स्त्रियों को खेती के तुल्य लखा और जैसा जिस तरह से चाहो जाओ यह मनुष्यों को

वषयी करने का कारण है। जो खुदा बेकार शपथ पर नहीं पकड़ता तो सब झूठ बोलेंगे शपथ तोडें़गे। इस से खुदा झूठ का प्रवर्त्तक होगा।।३९।।

१२४-और आज्ञा दी हम ने मनुष्य को साथ मा बाप के भलाई करना और जो झगड़ा करें तुझ से दोनों यह क शरीक लावे तू साथ मेरे उस वस्तु को, क नहीं वास्ते तेरे साथ उस के ज्ञान, बस मत कहा मान उन दोनों का, तर्फ मेरी है।। और अवश्य भेजा हम ने नूह को तर्फ कौम उस के क बस रहा बीच उन के हजार वर्ष परन्तु पचास वर्ष कम।। -मं० ५। स० २०। सू० २९। आ० ८। १४।।

(समीक्षक) माता- पता की सेवा करना अच्छा ही है जो खुदा के साथ शरीक करने के लये कहे तो उन का कहना न मानना यह भी ठीक है परन्तु यदि माता पता मथ्याभाषणादि करने की आज्ञा देवें तो क्या मान लेना चाहिये? इस लये यह बात आवमी अच्छी और आधी बुरी है। क्या नूह आदि पैगम्बरों ही को खुदा संसार में भेजता है तो अन्य जीवों को कौन भेजता है? यदि सब को वही भेजता है तो सभी पैगम्बर क्यों नहीं? और जो प्रथम मनुष्यों की हजार वर्ष की आयु होती थी तो अब क्यों नहीं होती? इस लये यह बात ठीक नहीं।।१२४।।

मह ष दयानंद तो सत्य के मानने वाले थे, इसी लए सदैव असत्य को त्यागने हेतु लोगो को समझाते रहते थे, सत्यार्थ प्रकाश में भी ऋ ष ने लखा है :

यद्य प में आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुआ और बस्ता हु तथा प जैसे इस देश के मत-मतांतरों की झूठी बातो का पक्षपात न कर यथासत्य प्रकाश करता हु वैसे ही दूसरे देशस्थ व मतोन्नतिवालो के साथ भी बर्तता हु।

(सत्यार्थ प्रकाश की भू मका – दयानंद)

अब देखो, ऋ ष ने जहाँ भी गलत और मथ्या बात दे ख उसका खंडन कया। अतः लेखक का ये आक्षेप की ऋ ष ने बेवजह क़ुरान पर आरोप लगाये खं डत होता है।

इसी वषय पर अगले भाग में कुरान की मूल प्रति में छेड़ छाड़, व्याकरण की गड़बड़ी, क़ुरान का वैज्ञानिक स्तर और मह ष दयानंद द्वारा वेद प्रतिपादित वज्ञानं पर वचार कया जाएगा।

““सत्यार्थ प्रकाश : समीक्षा की समीक्षा का जवाब PART 11”

OCTOBER 24, 2015 LEAVE A COMMENT

“नौवे अध्याय का जवाब पार्ट 2”

अब आक्षेपकर्ता कहते हैं की क़ुरान में पछले १४०० साल से कसी अरबी वद्वान ने कोई गलती नहीं पकड़ी, भाषा संशोधन की आवश्यकता ही महसूस न हुई, इस दावे को भी जरा ध्यान से समझना चाहिए, दे खये, अरबी के एक बहुत बड़े वद्वान हुए हैं, उनका नाम था

“जलाल अल-दीन अल-सुयूती” इन्हे “इब्न अल-क़ुतुब” अर्थात “ कताब का बेटा” नाम से भी जाना जाता है, आप मस्र के धा र्मक वद्वान, कानूनी वशेषज्ञ और शक्षक, तथा मध्य युग में इस्लामी धर्मशास्त्र वषयों पर वस्तृत तथा व वधतापूर्ण बेबाकी से लखने वाले अरब लेखकों में से एक थे। आपको काहिरा में बेबार्स की मस्जिद में १४६२ में नियुक्त कया गया था। आपने जगप्र सद्द रचना “द एतेक़ान” के दूसरे भाग में लगभग १०० पृष्ठों का निर्माण कया है, हम वहीँ से कुछ कुरान पर की गयी टिप्पण्यो से अवगत करवाते हैं, दे खये :

“द इत्तेकान” पुस्तक में “क़ुरान में मौजूद वदेशी शब्द” जो अत्यंत कठिन हैं, तथा शास्त्रीय अरबी भाषा की शब्दावली और इन अरबी शब्दों की अ भव्यक्ति भी अरब में मौजूद नहीं थी, क़ुरान में मौजूद भाषाओ की व वधता के चलते ही, वषय को समझाते हुए शफी लखते हैं :

“No one can have a comprehensive knowledge of the language except a prophet” (Itqan II: p 106)

“भाषा का व्यापक ज्ञान नबी के अतिरिक्त और कसी को नहीं हो सकता”

अब यहाँ कुछ सवाल उतपन्न होते हैं, जब क़ुरान में ही अल्लाह मयां कहते हैं की ये क़ुरान सरल अरबी में दिया जाता है ता क अरब वाले इससे शक्षा प्राप्त कर सके (क़ुरान ४४:५९), तो जब क़ुरान में मौजूद वदेशी शब्द, या ऐसे शब्द जिनका ज्ञान खुद अरब वालो को नहीं, यहाँ तक क मुहम्मद साहब के सा थयो तथा रिश्तेदारो तक को नहीं पता था, तब ये क़ुरान कैसे सरलता से अरब के मुस्लिम बंधू समझ सकेंगे ? शफी खुद मान रहे की जो कुरान में वदेशी शब्द आये हैं, उनकी जानकारी मुहम्मद साहब के अतिरिक्त और कसी को नहीं, तब ऐसे में यदि अरब के जानकार मुस्लिम इस पुस्तक का ज्ञान न समझ पाये तो अरब से बाहर के लोग जो अरबी भाषा जानते तक नहीं, वो कैसे समझ पाएंगे ? क्या इससे सद्ध नहीं होता की क़ुरान केवल अरब वालो के लए ही थी ?

इस वषय पर “दी इत्तेकान” क्या कहते है, वह भी दे खये :

“It is utterly inadmissible for the Qur’an to be read in languages other than Arabic, whether the reader masters the language or not, during the prayer time or at other times, lest the inimitability of the Qur’an is lost.

यह पूरी तरसे से नकारने योग्य है की क़ुरान को अरबी भाषा के अतिरिक्त अन्य कसी भाषा या भाषाओ में पढ़ा जाए। चाहे पढ़ने वाला भले ही भाषाओ का वद्वान हो या न हो, चाहे प्रार्थना के समय पढ़ी जाए व कसी अन्य समय, यदि क़ुरान को अरबी भाषा के अतिरिक्त अन्य कसी भी भाषा में पढ़ा जाए तो वो अनुकरणीय नहीं है, अर्थात अमान्य है।

यही कारण है की गैर-अरब व्यक्ति, क़ुरानी आयतो को केवल रटते हैं, वो भी बिना समझे क्यों क ये अरबी में पढ़ना और बोलना ही मान्य है। इसी वषय पर बिलकुल यही वचार प्रकट करने वाले एक और इस्लामी वद्वान डॉ शालाबी अपनी पुस्तक “द हिस्ट्री ऑफ़ इस्ला मक लॉ” पृष्ठ ९७ पर इसी बात को लखते हुए कलम आगे चलाते हैं की :

"If the Qur'an is translated into a non-Arabic language, it will lose its eloquent inimitability. The inimitability is intended for itself. It is permissible to translate the meaning without being literal."

यदि क़ुरान को अरबी भाषा के अतिरिक्त कसी अन्य भाषा में भाषांतरित (भाष्य) कया जाए तो, क़ुरान अपनी मूल भाषाई सुंदरता, खो देगी, इसका अनुकरण केवल केवल अरबी भाषा ही है। ये भाष्य कुछ ऐसा ही होगा जैसे मूल शब्द के सटीक अर्थ रहित भाषांतर (भाष्य) की अनुमति होती है।

अब ऐसे में, आक्षेपकर्ता का कहना की मह ष दयानंद को अरबी का ज्ञान नहीं था, इस लए जो सत्यार्थ प्रकाश में क़ुरान पर आक्षेप कये वो गलत हैं, तो मह ष पर दोषारोपण करने से पहले, कृपया उन भाष्यकारों पर आरोप खड़े करे, जिन्होंने क़ुरान का हिंदी में भाष्य कया, वैसे सभी जानते हैं की क़ुरान का लगभग दुनिया की सभी भाषाओ में अनुवाद कया जा रहा है, ले कन इस्लामी वद्वानो की धारणा है की यदि क़ुरान को भाषांतर कया तो इसकी मूल भाषाई सुंदरता खत्म हो जायेगी, इस लए इसका भाष्य नहीं कया जा सकता, वहीँ क़ुरान में मौजूद शब्द भी ऐसे हैं जिन्हे खुद अरब के लोग नहीं जानते, न ही वो शब्द अरबी व्याकरण में मलते हैं, तब कैसे उनका अर्थ भाषांतर कया जाएगा ? इसका सीधा सीधा अर्थ तो यही है की क़ुरान का भाष्य नहीं कया जा सकता क्यों क ये कुरान केवल अरब देश के लए ही थी, ले कन जो इसका भाषांतर कर रहे शायद वो क़ुरान की अन्तर्भावना और अल्लाह के ज्ञान से खलवाड़ कर रहे हैं, फर भी आक्षेपकर्ता मह ष दयानंद को ही दोष देते हैं, क्या ये पूर्वाग्रह से ग्र सत मान सकता नहीं ?

अब जो कहते हैं की क़ुरान में व्याकरण गलती और आज तक फेरबदल नहीं हुआ उसपर वचार करते हैं :

डॉ अहमद शालाबी, इस्लामी इतिहास और सभ्यता के वद्वान प्रोफेसर अपनी पुस्तक "दी हिस्ट्री ऑफ़ इस्ला मक लॉ" पृष्ठ ४३ पर क्या लखते हैं उसे दे खये :

"The Qur'an was written in the Kufi script without diacritical points, vocalization or literary productions. No distinction was made between such words as 'slaves', 'a slave', and 'at' or 'to have', or between 'to trick' and 'to deceive each other', or between 'to investigate' or 'to make sure'. Because of the Arab skill in Arabic language their reading was precise. Later when non-Arabs embraced Islam, errors began to appear in the reading of the Qur'an when those non-Arabs and other Arabs whose language was corrupted, read it. The incorrect reading changed the meaning sometimes."

क़ुरान मूलतया कूफी ल प में लखा गया था जो स्वरों के व शष्ट चन्ह (बिन्दुओ), स्वरोच्चारण तथा साहित्यिक प्रस्तुतियों से रहित था। "गुलामो", "एक गुलाम", …… आदि शब्दों में कोई भेद, अंतर नहीं रखा गया था। क्यों क एक अरब व्यक्ति तो अरबी पढ़ने में कौशल प्राप्त था इस लए सटीकता से पढ़ लेता था। ले कन जब अरब के बाहर के लोगो ने इस्लाम स्वीकार कया, और वे अरब के लोग जिनकी अरबी ठीक न थी इन्होने मूल क़ुरान का पाठ कया तब क़ुरान में वसंगतियां उत्पन्न हुई। गलत तरीके से पढ़ने के कारण कभी कभी कुरान के मूल पाठ का अर्थ भी बदल जाता था।

बिलकुल यही वक्तव्य ताहा हुसैन, “ताहा हुसैन” पृष्ठ १४३ अनवर जमाल जुन्दी द्वारा में लिखित पाया जाता है।

इसी प्रसंग में डॉ अहमद उन व्यक्तियों के नाम बताते हैं जिन्होंने स्वरोच्चारण और विशिष्ट चिन्ह (बिन्दुओ) का आविष्कार किया और इन्हे मुहम्मद साहब की मृयुपरांत कई वर्षो बाद क़ुरानी लेख में प्रयुक्त किया जैसे की अबु अल-अस्वद अल दुआली, नस्र इब्न असीम और अल खलील इब्न अहमद। इसी पृष्ठ पर और विस्तार से समझाते हुए वह लिखते हैं की

“इन विशिष्ट चिन्ह (बिन्दुओ) के बिना, कोई भी व्यक्ति सूरह अत-तौबा की आयत ३ का अर्थ कुछ इस प्रकार समझता है “God is done with the idolaters and His apostle— free from obligation to the idolaters and His apostle” जब कि इसका सही अर्थ है “God and His apostle are done with the idolaters—free from further obligation to the idolaters”

अब यहाँ सवाल उठता है की यदि क़ुरान सरल अरबी और शुद्ध व्याकरण में उतरी तो इतनी विसंगतियां क्यों उत्पन्न हुई ? इस बात को समझने के लिए एक उदाहरण देखते हैं, अरबी भाषा में “ब” लिखने हेतु विशिष्ट चिन्ह (बिंदु) होते हैं यदि हम इन विशिष्ट चिन्ह (बिन्दुओ) को ऊपर, नीचे करते हुए बदल दे तो हमें तीन अलग अलग शब्द मिलेंगे “त” “ब” और “थ”, अब सोचिये यदि कोई अरबी विद्यार्थी बिना विशिष्ट चिन्ह (बिन्दुओ) को प्रयोग किये अरबी का पेपर दे दे, तो शिक्षक उसके लिखे को पढ़ और समझ पायेगा ? कितने नंबर दे पायेगा वो शिक्षक उस विद्यार्थी को ?

अब पाठकगण स्वयं विचार की जब अरबी भाषा विशिष्ट चिन्ह (बिन्दुओ) के पढ़ी और समझी ही नहीं जा सकती, और मूल क़ुरान जो थी वो विशिष्ट चिन्ह (बिन्दुओ) के बिना ही लिखी गयी थी, ये सभी मुस्लिम आलिम इस बात को भली भाँती जानते हैं, ये एक ऐतिहासिक सच्चाई है जो बिना किसी अपवाद के स्वीकार की जाती है, तो वे लोग जिन्होंने विशिष्ट चिन्ह (बिन्दुओ) को क़ुरान में प्रयुक्त किया जिसके जरिये ही आज क़ुरान समझा जा सकता है, तब ये कार्य करने को क्या अल्लाह मियां ने आदेश दिया था ? यदि नहीं तो ये क़ुरान की मूल लेख से खिलवाड़ है, और इसे मिलावट ही क्यों नहीं कहा जाएगा ?

यहाँ एक शंका और भी उतपन्न होती है की जो क़ुरान लिखा गया जो आज मौजूद है, क्या वो सच में वही क़ुरान का ज्ञान है जिसे अल्लाह मियां ने पैगम्बर मुहम्मद साहब पर जिब्रील नामी फरिशते द्वारा अवतरित किया था ? ये शंका इसलिए उत्पन्न होती है क्योंकि सही बुखारी में क़ुरान को दुबारा लिखवाने का आदेश अबु बकर साहब द्वारा ४ लोगो को दिया गया था जिनमे से एक ज़ैद बिन थबित अल अंसारी थे जिन्होंने बुखारी में जो फ़रमाया है, वो हमारे कथन की पुष्टि करता है, देखिये :

ज़ैद बिन थबित अल अंसारी ये उनमे से एक थे जिन्हे अबु बकर द्वारा पवित्र इल्हाम (क़ुरान) को लिखने का दायित्व सौंपा गया था, इन्होने बताया की यममा जंग में लड़ाकों की भारी क्षति हुई थी, अधिकांशतः वो लड़ाके “कुर्रा” भी मृत्यु को प्राप्त हुए जो ह्रदय से क़ुरान को जानते थे। उन्होंने ये भी बताया की इसी लड़ाई के दौरान कुरान का अधिकांश हिस्सा खो गया था।

सही बुखारी जिल्द ६ कताब ६० हदीस २०१

पाठकगण, यदि लखते जाए, तो अनेको प्रमाण मौजूद हैं, ले कन इतने से भी पाठकगण आराम से समझ सकते हैं की मूल क़ुरान का व्याकरण कतना कमजोर था, जिसे अनेको पुर्शार्थी मनुष्यो ने ठीक कया, क़ुरान में मौजूद अनेको वदेशी भाषाए इस बात का पुख्ता सबूत है की क़ुरान में भी मलावट हुई है, क्यों क अल्लाह मयां क़ुरान में स्पष्ट कहते हैं की क़ुरान को वशुद्ध सरल अरबी भाषा में दिया है ता क अरब के लोग समझे, ले कन वहीँ इस क़ुरान में अनेको वदेशी भाषाओ के शब्द स्पष्ट रूप से मौजूद हैं, तब यदि ये मलावट नहीं तो क्या अल्लाह मयां क़ुरान में झूठ बोले ? अल्लाह मयां क्यों झूठ बोलेंगे, ये मलावट अवश्य ही शैतानो के बन्दों ने की करवाई है। हम चाहेंगे की ऋ ष पर आक्षेप करने की अपेक्षा आक्षेपकर्ता गुप्ता जी, स्वयं संज्ञान लेते हुए, इस वषय पर भी मुस्लिम बंधुओ को आगाह करे।

आक्षेपकर्ता का कहना है की क़ुरान में इतने उच्च और उत्तम मूल्य प्रतिपादित कये हैं जो कोई छ ल, कपटी और स्वार्थी व्यक्ति अपनी जंगली, अल्पज्ञ और मतलब सद् ध के लए नहीं कर सकता, उसके लए वे कुछ उदहारण भी देते हैं जैसे :

बेहयाई के करीब तक न जाओ चाहे वह जाहिर हो या पोशीदा (कुरान ६:१५२)

अब पाठकगण स्वयं देखे क़ुरान कतने उच्तम मूल्य स्था पत करती है :

और (पहले से) ववाहित स्त्रियां भी (तुम्हारे लए हराम हैं) सवाय उन स्त्रियों के जो (लौंडी के रूप में कैद हो कर) तुम्हारे अ धकार में आ जाएँ। अल्लाह का यह आदेश तुम्हारे लए अनिवार्य (फर्ज) है और जो इन (ऊपर बताई गयी स्त्रियों) के अतिरिक्त हो, वे (निकाह के बाद) तुम्हारे लए हलाल (वैध) हैं।

(क़ुरान ४:२५)

अब दे खये कतना मानवो के लए स्त्रियों का कतना उच्च मूल्य स्था पत कया गया है। सभी महिला जो शादीशुदा हो वो हराम हैं मगर वो जो गुलाम (लौंडी) यानी मुशरिक, का फ़र, आदि व्यक्तियों पर कये गए हमलो, युद्धों के बाद जो उन का फरो, मुशरिकों की शादीशुदा महिलाये हैं, वो वैध यानी हलाल हैं। सीधा सीधा ग णत सम झए, जो मुस्लिम महिला शादीशुदा हो केवल वही हराम है, बाकी का फ़र, मुशरिक आदि की शादी शुदा महिला भी हलाल (वैध) हैं, तो बाकी दुनिया में और कौन महिला बची जो शादीशुदा हराम हो ?

ये आयत क्यों उतरी, इस पर भी थोड़ा वचार करे, दे खये :

Abu Sa'id al-Khudri (Allah her pleased with him) reported that at the Battle of Hanain Allah's Messenger (may peace be upon him) sent an army to Autas and encountered the enemy and fought with them. Having overcome them and taken them captives, the Companions of Allah's Messenger (may peace te upon him) seemed to refrain from having intercourse with captive women because of their husbands being polytheists. Then Allah, Most High, sent down regarding that:" And women already married, except those whom your

right hands possess (iv. 24)" (i. e. they were lawful for them when their 'Idda period came to an end). [Sahih Muslim, Book 8, Hadith 3432]

अबु सईद अल खुदरी ने बताया की हुनेन की जंग में रसूलल्लाह ने औतास में फ़ौज भेजी, जो दुश्मन का सामना करने के लए जंग लड़े। यहाँ तक की वो दुश्मन पर भारी पड़े और उन्हें बंदी बना लया, रसूल्ललाह के साथी, बंदी औरतो के साथ सम्भोग करने से परहेज कर रहे थे क्यों क वो औरते बहुदेववादी पुरषो की पत्निया थी। तब अल्लाह जो सर्वोच्च है, इस वषय पर आयत नाज़िल की :

ववाहित स्त्रियां भी (तुम्हारे लए हराम हैं) सवाय उन स्त्रियों के जो (लौंडी के रूप में कैद हो कर) तुम्हारे अ धकार में आ जाएँ।

सही मुस्लिम – कताब 8 हदीस 3432

अब स्वयं सो चये, क्या बहुदेववादी लोगो को स्वतंत्रता नहीं की वो अपनी संस्कृति और सभ्यता अनुसार अपने देवी देवताओ की पूजा कर सके ? क्या बहुदेववादियों से जंग केवल इसी लए नहीं की गयी की वो अल्लाह और रसूल को नहीं मान कर अपनी संस्कृति का पालन कर रहे थे ? क्या इस्लाम के अनुसार कोई अपनी संस्कृति का पालन करे तो वो गुनाह है ? क्या केवल इस लए एक महिला की अस्मत आबरू बर्बाद करना जायज़ है की वो अपनी संस्कृति अनुसार अपने देवी देवताओ की पूजा कर रही है ? क्या ये मानवीय संस्कृति और सभ्यता, तथा पूजा उपासना की स्वतंत्रता को नेस्तनाबूद करने का गुनाह नहीं ? क्या ये कम बेहयाई है जिसको अल्लाह मयां ने करने को आयत नाजिल की, जब क मुहम्मद साहब के साथ ये सब नहीं करना चाहते थे ?

मह ष दयानंद ने क्या ही गलत आक्षेप लगाया की ये जंगली सभ्यता और मूर्खो की बनाई पुस्तक है, क्या मुहम्मद साहब अल्लाह से ऐसी आयात नाजिल करवा सकते हैं, जिसमे खुलेआम और बेहयाई और बलात्कार की शक्षा का स्पष्ट उदहारण हो ? शायद इसी लए मह ष दयानंद ने इस कताब को जंगली और असभ्य लोगो की कृति बताया जो अपनी कामवासना को शांत करने हेतु अपने मतलब और स्वार्थ की पूर्ति के लए रची गयी, इसमें मुहम्मद साहब का नाम लेकर, ऐसी बात गढ़ी गयी है, ये मुहम्मद साहब की ओरिजिनल रचना नहीं, ऐसा प्रतीत होता है।

अब आपक्षेपकर्ता ने जो क़ुरान से वज्ञानं की आयत दिखाई जरा उसे भी नकद हाथ लेते हैं :

और सूर्य वह अपने ठिकाने की तरफ चला जा रहा है (क़ुरान ३६:३८)

दे खये आक्षेपकर्ता का कहना की क़ुरान में वज्ञानं है, यहाँ बताया की सूर्य अपने ठिकाने की तरफ चला जा रहा है, जब क हम जानते हैं की सूर्य कहीं आता जाता नहीं, ये तो धरती घूमती है इस लए ऐसा प्रतीत होता है, बाकी सूर्य सभी ग्रहो को अपने आकर्षण से बांधे रखता है और स्वयं भी घूमता है, तथा अनेको ग्रहो को भी अपनी धुरी पर घुमाता है, इसके साथ साथ अपनी अपनी कक्षा में सभी ग्रह घूमते हैं, पहले भी बताया की सूर्य अपनी धुरी पर तो घूमता ही है साथ अपनी कक्षा में भी घूमता है, जो सूर्य अपनी कक्षा में न घूमे तो एक रा श

से दूसरे रा श में नहीं जा सकता, और इसी प्रकार ग्रह भी अपनी धुरी पर घूमते हुए, सूर्य की परिक्रमा करते हैं, परन्तु सौरमंडल के केंद्र में सूर्य है अतः वो कसी अन्य ग्रह की परिक्रमा नहीं लगाता, हाँ सम्पूर्ण सौरमंडल, आकाशगंगा का गांगेय वर्ष पूर्ण करने हेतु परिक्रमा करता है, इसी को आक्षेपकर्ता न समझकर, सूर्य को अन्य ग्रहो का परिक्रमा करने वाला बताते हैं, जो अत्यंत हास्यास्पद है, ठीक वैसे ही जैसे क़ुरान में सूर्य का अपने ठिकाने की और जाना, आइये दिखाते हैं सूर्य अपने नियत ठिकाने की और कहाँ जा रहा है, दे खये :

अबु धार ने बताया क : पैगम्बर साहब ने मुझसे पूछा "क्या तुम जानते हो सूर्यास्त के समय सूरज कहाँ को जाता है ? मैंने कहा अल्लाह और रसूल ही बेहतर जानते हैं। तब पैगमबर साहब बोले ये (सूर्य) अल्लाह के संघासन के नीचे तक जाकर यात्रा करता है, और दंडवत प्रणाम करता है, और सूर्योदय पर निकलने की अनुमति मांगता है, अनुमति मलने पर सूर्योदय में सूर्य दिखाई देता है, ले कन एक दिन ऐसा आएगा जब सूर्य दंडवत प्रणाम करेगा (क्षमा याचना करेगा) ले कन उसका प्रणाम स्वीकार न कया जाएगा, सूर्य अपने नियत ठिकाने पर जाने की अनुमति मांगेगा, पर उसे अनुमति न मलेगी, और उसे (सूर्य) को आदेश दिया जाएगा की जहाँ तू छुपता है (पश्चिम में) वहां से उगेगा (सूर्योदय) यानी पश्चिम से सूर्योदय होगा। और यही अल्लाह की उस आयत की व्याख्या है :

और सूर्य वह अपने ठिकाने की तरफ चला जा रहा है (क़ुरान ३६:३८)

[सही बुखारी जिल्द 4, कताब 54, हदीस 421]

अब दे खये, क्या वज्ञानं और वैज्ञानिकीकरण क़ुरान में प्रस्तुत है, जिसको पूर्ण वज्ञानं आक्षेपकर्ता बता रहे, ये तो सद्ध है की सूर्य कहीं आता जाता नहीं, फर भी क़ुरान में ऐसा बताया गया की सूर्य अल्लाह मयां के संघासन के नीचे छुप जाता है, और दुबारा निकलने के लए क्षमा याचना और दंडवत प्रणाम करता है, क्या सूर्य कोई सजीव वस्तु है जो दंडवत प्रणाम करेगा ? और सूरज पश्चिम से निकलेगा, ये भी असंभव है क्यों क सूरज तो अपनी कक्षा में ही घूर्णन कर रहा ऐसे ही पृथ्वी करती है, पता नहीं ये आयत कैसे क़ुरान में दर्ज की गयी, ये खुदाई आयत तो नहीं, अवश्य ही कोई जंगली और असभ्य पुरुषो द्वारा क़ुरान में मलावट की गयी है, ऋ ष का ये दावा बिलकुल सत्य है, अब क़ुरान की कुछ और वज्ञनिक आयतो का दर्शन करते हैं, दे खये :

"क़ुरान का वज्ञानं हम दिखाते हैं जरा गौर से दे खये :

1. अल्लाह मयां तो क़ुरान में चाँद को टेढ़ी टहनी बनाना जानता है :

और रहा चन्द्रमा, तो उसकी नियति हमने मंज़िलों के क्रम में रखी, यहाँ तक क वह फर खजूर की पूरानी टेढ़ी टहनी के सदृश हो जाता है (क़ुरआन सूरह या-सीन ३६ आयत ३९)

क्या चाँद कभी अपने गोलाकार स्वरुप को छोड़ता है ? क्या अल्लाह मयां नहीं जानते की ये केवल परिक्रमा के कारण होता है ?

2. सूरज चाँद के मुकाबले तारे अ धक नजदीक हैं :

और (चाँद सूरज तारे के) तुलूउ व (गुरूब) के मक़ामात का भी मा लक है हम ही ने नीचे वाले आसमान को तारों की आरइश (जगमगाहट) से आरास्ता कया। (सूरह अस्साफ़्फ़ात ३७ आयत ६)

क्या अल्लाह मया भूल गए की सूरज से लाखो करोडो प्रकाश वर्ष की दूरी पर तारे स्थित हैं ?

3. क़ुरान के मुताबिक सात ग्रह :

ख़ुदा ही तो है जिसने सात आसमान पैदा कए और उन्हीं के बराबर ज़मीन को भी उनमें ख़ुदा का हुक्म नाज़िल होता रहता है – ता क तुम लोग जान लो क ख़ुदा हर चीज़ पर कादिर है और बेशक ख़ुदा अपने इल्म से हर चीज़ पर हावी है। (सूरह अत तलाक़ ६५ आयत १२)

क्या सात आसमान और उन्ही के बराबर सात ही ग्रह हैं ? क्या खुदा को अस्ट्रोनॉमर जितना ज्ञान भी नहीं की आठ ग्रह और पांच ड्वार्फ प्लेनेट होते हैं।

4. शैतान को मारने के लए तारो को शूटिंग मसाइल बनाना भी अल्लाह मया की ही करामात है।

और हमने नीचे वाले (पहले) आसमान को (तारों के) चराग़ों से ज़ीनत दी है और हमने उनको शैतानों के मारने का आला बनाया और हमने उनके लए दहकती हुई आग का अज़ाब तैयार कर रखा है। (सूरह अल-मुल्क ६७ आयत ५)

मगर जो (शैतान शाज़ व नादिर फरिश्तों की) कोई बात उचक ले भागता है तो आग का दहकता हुआ तीर उसका पीछा करता है (सूरह सूरह अस्साफ़्फ़ात ३७ आयत १०)

क्या अल्लाह को तारो और उल्का पंडो में अंतर नहीं पता जो तारो को शूटिंग मसाइल बना दिया ता क शैतान मारे जावे ? और उल्का पंड जो है वो धरती के वायुमंडल में घुसने वाली कोई भी वस्तु को घर्षण से ध्वस्त कर देती है जो जल्दी हुई गरती है ये सामान्य व्यक्ति भी जानते हैं इसको शैतान को मारने वाले मसाइल बनाने का वज्ञानं खुद अल्लाह मयां तक ही सी मत रहा गया।"

इसके अतिरिक्त पूरी कुरान में कहीं भी नहीं लखा की सूर्य, चन्द्र पृथ्वी आदि ग्रह, अपनी धुरी पर घूमते हैं, अपनी अपनी कक्षा में सौरमंडल की परिक्रमा करते हैं, न ही कही भी यह बताया की सौरमंडल क्या है, आकाशगंगा क्या है, ब्रह्माण्ड क्या है, कहीं भी ऐसा कोई जिक्र नहीं, क़ुरान में केवल धरती, सूर्य और चन्द्रमा का ही ववरण है, न ही आकाशगंगा, न अनेको ग्रहो का कोई वर्णन है, अतः यह सद्ध है की क़ुरान का बनाने वाला खगोल वद्या को नहीं जानता था, इसी लए मह र्ष दयानंद ने सत्यार्थ प्रकाश में क़ुरान की खगोल वद्या पर आक्षेप प्रकट कये। वहीँ ऋ ष ने सत्यार्थ प्रकाश में ही वेदो से प्रमाण बतलाये हैं की पृथ्वी सूर्य की प्र क्रमा करती है, सूर्य अपने आकर्षण से सभी ग्रहो को बांधे रखता है, सभी ग्रह सूर्य की प्र क्रमा करते हैं, और सूर्य भी अपनी कक्षा का चक्कर लगाता है, कन्तु कसी ग्रह (लोक) का चककर नहीं

लगाता, क्यों क सूर्य सौरमंडल के केंद्र में है, और सबसे बड़ा होने से ये सम्भव भी नहीं, ले कन फर भी आक्षेपकर्ता का बौद् धक दिवा लयापन इस सत्यता को स्वीकार नहीं करता, हम पुनः दिखाते हैं, दे खये :

स दाधार पृ थवीमुत द्याम् ।। यह यजुर्वेद का वचन है।

जो पृ थव्यादि प्रकाशरहित लोकालोकान्तर पदार्थ तथा सूर्य्यादि प्रकाशसहित लोक और पदार्थों का रचन धारण परमात्मा करता है। जो सब में व्यापक हो रहा है, वही सब जगत् का कर्त्ता और धारण करने वाला है।

(प्रश्न) पृ थव्यादि लोक घूमते हैं वा स्थिर?

(उत्तर) घूमते हैं।

(प्रश्न) कतने ही लोग कहते हैं क सूर्य्य घूमता है और पृ थवी नहीं घूमती। दूसरे कहते हैं क पृ थवी घूमती है सूर्य्य नहीं घूमता। इसमें सत्य क्या माना जाय?

(उत्तर) ये दोनों आधे झूठे हैं क्यों क वेद में लखा है क-

आयं गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः । पतरं च प्रयन्त्स्वः।।

-यजुः० अ० ३। मं० ६।।

अर्थात् यह भूगोल जल के सहित सूर्य्य के चारों ओर घूमता जाता है इस लये भू म घूमा करती है।

आ कृष्णेन रजसा वत्तर्मानो निवेशायन्नमतृं मर्त्यं च ।

हिरण्ययेन स वता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ।।

-यजुः० अ० ३३। मं० ४३।।

जो स वता अर्थात् सूर्य्य वर्षादि का कर्त्ता, प्रकाशस्वरूप, तेजोमय, रमणीयस्वरूप के साथ वर्त्तमान; सब प्राणी अप्रा णयों में अमृतरूप वृष्टि वा करण द्वारा अमृत का प्रवेश करा और सब मूर्तिमान् द्रव्यों को दिखलाता हुआ सब लोकों के साथ आकर्षण गुण से सह वर्त्तमान; अपनी परि ध में घूमता रहता है कन्तु कसी लोक के चारों ओर नहीं घूमता। वैसे ही एक-एक ब्रह्माण्ड में एक सूर्य्य प्रकाशक और दूसरे सब लोकलोकान्तर प्रकाश्य हैं। जैसे-

दि व सोमो अ ध श्रतः।। -अथर्व० कां० १४। अनु० १। मं० १।।

जैसे यह चन्द्रलोक सूर्य्य से प्रका शत होता है वैसे ही पृ थव्यादि लोक भी सूर्य्य के प्रकाश ही से प्रका शत होते हैं। परन्तु रात और दिन सर्वदा वर्त्तमान रहते हैं क्यों क पृ थव्यादि लोक घूम कर जितना भाग सूर्य के सामने आता है उतने में दिन और जितना पृष्ठ में अर्थात् आड़

में होता जाता है उतने में रात। अर्थात् उदय, अस्त, सन्ध्या, मध्याह्न, मध्यरात्रि आदि जितने कालावयव हैं वे देशदेशान्तरों में सदा वर्त्तमान रहते हैं अर्थात् जब आर्य्यावर्त्त में सूर्योदय होता है उस समय पाताल अर्थात् 'अमेरिका' में अस्त होता है और जब आर्य्यावर्त्त में अस्त होता है तब पाताल देश में उदय होता है। जब आर्य्यावर्त्त में मध्य दिन वा मध्य रात है उसी समय पाताल देश में मध्य रात और मध्य दिन रहता है। जो लोग कहते हैं क सूर्य घूमता और पृ थवी नहीं घूमती वे सब अज्ञ हैं। क्यों क जो ऐसा होता तो कई सहस्र वर्ष के दिन और रात होते। अर्थात् सूर्य का नाम (ब्रध्नः) है। यह पृ थवी से लाखों गुणा बड़ा और क्रोड़ों कोश दूर है। जैसे राई के सामने पहाड़ घूमे तो बहुत देर लगती और राई के घूमने में बहुत समय नहीं लगता वैसे ही पृ थवी के घूमने से यथायोग्य दिन रात होते हैं; सूर्य के घूमने से नहीं। जो सूर्य को स्थिर कहते हैं वे भी ज्योति र्वद्या वत् नहीं। क्यों क यदि सूर्य न घूमता होता तो एक रा श स्थान से दूसरी रा श अर्थात् स्थान को प्राप्त न होता। और गुरु पदार्थ वना घूमे आकाश में नियत स्थान पर कभी नहीं रह सकता। और जो जैनी कहते हैं क पृ थवी घूमती नहीं कन्तु नीचे-नीचे चली जाती है और दो सूर्य और दो चन्द्र केवल जम्बूद्वीप में बतलाते हैं वे तो गहरी भांग के नशे में निमग्न हैं। क्यों? जो नीचे-नीचे चली जाती तो चारों ओर वायु के चक्र न बनने से पृ थवी छिन्न भन्न होती और निम्न स्थलों में रहने वालों को वायु का स्पर्श न होता। नीचे वालों को अ धक होता और एक सी वायु की गति होती। दो सूर्य चन्द्र होते तो रात और कृष्णपक्ष का होना ही नष्ट भ्रष्ट होता है। इस लये एक भू म के पास एक चन्द्र, और अनेक चन्द्र, अनेक भू मयों के मध्य में एक सूर्य रहता है।

(सत्यार्थ प्रकाश, अष्टम समुल्लास)

यहाँ वज्ञानं का कतना सुंदर प्रस्तुतिकरण मह र्ष दयानंद ने कया की आज तक ये सब बाते सत्य निकलती हैं, ले कन जो पूर्वाग्रही मान सकता से ग्र सत हैं, उनको सत्य नकारने की आदत बनी रहती है, चाहे कतना ही सच्चाई समझाते रहो।

इसके आगे, पुनः पुनराक्तिदोष आक्षेपकर्ता ने प्रकट कये हैं, जिनका निराकरण पूर्व के लेख में हो गया और आगे के लेख में और हो जाएगा।

"सत्यार्थ प्रकाश : समीक्षा की समीक्षा का जवाब PART 12

OCTOBER 24, 2015 LEAVE A COMMENT

"दसवे अध्याय का जवाब पार्ट 1"

सत्यार्थ प्रकाश : समीक्षा की समीक्षा पुस्तक के इस अध्याय में आक्षेपकर्ता, मह र्ष दयानंद पर पुनः एक कुतर्क सहित आरोप लगाने की झूठी को शश करते हैं की सत्यार्थ प्रकाश में मह र्ष दयानंद कुरान की शक्षा जो शांति, भाईचारे और सहिष्णुता की समर्थक है, ऐसी आयतो पर सत्यार्थ प्रकाश में का फरो को हिन्दुओ से जोड़कर दर्शाया गया है, जिससे कुरान की आयते

हिन्दू समाज के प्रति आक्रामक और अपमानजनक सद्ध होती हैं ऐसा बताया गया है। इसके लए आक्षेपकर्ता ने पुस्तक में इतिहास से जुड़े कुछ स्वघो षत उल्लेख भी प्रस्तुत कये हैं, ता क इस्लाम और इस्लाम की शांतिपूर्ण शक्षा का प्रस्तुतिकरण कया जा सके।

मगर खेद की आक्षेपकर्ता, इस अध्याय में भी पूरा सच नहीं बता पाये, क्यों क जो पूरा सच बता देवे तो क़ुरान का शांति और भाईचारे का सद्धांत ही खं डत हो जाएगा, क्यों क इस्लाम की जो नींव रखी गयी, वो नींव स्वयं में दूसरे धर्मो, जातियों और सम्प्रदायों की धा र्मक भावनाओ, और मान्यताओ को कुचलकर, दबाकर, खून करकर, बलात्कार करते हुए रखी गयी, ऐसा हम नहीं स्वयं इतिहास बताता है, आइये एक एक कर सभी बातो पर वचार रखते हैं, देखते हैं आक्षेपकर्ता की सच्चाई और इस्लाम तथा मुहम्मद साहब की शांतिपूर्ण शक्षा का वास्त वक आधार क्या है ?

सबसे पहले का फ़र शब्द और इसका अर्थ समझते हैं जो आक्षेपकर्ता अपनी पुस्तक में चाहते हुए भी न समझा पाये या कहे की इस अर्थ को गोल गोल घुमा गए, दे खये का फ़र का अर्थ :

का फ़र एक संज्ञा है, इसका बहुवचन कुफ्र है, सरल शब्दों में इसका अर्थ नास्तिक है, ले कन यदि वस्तार से समझा जाए तो इसका अर्थ है इंकार करने वाला, श्रद्धा न रखने वाला, वश्वास न करने वाला आदि, ले कन यहाँ कसका इंकार, अश्रद्धा और वश्वास नहीं कया जा रहा वो समझना नितांत ही आवश्यक है। का फ़र एक ऐसे व्यक्ति को कहा जाता है जो एक अल्लाह नामी खुदा को ईश्वर और मुहम्मद साहब को उस अल्लाह का आखरी रसूल, पैगम्बर न माने, वो का फ़र है।

यहाँ कुछ समझने की बात है, वो ये है की ईश्वर है, उसको पूरी दुनिया में अनेको नामो से पुकारा जाता है, क्यों क ईश्वर के अनेको नाम हैं, अनेक सभ्यताएँ, संकृतिया उस ईश्वर को अनेको नामो से पुकारती हैं, यानी वो सभी सभ्यताए ईश्वर को मानती हैं, ले कन आपको आश्चर्य होगा की ये सभी संस्कृतिया और सभ्यताए इस्ला मक दृष्टिकोण से नास्तिक हैं, जाहिल हैं, मुर्ख हैं, पाखंडी हैं, अप वत्र हैं, क्यों क वो अल्लाह को ईश्वर और मुहम्मद साहब को उसका आखरी पैगम्बर नहीं मानती।

आइये आपको प्रमाण दिखाते हैं :

और तू अल्लाह के सवा कसी को भी न पुकार जो तुझे न तो कोई लाभ पंहुचा सकता है और न ही कोई हानि ही। यदि तू ने ऐसा कया (अल्लाह के अतिरिक्त कसी को पुकारा) तो फर निश्चय ही तेरी गणना अत्याचारियो में होगी।

(क़ुरान १०:१०७)

पूरी दुनिया के सभी मनुष्य, जब भी वपदा में हो, परेशान हो, निराश हो अथवा हताश हो, तो उस ईश्वर को से ही सहायता मांगते हैं, भले ही हम कसी भी नाम से ईश्वर को पुकारे मगर यहाँ क़ुरान में खुद अल्लाह मयां ने ही साफ़ साफ़ बता दिया है, की जो भी अल्लाह के अतिरिक्त कसी को पुकारा तो वो अत्याचारियो में होगा, क्यों क अल्लाह के सवा कोई नहीं

जो सहायता कर सके। क्या ये अल्लाह के कथन किसी ईश्वरीय ग्रन्थ में उल्लेखित हो सकते हैं ? आगे देखिये :

और जब एक ही अल्लाह का वर्णन किया जाता है तो जिन लोगो का क़यामत पर ईमान नहीं होता उन के दिल (ऐसे उपदेश से) घृणा करने लग जाते हैं तथा जब उन (मूर्तियों) का वर्णन किया जाता है जो अल्लाह के मुकाबिले में बिलकुल तुच्छ हैं, तो वे अचानक प्रसन्न होने लगते हैं।

(क़ुरान ३९:४६)

अनेको सभ्यताओ में मूर्तियों द्वारा ईश्वर को पाने की सीढ़ी लगायी जाती है, ये प्रत्येक सभ्यता संस्कृति की अपनी सोच है, लेकिन किसी की आस्था (मूर्ति) को तुच्छ कहना, किसी की आस्था का मजाक बनाना, क्या ये क़ुरान में अल्लाह का कलाम हो सकता है ? क्या ये सभ्य शैली है ?

क्योंकि उन्होंने अल्लाह की उतारी हुई वाणी को पसंद नहीं किया है। अतः अल्लाह ने भी उनके कर्मो को अकारथ कर दिया।

(क़ुरान ४७:१०)

अब देखिये, यदि आप अल्लाह की वाणी यानी क़ुरान के अनुसार, मूर्ति पूजा करते हैं, तो आपके सारे कर्म अकारथ कर दिए हैं, क्योंकि आप क़ुरान की आज्ञा का पालन नहीं कर रहे, क्या ये कहीं से भी ईश्वरीय आज्ञा लगती है ? ये तो किसी दुराग्रही के वचन लगते हैं की यदि क़ुरान की आज्ञा न मानी तो तेरे सारे कर्म निष्क्रिय होंगे, क्या अल्लाह मियां ऐसा करके ही मुस्लिम और हिन्दू समाज में विद्रोह उतपन्न करना चाहेंगे ? मुझे तो किसी शातिर व्यक्ति की चाल लगती है जो अल्लाह और मुहम्मद साहब के नाम पर क़ुरान में ये आयत जोड़ी गयी।

उपरोक्त आयतो को आपने ध्यान से पढ़ा होगा तो समझे होंगे की क़ुरान में स्वयं अल्लाह मियां ही काफ़िर और मोमिन (मुस्लिम) में भेद प्रकट करता है, अब हम आपको दिखाते हैं, की मोमिन कौन है, यहाँ इस बात को समझाना नितांत आवश्यक है, क्योंकि बिना मुस्लिम का अर्थ समझे आप काफ़िर को नहीं समझ सकते है, देखिये :

जो कुछ भी इस रसूल पर उसके रब की और से उतारा गया है उस पर वह स्वयं भी और दूसरे मोमिन भी ईमान रखते हैं। ये सब के सब अल्लाह और उसके फरिश्तो, एवं उसकी किताबो तथा उसके रसूलो पर ईमान रखते हैं (और कहते हैं की) हम उस के रसूलो में से किसी में भी कोई अंतर नहीं करते तथा यह भी कहते हैं की हम ने (अल्लाह का आदेश) सुन लिया है और हम (दिल से) उसके आज्ञाकारी बन चुके हैं। (ये लोग प्रार्थना करते हैं की) हे हमारे रब ! हम तुझ से क्षमा मांगते हैं और हमे तेरी ओर ही लौटना है।

(क़ुरान २:२८६)

अब यहाँ ध्यान से सम झए की मुस्लमान आ खर कौन हैं :

1. जो केवल एक अल्लाह पर वश्वास करता हो।

2. जो मुहम्मद साहब को आखरी पैगम्बर मानता हो।

3. जो क़ुरान को अंतिम ईश्वरीय वाणी मानता हो।

4. जो अनेको फरिश्तो (जिब्रील, मखाइल आदि) पर ईमान रखता हो।

5. जो आ ख़रत (क़यामत) के दिन दुबारा जिन्दा होना मानता हो।

6. जो जन्नत और जहन्नम पर वश्वास रखता हो।

7. जो मूर्ति भंजक (मूर्ति तोड़ने वाला) हो ना क मूर्ति पूजक।

यहाँ यदि ध्यान से समझा जाए तो आप पाएंगे, मुस्लमान होने के लए ये आवश्यक शर्ते (नियम) मानने यानी उपरोक्त पर वश्वास करना नितांत आवश्यक है, तभी आप मुस्लमान हैं, अब आप स्वयं सो चये, जो भी व्यक्ति मुस्लमान नहीं यानी जो उपरोक्त पर वश्वास नहीं करता वो क्या है ?

हम आपको समझाने का प्रयास करते हैं, इस्लाम, क़ुरान और मुहम्मद साहब द्वारा इंसानो में जो बंटवारा कया गया है, वो दे खये :

क़ुरान में ईसाई समाज को नसारा और यहूदियों को यहूद कहा गया है, यहाँ तक की अल्लाह इनसे इतनी घृणा करता है की इन्हे अत्याचारी कहता है और मुसलमानो को इनसे सहायता न लेने तक का स्पष्ट वर्णन क़ुरान में अं कत करता है, दे खये :

हे ईमान लाने वालो ! यहूदियों और ईसाइयो को अपना सहायक न बनाओ (क्यों क) उनमे से कुछ लोग कुछ दुसरो के सहायक हैं और तुम में से जो भी उन्हें अपना सहायक बनाएगा निस्संदेह वह उन्ही में से होगा। अल्लाह अत्याचारियो को कदा प (सफलता का) मार्ग नहीं दिखाता।

(क़ुरान ५:८२)

अब दे खये, यहाँ क़ुरान में स्वयं अल्लाह मया कतनी शांति और भाईचारे की बात सखा रहे हैं, क्या ये अल्लाह का कलाम है ? जब अल्लाह मयां स्वयं मनुष्यो में ही घृणा और पक्षपात करते हैं तब उनके ईमान वाले ऐसी बातो का इंकार कैसे करे ? क्या ऐसी शक्षा से भाईचारा जागता है ? अब यहाँ वचारणीय बात ये भी है की ईसाई और यहूदियों के लए "का फ़र" शब्द प्रयोग नहीं कया जा सकता क्यों क ईसाई और यहूदी भी "अहले अल कताब" की श्रेणी में आते हैं, क्यों क अल्लाह ने इस समाज को भी प वत्र कताब प्रदान की थी, इस लए ये

का फ़र तो नहीं, मगर फर भी अल्लाह की नजर में इनसे दोस्ती करना मुस्लमान और उसके ईमान के लए सजा बराबर है।

अब दिखाते हैं, मुशरिक कसे कहते हैं, दे खये :

मुशरिक शब्द क़ुरान की ४५ आयतो में ५४ बार आया है (मोह सन खान भाष्य अनुसार), मुशरिक की परिभाषा :

एक ऐसा व्यक्ति, जो अनेको देवी देवताओ पर वश्वास रखता है, भले ही वो एक सर्वोच्च ईश्वर को भी मानता हो, या न मानता हो, ले कन अनेको देवी देवताओ की पूजा करता हो, उसे अरबी भाषा में मुशरिक कहते हैं, और ऐसे लोगो के प्रति अल्लाह मयां क़ुरान में क्या बयां करते हैं वो दे खये :

हे मो मनो (मुसलमानो) ! वास्तव में मुशरिक गंदे (और अप वत्र) हैं। (क़ुरान ९:२८)

क्या अपनी सभ्यता और संस्कृति अनुसार अपने देवी देवताओ की पूजा करना अप वत्र कार्य है ? क्या कोई व्यक्ति अपनी संस्कृति के अनुसार पूजा उपासना नहीं कर सकता ? क्या यही इस्लामी स्वतंत्रता है ? क्या केवल अपनी संस्कृति अनुसार देवी देवताओ की पूजा करने से मनुष्य गन्दा, नापाक और अप वत्र हो सकता है ? क्या ये आयत हिन्दुओ की सभ्यता और संस्कृति पर प्रतिघात नहीं करती ? क्या ऐसी आयतो से वैमनस्य नहीं फैलता ? क्या हिन्दू समाज देवी देवताओ की पूजा उपासना नहीं करता ? क्या ये आयत मुस्लिम समाज द्वारा हिन्दुओ को अप वत्र और नापाक नहीं कहलवाती ?

अब आपको बताते हैं, शर्क करने वाले का फ़र के बारे में, दे खये :

मूर्ति पूजा करना, या देवी देवताओ की पूजा करना, अथवा अल्लाह के साथ कोई अन्य उपास्य बनाना, या अल्लाह के अतिरिक्त कसी और नाम से ईश्वर को पुकारना शर्क है, शर्क के अनेको प्रकार हो सकते हैं, ले कन जो सबसे भयंकर और जिसको माफ़ नहीं कया जा सकता वो शर्क है, अल्लाह के अतिरिक्त कसी और ईश्वर को पुकारना अथवा अल्लाह के साथ अन्य कसी देवी देवता को पूजना, ये सबसे बड़ा शर्क है, और इसे कभी माफ़ नहीं कया जाएगा, दे खये :

निसंदेह अल्लाह (यह बात) कदा प क्षमा नहीं करेगा की कसी को उसका साझी बनाया जाए, परन्तु जो पाप इससे से छोटा होगा उसे जिस के लए चाहेगा क्षमा कर देगा और जिसने अल्लाह के साथ कसी को साझी ठहराया तो समझो की उसने बहुत बड़ी बुराई की बात बनाई

(क़ुरान ४:४९)

अब दे खये, खुदा की खुदाई, की यदि अल्लाह को नहीं माना, या अल्लाह के साथ कसी और को साझी बनाया तो ये सबसे बड़ा गुनाह है, यानी अल्लाह मयां को गुस्सा, घृणा, द्वेष आदि गुण भी हैं, और क्रोध भी आता है, क्या ये अल्लाह मयां का लखा हो सकता है ? जो अल्लाह

मयां परम दयालु अपने आप को क़ुरान में बताते वो ऐसी आयत क्यों देंगे ? निश्चय ही कसी का शरारत है, और ये आयत क्या अल्लाह मयां की हिन्दुओ से घृणा और द्वेष को सद्ध नहीं करती ? क्यों क हिन्दू समाज ईश्वर के साथ साथ अनेको देवे देवताओ की पूजा उपासना करता है, तो क्या मुस्लिम समाज ऐसी आयतो को पढ़कर हिन्दुओ से प्यार करेगा ?

क्या चोरी, डकैती, लूटमार, बलात्कार, हिंसा और हत्या आदि अनेको पापकर्म, छोटे हैं जिन्हे माफ़ कर दिया जाएगा ? और केवल एक अल्लाह को नहीं मानना ऐसा बुरा कर्म की वो माफ़ नहीं कया जाएगा ? क्या ये आयत अल्लाह की हो सकती है ?

इस्लाम के अनुसार मूर्तियों का तोडना जायज़ है, और यही सच्चाई है, दीन है, और यही अल्लाह की नजर में धर्म है, दे खये :

मक्का में पैगम्बर दा खल हुए। काबा में तीन सौ साठ मुर्तिया मौजूद थी। उन्होंने (पैगम्बर) ने उन मूर्तियों पर अपने हाथ में मौजूद डंडे से जोरदार प्रहार करते हुए कहा "सत्य आ गया है तथा असत्य भाग गया है और असत्य तो है ही भाग जाने वाला"

(सही मुस्लिम, कताब १९, हदीस ४३९७)

और काबा के पास उन की नमाज केवल सीटियां और ता लयां बजाने के सवा कुछ कुछ नहीं। सो हे अध र्मयों ! अपने इंकार के कारण अज़ाब का स्वाद चखो

(क़ुरान ८:३६)

कदा प नहीं, यदि वह बाज़ न आया तो हम छोटी पकड़कर घसीटेंगे (१५)

झूठी ख़ताकार चोटी (१६)

(क़ुरान सूरह ९६)

काबा में हिन्दू व ध वधान से ही कभी मूर्ति पूजा आदि होती थी, ले कन मुहम्मद साहब ने काबा में मौजूद ३६० मूर्तियों को तोड़ डाला, और वहां (काबा) को मंदिर से मस्जिद में तब्दील कर डाला, उपरोक्त क़ुरानी आयतो को पढ़कर निष्कर्ष निकाला जा सकता है की कभी कसी समय पर अरब के पगनो द्वारा आज के ही हिन्दुओ सामान मंदिरो में मूर्ति पूजा तथा पूजा पद्धति होती थी, और वहां पं डतो पुजारियों का चोटी रखना भी सद्ध करता है, अतः क़ुरान की इस आयत से निष्कर्ष निकलता है की :

और हमने यह भी निर्णय कया था की मस्जिदे सदैव अल्लाह ही का स्वा मत्व ठहराई जाए। अतः हे लोगो ! तुम उनमे उसके सवा कसी को मत पुकारो।

(क़ुरान ७२:१९)

हिन्दुओ को मंदिरो से अथवा अन्य इबादतगाहों से केवल अल्लाह को ही पुकारना चाहिए, और यही इस्लामी नजरिये से जायज़ है, नहीं तो हिन्दू समाज का फ़र, मुशरिक तो है ही।

उपरोक्त व र्णत क़ुरानी आयतो तथा इस्लामी हदीसो से स्पष्ट ज्ञात होता है की जो अल्लाह को नहीं मानता, या जो अल्लाह के साथ अनेको देवी देवताओ को भी पूजता है, अथवा जो मूर्ति पूजा करता है, वे सभी लोग पापी हैं, अप वत्र हैं, नापाक हैं, और वो धर्म पर नहीं हैं क्यों क मूर्तिपूजक शैतान की पूजा करते हैं।

अतः ये सद्ध है की क़ुरानी आयतो में ये वर्णन इतिहास सूचक नहीं है, बल्कि जब तक इस दुनिया में इस्लाम के मुताबिक कुफ्र है, शर्क है, नापाक और अप वत्र मूर्तिपूजक हैं तब तक इस्लाम का जिहाद चलते रहना चाहिए। यही बात क़ुरान में अल्लाह मयां भी फरमाते हैं :

“उन्हें मार डालो जहाँ पाओ और उन्हें निकाल दो जहां से उन्होंने तुम्हे निकाला |”

(क़ुरान २:१९१)

“कुछ मुसलमान मत्र यहाँ कहेंगे की अल्लाह ने उन लोगो को मारने को कहा है जिन्होंने खुद लड़ाई की और ईमान वालो को घर से निकाला | ले कन अगली आयत से सत्य का पता चलता है क उन्हें मारने का उद्देश्य क्या है |

तुम उन से लड़ो की कुफ्र न रहे और दीन अल्लाह का हो जाए अगर वह बाज आ जाए तो उस पर जयादती न करो |”

(क़ुरान २:१९३)

आज भी इस्ला मक नजरिये से कुफ्र और शर्क दुनिया में फैला हुआ है, इसी लए दारुल हर्ब (का फरो द्वारा अ धकृत देश) को दारुल इस्लाम (इस्लामी शरिया द्वारा अ धकृत देश) में बदलने की पुरजोर को शश जिहाद द्वारा की जा रही है, इसी को शश में आईएसआईएस, अल-कायदा, लश्कर आदि संगठन पुरे वश्व में आतंक फैलाये जा रहे हैं, कुछ मुस्लिम इस बात का खंडन करते हैं की ये इस्लामी वचारधारा नहीं है, ले कन यदि क़ुरान की शक्षा शांतिपूर्ण ही हैं तो इन कट्टरपं थयों की सोच का जिम्मेदार कौन है ? क्या ये कट्टरपंथी कोई और क़ुरान पढ़ रहे हैं, यदि हाँ, तो क्या ये मुस्लिम समुदाय की ही जिम्मेदारी नहीं की उन्हें क़ुरान और इस्लाम की सच्ची शक्षा से अवगत करवाये ?

अब कुछ अन्य इस्लामी और क़ुरानी शक्षा जो शांति, सौहार्द और भाईचारे की प्रेरणा देती है क्यों क अल्लाह की नजरो में धर्म केवल और केवल इस्लाम है। इस लए वे लोग जो गंगा जमुनी तहजीब की वकालत करते हैं, उन्हें क़ुरान की इन आयतो पर भी अपने वचार रखने चाहिए :

और जो मनुष्य इस्लाम के सवा कसी दूसरे धर्म को अपनाना चाहे तो (वह याद रखे क) वह धर्म उससे कदा प स्वीकार न कया जाएगा और वह परलोक में हानि उठाने वालो में से होगा।

(क़ुरान ३:८६)

वे अल्लाह को छोड़कर निर्जीव चीज़ो के सवा कसी को नहीं पुकारते बल्कि वे उद्दंडी शैतान के सवा और कसी को नहीं पुकारते

(क़ुरान ४:११८)

अब कुछ लोग सवाल करेंगे की आर्य समाज भी तो मूर्ति पूजा वरोधी है, तो इस्लाम की द्वारा जो कया गया वो सही है, यहाँ उन्हें ध्यान रखना चाहिए और सोचना चाहिए की आर्य समाज ने कभी भी, कहीं भी, कसी भी प्रकार की मूर्ति को तोडना, फोड़ना जायज़ नहीं बताया, न ही मंदिरो को तोड़कर उन पर मस्जिद बनाने का समर्थन ही कया, उलटे मह र्ष दयानंद ने कहा था, की वो मूर्तियों को तोड़ने का नहीं, बल्कि उन लोगो की जो जड़ बुद् ध है, उसको तोड़कर चेतन सोच करने के लए प्रतिबद्ध हैं, जो केवल वेद ज्ञान द्वारा संभव है। ले कन मुहम्मद साहब की क़ुरानी शक्षाओ के कारण, जो मूर्तियां तोड़ी गयी, और जो मुहम्मद साहब ने पैगम्बर अब्राहिम का अनुसार करते हुए मूर्तियों को तोडा, वो ही चत्रण कुछ महीनो पहले सीरिया में आईएसआईएस के जिहादियो द्वारा, सीरिया में देखा गया, जहाँ अनेको प्राचीन संस्कृति के बुतो को अकारण ही तोड़ दिया गया। क्या अब भी मुस्लिम समाज यही कहेगा की आईएसआईएस के जिहादियो द्वारा कये गए कार्य इस्लामी शक्षा से प्रेरित नहीं ?

ये केवल कुछ ही बताया है, अब पाठकगण स्वयं वचार करे की मह र्ष दयानंद ने सत्यार्थ प्रकाश में क्या गलत लखा ? क़ुरान के अनुसार ही जो का फ़र और मुस्लिम, तथा हिन्दू समाज की स्थति क़ुरान के नजरिये से ही मह र्ष दयानंद ने प्रकट की थी, फर भी आक्षेपकर्ता सच्चाई की जगह दुराग्रह व पूर्वाग्रह से ग्र सत हो नकारते चले गए। अब अगले लेख में नास्तिक और आस्तिक के बारे में वचार करेंगे।

आओ लौटो वेदो की और

सत्यार्थ प्रकाश : समीक्षा की समीक्षा का जवाब PART 13

OCTOBER 24, 2015 LEAVE A COMMENT

दस्यु स्थानवाचक मनुष्य नहीं, पापी, अधम और दुष्ट लोगो को कहते हैं,
दसवे अध्याय का जवाब पार्ट 2
अब आक्षेपकर्ता के वैदिक ग्रंथो पर लगाए मनमाने आरोपों पर कुछ वचार करते हैं,
आक्षेपकर्ता कहता है, का फ़र मुशरिक आदि जो क़ुरान में शब्द हैं वो गुण वाचक हैं, ले कन पछली पोस्ट से आपको का फ़र और मुशरिक के गुण वाचक होने का ज्ञान हो गया होगा, अब हम बात करते हैं, नास्तिक, दस्यु आदि शब्दों पर, क्यों क आक्षेपकर्ता का कहना है की वेदो में भी दस्यु शब्द मलते हैं जो का फ़र मुशरिक आदि शब्दों का ही परिचायक है, इस लए का फ़र मुशरिक तो फर भी गुण वाचक होने से सही हैं पर दस्यु आदि शब्द स्थानवाचक हैं, जो मनुष्य को मनुष्य से वैर करना सखाते हैं।

अब आक्षेपकर्ता न जाने कहाँ से मनगढंत वचार उठाकर ले आते हैं, और का फ़र मुशरिक शब्द जो अत्यंत घृणास्पद हैं मुस्लिम समाज और खासकर अल्लाह मयां के लए, उनसे तो प्रेमभाव जागता है, और जो दस्यु आदि शब्द हैं वो मनुष्यता के खलाफ हैं, आइये वचार करते हैं :

सर्वप्रथम नास्तिक शब्द को देखते हैं :

यदि वचार करके देखा जाए तो इस पूरी सृष्टि में नास्तिक कोई नहीं है, कुछ लोगो ने मथ्य प्रपंच रच रखा है – क्यों क नास्तिक उसे कभी नहीं कहते जो ईश्वर को नहीं मानता – और आज सर्वसाधारण ये प्रपंच – मथ्या जाल फैला रखा है की जो ईश्वर को नहीं मानता वो नास्तिक।

बल्कि ये स्वयं से धोखा है – दे खये नास्तिक उसे कहते हैं जो वेद की निंदा करे। ईश्वर को मानने न मानने से नास्तिक आस्तिक का कोई लेना देना नहीं है।

वेद निंदकों नास्तिक

ये बहुत ही गूढ बात है – क्यों क ईश्वर – से तात्पर्य एक ऐसी सत्ता से है जो सबसे बड़ी है – सबको नियंत्रित करती है। न्यायकारी है, और पूर्ण है – अपूर्ण नहीं।

अब देखते हैं कुछ तर्क :

हिन्दू : प्राय आस्तिक की श्रेणी में – जो अनेक ईश्वर और देवी देवताओ पर वश्वास रखते हैं।

मुस्लिम : ये भी आस्तिकों की श्रेणी में ही शुमार कये जाते हैं – क्यों क ये एक अल्लाह, उसके अनेक रसूलो, फरिश्तो, क़यामत, जन्नत जहन्नम और हूरो गल्मो आदि पर वश्वास रखते हैं।

ईसाई : ये भी आस्तिकों की श्रेणी में ही गने जाते हैं। इनमे एक यहोवा, पुत्र ईसा, और प वत्र आत्मा, बपतिस्मा, फ़रिश्ते, बाइबिल, भेड़ बकरी, चरवाहा और ना जाने क्या अन गनत तमाम बाते।

आदि अनेक मत सम्प्रदाय भी आस्तिक गने जाते हैं। पर ध्यान देने वाली बात है –

हिन्दू पुराण पढ़ कर मुस्लिमो, ईसाइयो को मलेच्छ आदि बोलकर इनका नाश अपने ईश्वर से करवा कर खुद को धा र्मक और सबसे बड़े आस्तिक कहते हैं।

मुस्लिम कुरआन को पढ़कर – पूरी दुनिया को का फ़र बताकर उसका गाला काटने को – उसकी बीवी बेटी को हरम में रखने को – उस का फ़र के माल असबाब को लूटने को – पक्का मजहब और दीन की उम्दा तालीम बताकर जन्नत में हूरो के ख्वाब देखता है क्यों क यही अल्लाह का बताया सही रास्ता है।

ईसाई – दुनिया के सबसे बड़े तथाक थत और स्वघो षत आस्तिक हैं। इनकी सबसे बड़ी समस्या है की अपने ईसाई बहुल देशो में अत्याधुनिक च कत्सा पद्धति, मशीन, दवाई सब अपनाएंगे, मगर जब अपनी आस्तिकता को दूसरे देशो में बेचने जाएंगे तब दुनिया की तमाम बीमारियो का इलाज केवल ईसा की प्रार्थना और बपतिस्मा से होना जाता देंगे। खैर ये भी अपने को आस्तिक बताते हैं और अन्य मजहबी लोगो का धर्मान्तरण – मुस्लिमो की तरह करवाना इनका भी मजहबी अ धकार है।

अब समस्या ये है की सबसे बड़ा आस्तिक कौन ? इस चक्कर में सभी तरह के – हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई आस्तिक मलकर लड़ाई, दंगे नफरती शक्षा आदि करते हैं और तमाम मनुष्यो को तकलीफ होती है, पूरी मानवता शर्मसार होती है, इस बात में कोई संशय नहीं की आज ये

मजहबी उन्माद सबसे ज्यादा इस्लामी अनुयायियों में है। तो इस लहाज से तो ये इस्लामी सबसे बड़े आस्तिक हुए ?
अब बात करे – जो ईश्वर को नहीं मानते – चाहे वो चार्वाक, बौद् ध, जैनी, कोई भी हो – हाँ ये सही है की ये ईश्वर को नहीं मानते मगर क्या ये सच है ?
बौद् ध – ये बुद्ध को ईश्वर या सबसे बड़ी शक्ति अथवा समाधी या मोक्ष प्राप्त करने वाली आत्मा को बुद्ध या ईश्वर मान लेते हैं। यानी यहाँ भी कोई एक बड़ी शक्ति पर वश्वास है।
जैनी : जितने भी तीर्थंकर हुए या द् वत्य श्रेणी व तृतीय श्रेणी के जितने जिन्न होते हैं – उन सबको ईश्वर मान लया जाता है। क्यों क जो मरने के बाद निर्वाण प्राप्त कर लेता है वो ईश्वर बन जाता है। यानी यहाँ भी कसी एक अथवा अनेक बड़ी शक्तियों पर वश्वास है।
अब अंत में बात करते हैं चार्वाक की :
यावज्जीवेत सुखं जीवेद ऋणं कृत्वा घृतं पवेत, भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः ॥
अर्थ है क जब तक जीना चाहिये सुख से जीना चाहिये, अगर अपने पास साधन नही है, तो दूसरे से उधार लेकर मौज करना चाहिये, शमशान में शरीर के जलने के बाद शरीर को कसने वापस आते देखा है?
चार्वाक भी सुख को सबसे बड़ा मानते हैं, मोक्ष के बराबर – इस लए ये भी एक बड़ी सत्ता जिसे सुख कहते हैं पर वश्वास करते हैं। क्यों क सुख को ये चार्वाकी मोक्ष कहते हैं भले ही इसे प्राप्त करने के लए अनेको मनुष्यो को दुःख प्राप्त हो। ये तथाक थत आस्तिकों के भी आस्तिक हैं। नास्तिक कस बात के ?
वेद निंदकों नास्तिक क्यों कहा जाता है ?
वेद – क़ुरान – बाइबिल – जिंद अवेस्ता भारतवर्षीय इतिहास के सम्बन्ध में इस वषय का महत्व – ईश्वरीय ज्ञान की आवश्यकता वेद के ईश्वरीय ज्ञान होने में युक्तियाँ – आर्य्यावर्त के प्राचीन ऋ ष मुनि तथा वर्तमान समय के करोड़ो पौरा णक भी "वेद" को ईश्वरीय ज्ञान मानते आये और मानते हैं, पारसी लोग "जिंद अवेस्ता" को मानते हैं, ईसाइयो का मत है की "बाइबिल" ईश्वरीय ज्ञान की पुस्तक है, मुसलमानो का यह सद्धांत है की "कुरान" ईश्वरीय ज्ञान है। इन सब के कथन तो ठीक हो नहीं सकते अतः कुछ ऐसी परीक्षाये नियत करनी चाहिए जिन से उक्त कथनो के सत्यासत्य का निर्णय हो सके। अतः ईश्वरीय ज्ञान की आवश्यकता सद्ध हो गयी। अब ववेचनीय है की ईश्वरीय ज्ञान है कौन सा ?
परीक्षाये –
ईश्वरीय ज्ञान का पहला लक्षण यह है की वह अपने आप को ईश्वरीय ज्ञान कहे अर्थात उस के नाम से यह टपके की वह ज्ञान है न की पुस्तक। परमात्मा साकार तो है ही नहीं की वह बैठ कर पुस्तक लखेगा, वह तो केवल हृदयो में ज्ञान का प्रकाश करता है।
"जिंद अवेस्ता" का अर्थ है "प वत्र लेख" अतः इस शब्दार्थ से सद्ध होता है क कसी धर्मात्मा पुरुष ने इसे लखा है।
"बाइबिल" शब्द यूनानी धातु बिब लया से निकला है जिस का अर्थ बहुत सी पुस्तके है। बाइबिल के दो भागो के नाम ऑलडटेस्टमेंट और नियुटेस्टामेंट है जो लातिनी धातु "टेस्टर" से निकलता है जिसका अर्थ साक्षी होना है। अतः इन धात्वर्थो से हम यह परिणाम निकाल सकते हैं की बहुत सी पुस्तको को जमा करके बाइबिल बनाई गयी थी और उस में जिन जिन घटनाओ का वर्णन है उस के लए साक्षी भी एकत्रित की गयी थी। अस्तु इस के नाम से तो यही सद्ध होता है की यह मनुष्य की बनाई हुई है, ईश्वर की नहीं। ईश्वर निराकार

सर्वव्यापक और सर्वज्ञ है अतः ईश्वर के वषय में यह नहीं कहा जा सकता की उस ने बहुत सी पुस्तके एकत्रित की अथवा साक्षी ढूंढने गया।
अलक़ुरआन एक संयुक्त शब्द है जो अरबी के दो शब्दों से बना है, एक "अल" जिसका अर्थ है " वशेष" दूसरा "कुरान" जो " करतैअन" धातु से निकला है जिसका अर्थ "पढ़ना" है अतः अलक़ुरआन का अर्थ हुआ वह जो लेख वशेष प्रकार से पढ़ा जाये। इस से सद्ध हुआ की अलक़ुरआन भी लखी हुई पुस्तक का नाम है न की ईश्वर के ज्ञान का।
"वेद" " वद्" ज्ञाने धातु से निकला है। वेद का अर्थ है "ज्ञान"। यह कसी लेख वा पुस्तक का नाम नहीं प्रत्युत उस ज्ञान का नाम है जो परमात्मा ने मनुष्यो के कल्याणार्थ प्रका शत कया है।
अतः ये सद्ध है क वेद कसी पुस्तक का नाम नहीं है, प्रत्युत उस ज्ञान का नाम है जो परमात्मा ने मनुष्यो का कल्याणार्थ प्रका शत कया, इस लए कहने का तात्पर्य यही है की अनेक लोग जो अनेक प्रकार से ईश्वर को मानते हैं, वश्वास करते हैं, मगर उस ईश्वर के वषय में जानते कभी नहीं, न ही जानना चाहते हैं, क्यों क वो केवल मान्यता पर वश्वास करते हैं जिससे लड़ाई, झगड़ा, वैमनस्य और मानव समाज में दया के बदले, हिंसा का बोलबाला हो जाता है, यदि यही बात ईश्वर को जानकार, तब मानना लागू हो जाए तो कहीं भी अशांति नहीं दिखेगी चहु और शांति और दया भाव नजर आएगा। इस लए पहले ईश्वर को जानो, तब मानो, क्यों क बिना जाने ही मान लेना अन्ध वश्वास है, और धर्म में अन्ध वश्वास नहीं होना चाहिए, इसी लए वेद निंदकों नास्तिक कहा जाता है। और ईश्वर का सच्चा स्वरुप वेद ज्ञान के माध्यम से ही जाना जाता है, क़ुरान बाइबिल आदि मजहबी ग्रंथो में केवल इतिहास की बाते हैं, जिससे ईश्वर का ज्ञान नहीं हो सकता, अ पतु इतिहास का ही अवलोकन हो सकता है वो भी क्षेत्रीय वा प्रांतीय इतिहास, परन्तु वेद आदि मानवी सृष्टि में प्रका शत होता है, इससे वेद में इतिहास का ज्ञान नहीं अ पतु, मानव मात्र के कल्याण का ज्ञान है।
अब दस्यु शब्द को देखते हैं :
आक्षेपकर्ता कहता है, दस्यु आदि शब्द स्थानवाचक लोगो के लए प्रयुक्त हैं, जो आर्यावर्त की सीमा से बाहर रहते हैं, उन्हें दस्यु कहा जाता है, और ये गलत है। साथ ही दयानंदीय आस्था को जोड़कर हिन्दू समाज और आर्यो पर वेद का ज्ञान न होने का मनगढंत आरोप भी जड़ दिया, शायद आक्षेपकर्ता का मान सक संतुलन बिगड़ गया है क्यों क जो आर्य समाज का सद्धांत है, और जो ऋ ष ने १० नियम बनाए हैं वे वेद और ऋ ष प्रणीत ग्रन्थ आधारित हैं, जिनमे वेद का पढ़ना और पढ़ाना आर्यो का परम धर्म कहा गया है। ले कन पूर्वाग्रही मान सकता का बोध करवाते हुए, आक्षेपकर्ता केवल ऋ ष दयानंद पर झूठे आरोप ही करते चले गए, शायद उन्हें आर्य समाज की कार्य पद्धति का समु चत अवलोकन नहीं कया तब बिना जाने ही आर्यो पर पुस्तक लखना और ऋ ष पर आक्षेप करना मान सक दिवा लयापन नहीं तो क्या है ?
आर्य दस्यु पृथक जातियों के न थे, दस्यु आर्यो में से थे जो धर्म कर्म न करने से, आचार भ्रष्ट होने से, बहिष्कृत और पतित समझे गए थे। दोनों शब्दों की व्युत्प त्तये इसी की पुष्टि करती हैं, वेद और उत्तरकालीन वैदिक और संस्कृत साहित्य इसी बात को पुष्ट करता है, पार सयों की जिंदावस्था की भी इसमें साक्षी है। दे खये :
आर्य और दस्यु शब्द का अर्थ निरुक्त और सायण के अनुसार –
आर्य ईश्वर पुत्रः [निरुक्त 6.26) Arya Is The Son of Lord

आर्य ईश्वर पुत्र हैं
दस्युः दस्यतेः क्ष्यर्थादुपदस्पन्त्यस्मिन्नसा, उपदासयति कर्मा ण।। [नि० 7.23]
दस्यु क्षयार्थक दस धातु से बनता है, दस्यु में रस रूप जाते हैं [अतः मेघ दस्यु है] और वह वैदिक कर्मो का नाश करता है
He destryos religious ceremonies
यानी धर्म द्वारा स्था पत मर्यादाओ का उल्लंघन करने वाला, नाश करने वाला, दस्यु है। यही बात आक्षेपकर्ता स्वयं भी अपनी पुस्तक में दस्यु शब्द के बाद (दुष्ट) लखकर मानता है। अतः दुष्ट वो व्यक्ति है जो मर्यादाओ का उल्लंघन करे, दुष्ट को धर्म से जोड़ना ही मूर्खता है, क्यों क मनु महाराज ने धर्म के दस लक्षण गनाए हैं:
धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौच मन्द्रियनिग्रहः।
धी र्वद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।। (मनुस्मृति ६.९२)
(धैर्य, क्षमा, संयम, चोरी न करना, शौच (स्वच्छता), इन्द्रियों को वश मे रखना, बुद् ध, वद्या, सत्य और क्रोध न करना ; ये दस धर्म के लक्षण हैं।)
अतः जो इनका नाश करता है, इन मर्यादाओ का उल्लंघन करता है, वह दुष्ट है, इसमें आचार्य सायण का प्रमाण भी है, दे खये :
आर्यम = अरणीयं सर्वैर्गन्तव्य्म। ऋ० 1.130.4
आर्यान वदुषोनुष्टातन।। ऋ० 1.51.8
उत्तमं वर्णे त्रैव र्णकम्।। 3.34.9
आर्याय यज्ञादि कर्म कृते यजमानाय।। 6.25.2
आर्यार्या ण कर्मानुष्ठातृत्वेन श्रेष्ठानी।। 6.33.3
दस्यु :
दस्यु चोरं वृत्रं वा।। ऋ० 1.33.4
दस्यवः अनुष्ठातृणामुपक्षयितारः शत्रवः।। ऋ० 1.51.8
दासीः कर्मणामुपक्षयित्री र्वश्वः सर्वा वशः प्रजाः 6.25.2
दासाः कर्म हीनाः शत्रवः।। 6.60.6
दस्यवः अव्रताः।। 1.51.8
"दासं वर्ण शूद्रादिकम्" । "दस्यु मव्रतम्"
दासः कर्म करः शूद्रः, आर्यस्त्रै व र्णकः।। 10.38.3
यास्क और सायण के कये अर्थो में आर्य और दस्यु के जातीयभेद होने की गंध भी नहीं। सभी जगह यज्ञादि कर्म करने वाले त्रैव र्णक को आर्य्य कहा है और यज्ञादि कर्म न करने वाले, वघ्न डालने वाले, अव्रत व शूद्रादि को दस्यु और दास नाम दिए हैं।
कहने का अर्थ है जो लोकोपकार और जगत के लाभ के लए कये जाने वाले कर्मो को नहीं करता, वघ्न डालता है, वो दुष्ट यानी दस्यु कहा जाता है।
भारतीय सं वधान में भी चोर, ठग आदि शब्द व र्णत हैं, तो क्या प्रत्येक भारतीय चोर, ठग आदि सद्ध होता है ? नहीं, क्यों क कसी नागरिक को चोर, लुटेरा, ठग आदि तब तक नहीं कहा जा सकता जब तक कोई नागरिक ऐसा कोई कुकर्म न करे, ठीक ऐसे ही दस्यु उन्हें कहा गया जो अवैदिक कृत्य करते थे।
वैदिक साहित्य तथा संस्कृत साहित्य से तो यह बात और भी पुष्ट हो जाती है की दस्यु आर्यो की संतान थे, जो वैदिक कर्म न करने से पतित और बहिष्कृत समझे गए थे, पाश्चात्य वद्वान भी इसको मानते हैं, दस्यु जातियों में से बहुतसी क्षत्रिय जातीय थी। ऐतरेय, मनु, रामायण और महाभारत इसमें साक्षी हैं :

तस्य ह वश्वा मत्र ………………………….. वश्वा मत्रा दस्यूनां भूयिष्ठाः (ऐ० ब्रा० 7.18) (सायण) वश्वा मत्र ऋ ष के एक सौ पुत्र थे, मधुच्छन्दस, प्रभृति पचास बड़े और पचास छोटे। जो बड़े थे उन्होंने कहना नहीं माना। वश्वा मत्र ने उनको कहा की तुम्हारी संतान चाण्डलादी नीच जातियों की हो जाए। वही अंधृ, पुण्ड्र, शबर, पु लंद, मुतिव आदि जातीय हैं, दस्यु जातियों में से बहुत सी वश्वा मत्र की संतान हैं।

अतः सद्ध है की दस्यु कर्म से हीन होकर, अमर्यादित जातियां हुई, जो भारत से बाहर जाकर बसी, इन्हे ही दस्यु कहा गया।

द् वज लोग दस्यु कैसे बन गए, इस वषय में मनु महाराज कहते हैं :

शनकै स्तु क्रयालोपादिमाः क्षत्रिय जातयः।

वृषलत्वं गता लोके ब्रह्मणादर्शनेन च ।। मनु १०:४३

पौण्ड्रकाश्चौड्रद्र वडाः काम्बोजा यवनाः शकाः ।पारदापह्लवाश्चीनाः कराता दरदाः खशाः । । १०.४४ । ।

मुखबाहूरुपज्जानां या लोके जातयो बहिः ।म्लेच्छवाचश्चार्यवाचः सर्वे ते दस्यवः स्मृताः । । १०.४५ । ।

पौण्ड्र आदि १२ क्षत्रिय जातीय वैदिक क्रयाए भुला देने से, और ब्राह्मण लोगो से सम्बन्ध टूट जाने से शनै शनै शूद्र हो गयी और यही जातीय दस्यु हैं चाहे म्लेच्छ (वदेशी) भाषा बोले चाहे आर्यो की भाषा।

महाभारत 12.136.1 "दस्युनां निष्क्रियानां च क्षत्रियो हर्तु मर्हति।।

तस्मादपयद्देहाददान मश्रद्दधान भयजमा नमाहु रासुरोबत इति (छा० उ० अ० ८ ख. 8.5)

महाभारत शान्तिपर्व अध्याय १९८ में भीष्म कहते हैं।

हे राजन मैं तुम्हे एक कथा सुनाता हु जो उत्तर दिशा में मलेच्छों में हुई। मध्य देश का कोई ब्राह्मण कसी ब्राह्मण और वेदज्ञों से रहित पर समृद्ध ग्राम में भक्षा लेने के लए घुस गया। वहां एक धनी, धर्मात्मा, सच्चा, दानी वर्णव्यवस्था जानने वाला दस्यु रहता था। उसके घर पर जाकर ब्राह्मण ने भक्षा मांगी। वह गौतम नामक ब्राह्मण मलेच्छ में रहते रहते उनके सन्निकर्ष से उन जैसा बन गया। उसी ग्राम में एक और ब्राह्मण आ निकला, और पहले ब्राह्मण को देख कर कहने लगा की तू तो मध्य देश का कुलीन ब्राह्मण था पर उससे दस्यु कैसे बन गया।

इस कथा से स्पष्ट हो जाता है की दस्यु कोई पृथक नस्ल के न थे आर्यो में से ही पतित लोग, या धा र्मक लोग भी जो पतितो के संग से पतित हो जाते थे, दस्यु कहानी लगते थे। अब एक और दृष्टान्त लीजिये, जिससे यह स्पष्ट हो जाएगा की कस प्रकार ब्राह्मण माता पता की संतान भ्रष्टाचारी होने से राक्षस यातुधान कहाने लगती है। पुलस्त्य ब्रह्म ष थे, द् वज थे (पुलस्त्यो नाम ब्रह्म ष ; पुलस्त्यो यत्र स द् वजः) उनका पुत्र वश्रवा भी उन जैसा योग्य था। पर वश्रवा के पुत्रो में से रावण, कुम्भकर्ण, भ्रष्टाचारी, अधा र्मक होने से राक्षस, दस्यु, अनार्य, यातुधान कहाने लगे, पर छोटा पुत्र वभीषण धर्मात्मा होने से आर्य ही रहा। ये तो रामायण की कथा से ही सद्ध हो जाता है, की आर्यावर्त की सीमा से बाहर भी जो दस्यु, कर्म से द् वज और वेद धर्म के पालनहारी हो, वे भी आर्य ही कहाते थे, और आज भी ऐसा ही है, क्यों क पाप, भ्रष्टाचार और अवैदिक कर्म से ही दस्यु कहाते हैं।

अतः आक्षेपकर्ता का आरोप की वेद में दस्यु, नास्तिक मलेच्छ आदि आर्यावर्त की सीमा से बाहर के लोगो को कहते हैं, ये खं डत होता है, मगर जो का फ़र, मुशरिक आदि शब्द अल्लाह मयां द्वारा मनुष्य में मनुष्य की लड़ाई और झगड़ा, वैमनस्य फैलाते हैं, उनपर आक्षेपकर्ता

का मौन या दृढ समर्थन, इंसानियत के लए ठीक प्रतीत नहीं होता, अतः आक्षेपकर्ता को ऐसी वकृत मान सकता और मनुष्य की मनुष्य में वैमनस्य फैलानी वाली घृ णत सोच से बचना चाहिए।
आओ लौटो वेदो की ओर
नमस्ते

"सत्यार्थ प्रकाश : समीक्षा की समीक्षा का जवाब PART 12"

OCTOBER 29, 2015 LEAVE A COMMENT

इस्लाम, नारी और महिला वकास का अवरोधक बुरका

"ग्यारहवे अध्याय का जवाब पार्ट 1"

सत्यार्थ प्रकाश समीक्षा की समीक्षा पुस्तक में सतीशचंद गुप्ता जी एक अध्याय प्रस्तुत करते हैं "क्या पर्दा नारी के हित में नहीं है ?" अपनी परदे वाली थयोरी को जायज़ (वैध) सद्ध करने के चक्कर में लेखक इतने मशगूल हुए की बिना सद्धांतो के ही कुतर्क और मथ्याभाषण करते हुए, वर्तमान युग में भारतीय नारी का उद्धार करने वाले ऋ ष दयानंद को इस्लाम और मुसलमानो का कटुआलोचकर बना दिया। क्या ये समाज को सच्चाई दिखाने की जगह खुद ही सच्चाई पर पर्दा डालने वाली बात न हुई ? लेखक को चाहिए था की नारी की मनोस्थति को समझते हुए उसकी भावनाओ का सम्मान करते, मगर इस्लामी धारणा से ओतप्रोत हुए लेखक ने सच को नकारते हुए, वशुद्ध रूप से मजहबी कट्टरता का परिचय देकर सम्पूर्ण नारी जाती का अपमान कर दिया। क्या ये आक्षेपकर्ता का मान सक दिवा लयापन नहीं है ?

दे खये, पर्दा प्रथा न तो भारतीय संस्कार हैं, न ही ये शब्द ही भारतीय हिंदी भाषा से सम्बं धत है, "पर्दा" शब्द स्वयं वदेशी है जो फ़ारसी भाषा से है, संपादक "डॉ सैयद असद अली" प्रकाशक राजपाल इन संस, दिल्ली से प्रका शत "व्यवहारिक उर्दू हिंदी शब्दकोष" पृष्ठ संख्या १८८ में शब्द "पसेपर्दा" आता है, जो "फ़ारसी पुल्लिंग" शब्द है। जिसका अर्थ है आड़ में। तो ये बात तो क्लियर है की पर्दा शब्द खुद में ही वदेशी शब्द है, तो इसका मूल भी भारतीय नहीं हो सकता, वैदिक संस्कृति में नारी को सम्मान का सूचक "देवी" कहा गया है, जो कभी भी छुपाने की वस्तु वाले नजरिये से नहीं दे ख गयी। क्यों क "औरत" शब्द अरबी है जो अरबी धातु औराह या आईन-वाव-रा (ayn-waw-ra) से जिसका मतलब है कानापन या एक आंख से देखना से बना है। सीधा सीधा अर्थ है, शायद अरब के लोग नारी को केवल भोग की वस्तु या शारीरिक सम्बन्ध बनाने वाली नजर से ही देखते थे, जिस कारण नारी को "औरत" शब्द यानी छुपाने वाली बना दिया ता क ऐसी दुष्ट और काम वास्नामयी नजरो से बचा सके।

जब क भारतीय पद्धति में महिला को देवी का दर्जा प्राप्त है, जिससे ज्ञात होता है की भारतीय परंपरा और संस्कार नारियो के प्रति कतने उदारशील और संस्कारी थे। अब जो बात

है पर्दा की तो कसी भी वैदिक साहित्य में महिला को छुपाने या पर्दा करने का ववरण प्राप्त नहीं होता दे खये :

निरुक्त में पर्दा प्रथा का ववरण कहीं मौजूद नहीं।

निरुक्तानुसार संप त्त संबंधी मामले निपटाने के लए न्यायालयों में स्त्रियों के आने जाने के लए कहीं पर्दा व्यवस्था का ववरण नहीं, बल्कि अ धकार है।

रामायण और महाभारत काल में भी महिलाओ की पर्दा प्रथा नहीं पायी जाती, इसके उल्ट रावण की बहन जब श्री राम और लक्ष्मण के सामने आई तब भी कोई पर्दा न था, जब रावण माता सीता को ले जाकर, अशोक वाटिका में रखा वहा भी कोई पर्दा व्यवस्था नहीं थी। रामायण और महाभारत कालीन इतिहास में स्वयंवर होते थे, तब भी पर्दा व्यवस्था का कोई उल्लेख प्राप्त नहीं होता।

इन सब तथ्यों से ज्ञात हो जाता है की आर्य सभ्यता में पर्दा व्यवस्था थी ही नहीं, क्यों क आर्य जाति सदैव सदाचारी और संयमी रही है, अतः पुरुषो को अपनी इन्द्रियों को वश में करना ही सदाचार है, महिलाओ को ढक कर, छिपा कर पुरुष इन्द्रियों को वश में नहीं कर सकता, खैर ये ढकने और छिपाने जैसी प्रथा से पुरुष की इन्द्रिय संयम में रहती हैं और पुरुष सदाचार की शक्षा प्राप्त करता है, इतना वज्ञानं अरबी सभ्यता में ही था।

अब हम आपको वेद से प्रमाण दिखाते हैं, दे खये :

सुमंगलीरियं वधुरिमा समेत पश्यत
सौभाग्यमस्यै दत्वायाथास्तं व परेतन

ऋग्वेद (10.85.33)

हे ववाह में उपस्थित भद्र स्त्री पुरुषो ! यह वधु शुभा और सौभाग्यशा लनी है। आप लोग आइये, दे खये और इसे सौभाग्य का आशीर्वाद देकर अनन्तर अपने अपने घरो को जाइए।

यहाँ स्पष्ट है की पर्दा प्रथा का कोई औ चत्य भारतीय संस्कृति में महिलाओ के लए निर्धारित नहीं कया गया। बल्कि आश्वलायनगृह्यसूत्र (1/8/7) के अनुसार वधु को अपने घर ले आते समय वर को चाहिए क वह प्रत्येक निवेश स्थान (रुकने के स्थान) पर दर्शकों को ऋग्वेद के उपर्युक्त मंत्र के साथ दिखाए। इससे स्पष्ट है क वैदिक सभ्यता (भारतीय संस्कृति) में वधुओं द्वारा अवगुण्ठन (पर्दा) नहीं धारण कया जाता था, प्रत्युत वे सबके सामने निरावगुण्ठन आती थी। पर्दा प्रथा का उल्लेख सबसे पहले महाकाव्यों में हुआ है पर उस समय यह केवल कुछ राजपरिवारों तक ही सी मत था। (धर्मशास्त्र का इतिहास पृ.336)

अब मूल सवाल यह है की ये पर्दा प्रथा जैसी कुप्रथा हमारे भारतीय समाज में कैसे दा खल हुई ? इसका जवाब हमें हुतात्मा पं डत लेखराम कृत "मह र्ष दयानंद सरस्वती का जीवन चरित्र" नामक पुस्तक में बेहद तर्कपूर्ण आधार पर मलता है, जहाँ मह र्ष ने एक शंकालु की शंका समाधान करते हुए कहा :

“स्त्रियों को परदे में रखना आजन्म कारागार में डालना है। जब उनको वद्या होगी वह स्वयं अपनी वद्या के द्वारा बुद् धमती होकर प्रत्येक प्रकार के दोषो से रहित और प वत्र रह सकती हैं। परदे में रहने से सतीत्व रक्षा नहीं कर सकती और बिना वद्या प्राप्ति के बुद् धमती नहीं हो सकती हैं और परदे में रखने की प्रथा इस प्रकार प्रच लत हुई की जब इस देश के शासक मुस्लमान हुए तो उन्होंने शासन की शक्ति से जिस कसी की बहु बेटी को अच्छी रूपवती देखा उसको अपने शासना धकार से बलात छीन लया और दासी बना लया। उस समय हिन्दू ववश थे, इस कारण उनमे सामना करने की सामर्थ्य न थी। इस लए अपने सम्मान की रक्षा के लए उन्होंने अपनी स्त्रियों और बहु बेटियो को घर से बाहर जाने का निषेध कर दिया। सो मूर्खो ने उसको पूर्वजो का आचार समझ लया। देखो, मेमो अर्थात अंग्रेज की स्त्रियों को, वे भारत की स्त्रियों की अपेक्षा कतनी साहसी, वद्यावती और सदाचारिणी होती हैं।”

ऋ ष ने जो समझाया उसे न समझकर पूर्वाग्रह से ग्र सत हो आक्षेपकर्ता ने कुछ और ही समझा, स्त्रियों को परदे में रखना आजन्म कारागार है, क्यों क ये महिला की इच्छा वरुद्ध है, अनेको मुस्लिम महिलाये ही बुरखा का वरोध करती हैं, यहाँ तक की अनेको मुस्लिम महिलाओ ने तो नग्न तक होकर वरोध कया है, ऐसी अनेको खबरों से फ्रांस, ब्रिटेन आदि देशो के समाचार पत्र भरे पड़े हैं। हम नग्न्ता का समर्थन तो बिलकुल नहीं करते, वरोध सदैव ही शालीन और मर्यादित होना चाहिए, ले कन शायद उन मुस्लिम महिलाओ को नग्न्ता की राह दिखाने वाला भी बुरखा ही था जिसमे उन्हें घुटन महसूस हो रही थी। खैर हम ऋ ष की दूसरी बात समझते हैं, उन्होंने कहा महिला कभी भी परदे से अपनी सतीत्व रक्षा नहीं कर सकती, ये कटु सत्य है, क्यों क भारत में ही अनेको मुस्लिम परिवारो में मुस्लिम बहु की इज्जत को तार तार करने में उसके ही अपने मुस्लिम ससुर का योगदान था। मुजफ्फरनगर उ० प्र० में इमराना का केस मात्र एक उदहारण है, मुस्लिम पति नूर इलाही की जो पत्नी इमराना थी, उसके ससुर अली मोहम्मद ने बलात्कार कया था, तब इस्लामी कानून अनुसार दारुल उलूम देवबंद ने एक फतवा निकाला जो दुनिया से मानवता शर्मसार करने वाला था, इस कानून में पी ड़त महिला जो ससुर की हैवानियत का शकार हुई थी, उसे उस हैवान की पत्नी बना दिया गया, और जो उसका पति था, जिससे उस महिला को पांच बच्चे थे, उसे बेटा बना दिया, अंततः पी ड़त ने भारतीय सं वधान का दरवाजा खटखटाया और पी ड़ता को इंसाफ मला। अब सवाल ये है, क्या बुरखा यहाँ स्त्री की सतीत्व रक्षा कर पाया ? क्या ये जरुरी नहीं था, की पुरुष अपनी इन्द्रियों को वश में करना सीखे। महिलाओ को श क्षत करने से ही महिलाओ का शोषण रुकेगा, क्यों क महिलाओ को जो अ धकार प्राप्त हैं, वो शरिया कानून नहीं देता, क्यों क इस्लाम में महिलाओ का पढ़ना लखना हराम है, महिलाओ का नौकरी करना हराम है, महिलाओ का पर पुरुषो (ऑ फस सहकर्मी) के साथ बैठना, काम करना, सब हराम है। खैर इस वषय पर हम अगले लेख में वचार करेंगे। आप अभी केवल ये सो चये की यदि महिला श क्षत होकर नौकरी करना चाहे तो क्या वो ऑ फस में बुरखा पहने हुए, बैठ सकती है ? क्या ये एक प्रकार का मान सक अत्याचार नहीं है ? क्या पुरुष को भी बुरखे में रहने की आज्ञा है ? यदि नहीं, तो क्यों एक नारी पर अत्याचार कया जाता है, वो भी मजहब के नाम पर ? फर भी कहते हैं की महिला और पुरुष को इस्लाम में समान अ धकार प्राप्त हैं ? क्या ये एक प्रकार का बेहूदा मजाक नहीं ?

यही बात यहाँ मह षे ने बताई, की महिला को श क्षत होना चाहिए, ता क वो अपने अ धकार प्राप्त कर सके, मगर खेद की इस्लाम में महिलाओ का पढ़ना लखना, उनको अ धकार देना इस्लामी शरिया में हराम है, पा कस्तान की मलाला युसूफ ज़ई से ज्यादा इस बात को कोई नहीं समझ सकता।

उपरोक्त तथ्यों से सद्ध है की भारतीय सभ्यता में तो पर्दा का कोई रोल नहीं, ये कुप्रथा वशुद्ध रूप से मुस्लिम शासको के कारण ही भारतीय परिवेश में दा खल हुई। ऋ ष ने जो तर्क दिया था, उसका ही समर्थन करते हुए "भारतरत्न पांडुरंग वामन काणे" ने अपनी पुस्तक हिस्ट्री आफ धर्मशास्त्र (धर्मशास्त्र का इतिहास) में पृष्ठ ३३७ में लखते हैं :

"उत्तरी भारत एवं पूर्वी भारत में पर्दा की प्रथा जो सर्वसाधारण में पाई जाती है, उसका आरंभ मुसलमानों के आगमन से हुआ।

इसके तीन कारण थे-

हिन्दू स्त्रियों को सुरक्षा प्रदान करने की दृष्टि से।

वजेता शासकों की शैली का चाहे-अनचाहे तरीके से अनुसरण।

वपरीत परिस्थितियों के कारण स्त्रियों में बढ़ती अ शक्षा और मुस्लिम शासकों के राज में गरता स्तर।

इतिहास को आप छुपा नहीं सकते, इस वषय पर अनेको लेखको ने स्वतंत्रता से लखते हुए अपनी सहमति दी है, क्यों क मुस्लिम शासक और आक्रांता, इस देश में आक्रमण करते और पुरुषो को मारकर, उनकी स्त्रियों को उठा ले जाते तथा अरब आदि देशो में गुलाम दासी के तौर पर दो दो दिनार में बेच देते थे, ये तो इतिहास था, मगर इतिहास फर दुहरा गया, सीरिया में इस्लामी आतंकी संगठन ने यजीदी महिलाओ को निर्वस्त्र करके गली मोहल्ले में बोली लगाकर १०० डॉलर में बेचा, ये तो अभी हाल की ही खबर है, बिलकुल यही परिस्थिति मुग़ल काल में भी थी राजपुताना में मौजूद अनेको जौहर स्थल इसके साक्षात प्रमाण हैं। इतिहास साक्षी है, की मुस्लिमो की बादशाहत दौरान हिन्दू महिलाओ को अगवा कर बलात्कार कया जाता था, डॉ श्रीवास्तव अपनी पुस्तक अकबर द मुग़ल पृष्ठ ६३ में लखते हैं "when people Deosa and other places on Akbar's route fled away on his approach" अब यहाँ शंका ये है यदि राजा भारमल की पुत्री जोधा का ववाह वधु पक्ष की मर्जी से हुआ था तो अकबर के आने पर जनता भाग क्यों गयी ? जाहिर है, वो ववाह था ही नहीं, ये स्पष्ट है की अकबर ने राजा भारमल की पुत्री की सुंदरता के प्र सद्द कस्से सुने थे, इसी लए उसे पाने को राजा भारमल पर आक्रमण कया, यही हाल सती रानी दुर्गावती की कहानी का भी है, हालां क जौहर करने से दो महिलाये बच गयी थी एक दुर्गावती की बहन कमलावती और दूसरी राजा पुरंगद की बेटी थी जिन्हे अकबर के हरम में पंहुचा दिया गया था (जे एम शेलत, अकबर 1964)

अनेको इतिहा सक दस्तावेजो से ये सद्ध है की उत्तर भारतीय हिन्दू परिवारो में पर्दा प्रथा मौजूद नहीं थी, ये कुप्रथा हिन्दू समाज में मुस्लिम आक्रंताओ से हिन्दू महिलाओ को बचाने के लए अपनाया गया, नवाब वज़ीर लखनऊ का तत्कालीन नवाब सुन्दर हिन्दू महिलाओ को

अगवा कर उनको प्रता ड़त कया करता था, और जबरन मुसलमान बनवाता था (इट इज कॉन्टिनुएड, अशोक पंत, पृष्ठ १३०)

औरंगजेब के समय तत्कालीन प्रधान मंत्री का नवासा मर्ज़ा तवाख्खुर ने हिन्दुओ की दुकानो को नष्ट कया और हिन्दू महिलाओ को अगवा कर बलात्कार कया (India & South East Asia to 1800 सांडर्सन बेक)

औरंगजेब के समय तत्कालीन प्रधान मंत्री का नवासा मर्ज़ा तवाख्खुर ने घनश्याम जो नव वाहित वधु को डोली में बैठा कर घर ला रहा था, उसे अपने घर के गेट के सामने ही लूट लया, २ हिन्दू मार दिए गए और घनश्याम की पत्नी को मर्ज़ा तवाख्खुर अपने घर ले गया (Ahkam-i-Alamgiri)

The Afghan ruler Ahmad Shah Abdali attacked India in 1757 AD and made his way to the holy Hindu city of Mathura, the Bethlehem of the Hindus and birthplace ofKrishna.

The atrocities that followed are recorded in the contemporary chronicle called : 'Tarikh-I-Alamgiri' :

"Abdali's soldiers would be paid 5 Rupees (a sizeable amount at the time) for every enemy head brought in. Every horseman had loaded up all his horses with the plundered property, and atop of it rode the girl-captives and the slaves. The severed heads were tied up in rugs like bundles of grain and placed on the heads of the captives…Then the heads were stuck upon lances and taken to the gate of the chief minister for payment.

"It was an extraordinary display! Daily did this manner of slaughter and plundering proceed. And at night the shrieks of the women captives who were being raped, deafened the ears of the people…All those heads that had been cut off were built into pillars, and the captive men upon whose heads those bloody bundles had been brought in, were made to grind corn, and then their heads too were cut off. These things went on all the way to the city of Agra, nor was any part of the country spared."

 कतने ही प्रमाण दिए जा सकते हैं, जो सद्ध करते हैं, की हिन्दू महिलाओ पर मुस्लिम आक्रंताओ द्वारा कतना अत्याचार कया गया, की इससे हमारी सभ्यता और संस्कृति में अनेको परिवर्तन आ गए। जिनमे मुख्य रूप से :

पर्दा कुप्रथा का भारतीय महिलाओ द्वारा अपनाना मुख्य है।
बाल ववाह, ता क हिन्दू महिलाओ को शोषण से बचा सके।
सती प्रथा, ये जौहर का परिणाम था जिसे स्वेच्छा से अपनाया जाने लगा ता क मृत हिन्दू पति के बाद हिन्दू महिला की आबरू बच सके।

इसके अतरिक्त सतीशचंद गुप्ता से पूछना चाहेंगे की, जो पर्दा प्रथा हा लया हिन्दू समाज में पायी जाती है, वह केवल घूंघट या सर पर पल्लू रख कर दे ख जाती है, ले कन जो पर्दा प्रथा का समर्थन आक्षेपकर्ता ने कया वो बुरखा है, वो कसी भी लहाज से घूँघट का कार्य तो करता नहीं, फर बुरखा की बराबरी घूँघट से करना मान सक दिवा लयापन ही है। क्यों क हा लया समय में हिन्दू समाज में घूँघट या सर पर पल्लू रखना एक नजरिये से देखे तो

आदर सूचक ही लगता है जो बड़े बुजुर्गो के सम्मान हेतु रखते हैं, लेकिन बुरखा घूँघट या पर्दा की बराबरी नहीं कर सकता, फर क्यों बराबर जोड़ा गया ?

अब हम इस लेख में ज्यादा तो अब नहीं लख सकते, क्योंक बड़ा हो जाएगा, अतः अब हम अगले लेख में देखेंगे, क :

बुरका प्रथा मुस्लिम समाज में कैसे आया ?

बुरखे की हानिया और आज का आतंकवाद

बुरखे से महिलाओ को होने वाली बीमारियां तथा बुरखे पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण

बुरखे के कारण मुस्लिम महिलाओ की स्थति

महिला वकास में अवरोधक बुरखा

और क्या बुरखा महिलाओ के प्रति छेड़ छाड़ और बलात्कार रोक पाता है ?

अगले लेख में।

आओ लौट चले वेदो की और।

नमस्ते

“सत्यार्थ प्रकाश : समीक्षा की समीक्षा का जवाब PART 15”

OCTOBER 29, 2015 2 COMMENTS

“ग्यारहवे अध्याय का जवाब पार्ट 2”

इस्लाम में बुरका प्रथा की शुरुआत और बुर्के से होने वाली हानियां………. पार्ट 2

नोट : लेख थोड़ा बड़ा जरूर है, पर पढ़ना जरुरी है

पछली लेख में आपने जाना की भारतीय संस्कृति तथा वैदिक सभ्यता में कहीं भी पर्दा प्रथा नहीं पायी जाती, ये प्रथा वशुद्ध रूप से इस्लामी समाज की देन है, और हिन्दू जाति को अपनी बहन बेटियो की सुरक्षा हेतु पर्दा प्रथा का आरम्भ करना पड़ा, इसी वषय पर आज हम आपको समझाने की कोशश करेंगे की आखर इस्लाम में बुरका प्रथा की शुरुआत कैसे हुई और बुर्के से होने वाली हानियां तथा बुर्के का महिलाओ पर प्रभाव आदि।

आइये पहले देखते हैं बुरका प्रथा पर मुस्लिम समाज की मान्य मजहबी पुस्तक “क़ुरान” क्या कहती है :

और मो मन महिलाओ से कह दे की वे भी अपनी आँखे नीची रखा करे और अपने गुप्त अंगो की रक्षा कया करे एवं अपने सौंदर्य को प्रकट न कया करे सवाय उस के जो मज़बूरी और बेबसी से आप ही आप जाहिर (जैसे शरीर का लम्बा, छोटा, मोटा व दुबलापन होना) हो जाये और अपनी ओढ़नियो को अपनी छातियो पर से गुजर कर और उसे ढक कर पहना करे तथा वे केवल अपनी पतियों, अपने पताओ या अपने पतियों के पताओ या अपने पुत्रो या अपने पतियों के पुत्रो या अपने भाइयो या अपने भाइयो के पुत्रो (भतीजो) या अपनी बहनो के पुत्रो या अपने जैसी स्त्रियों या जिन के स्वामी उन के दाहिने हाथ हुए हैं (अर्थात लौं डया) या ऐसे अधीन व्यक्तियों (अर्थात नौकर चाकर) पर जो अभी युवावस्था को नहीं पहुंचे या ऐसे बच्चो पर जिन्हे अभी स्त्रियों के वशेष सम्बन्धो का ज्ञान नहीं हुआ, अपना सौंदर्य प्रकट कर सकती हैं तथा इन के सवा कसी पर भी जाहिर न करे और अपने पाँव (धरती पर जोर से) इस लए न मारा करे की वह चीज़ जाहिर हो जाये जिसे वे अपने सौंदर्य में से छिपा रही है। और हे मो मनो ! तुम सब के सब अल्लाह की और झुक जाओ ता क तुम सफलता पा सको। (क़ुरान २४:३२)

एक और आयत जो इसी वषय से सम्बं धत है,

हे नबी ! अपनी पत्नियों, अपनी पुत्रियों तथा मो मनो की पत्नियों से कह दे की वे (जब बाहर निकल तो) अपनी बड़ी चादरों को अपने सरो पर से आगे खींच कर अपने सीनो तक ले आया करे। ऐसा करना इस बात को संभव बना देता है की वे पहचानी जाए और उन्हें कोई कष्ट न दे सके तथा अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला और बार बार दया करने वाला है। (क़ुरान ३३:६०)

उपरोक्त व र्णत दो आयतो में से प्रथम आयत का उद्देश्य है की महिलाये अपने श्रृंगार को पुरषो से छुपाये और दूसरी आयत में स्पष्ट बता दिया है की घर से बाहर जाने पर बुरका पहनने से छेड़छाड़ और उत्पीड़न से मुस्लिम महिलाओ का बचाव होता है। यहाँ ध्यान से सोचने की बात है की पुरषो के लए कोई ऐसी व्यवस्था नहीं पायी जाती की वो भी चादर डालकर महिलाओ से खुद का बचाव करे, ये सारी पाबन्दी आ खर महिला तक ही सी मत क्यों ? क्या ये अल्लाह का स्त्री पुरुष में भेदभाव नहीं ? कुछ पॉइंट जो इन आयतो पर उठ खड़े होते हैं जरा गौर करिये :

1. क्या बिना बुरका पहने कसी महिला की सुंदरता इतनी होती है की पुरुष अपना नियंत्रण खो बैठता है ? यदि ये बात सही है तो फर जो इसी आयत में बताया की अपने भाई, पता आदि के आगे बिना बुरका भी बैठो, ये कैसे संभव है ?

2. महिलाये पुरुषो की तरफ आक र्षत नहीं होती, ये कटु सत्य है, और पूरी दुनिया की महिलाओ में एक बड़ा भाग उन महिलाओ का है जो कामुक नहीं होती। बेहद ही कम संख्या में ऐसी असभ्य महिलाये पायी जाती हैं जो अत्य धक कामुक हो।

3. महिलाये, पुरुषो की तुलना में अ धक संयमी और स्व नियंत्रक होती हैं, ऐसे में भी बुरका उढ़ाने और सौंदर्य छिपाने का कोई औ चत्य नहीं, बेहतर होता की पुरुषो को दिशा निर्देश जारी कये जाते, मगर खेद की पुरुषो के लए कोई दिशा निर्देश क़ुरान में नहीं पाये जाते।

अब तक आप समझ गए होंगे की बुरखा प्रथा से महिलाओ की सुंदरता छुपने और छेड़छाड़ उत्पीड़न बंद होना संभव नहीं, क्यों क बिना पुरुषो को सभ्यता सखाये ये सब बंद नहीं हो सकता, क्यों क महिलये वैसे ही संयमी होती है, कोई कम संख्या की कामुक महिलाये मात्र एक अपवाद है, यदि क़ुरान ये समझाना चाह रहा है की महिलाये कामुक और असंयमी होती है, तो ये क़ुरान के अल्लाह मयां और मुहम्मद साहब का दुनिया की सभी महिलाओ पर बेमाना इल्जाम है, ले कन अल्लाह मया और मुहम्मद साहब ऐसे तो न हुए होंगे, इस लए सच्चाई जानना जरुरी है, आइये हम दिखाते हैं की ये आयते आ खर क़ुरआन के जरिये क्यों नाजिल हुई, दे खये :

मुहम्मद साहब की पत्नी आयशा ने बताया की पैगम्बर साहब की पत्निया अल मनासी के वशाल खुली जगह जो ब क अत मदीना के नजदीक थी, रात्रि में पेशाब करने हेतु जाती थी। उमर साहब ने पैगम्बर साहब को बोला अपनी पत्नियों को परदे में र खये ले कन अल्लाह के रसूल ने ऐसा न कया। एक रात ऐसा हुआ क पैगम्बर साहब की एक पत्नी जिनका नाम सउदा बिन्त ज़मआ था जो एक लम्बी महिला थी इशा के समय बाहर (पेशाब करने) गयी। उमर साहब ने महिला को सम्बोधन करते हुए कहा कहा "मैंने तुम्हे पहचान लया है, तुम सउदा हो", ऐसा उन्होंने कहा क्यों क वो बेसब्री से इन्तेजार कर रहे थे अल हिजाब (मुस्लिम महिलाओ द्वारा परदे का अवलोकन) आयतो के नाजिल होने की। इस लए अल्लाह ने अल हिजाब (आँखे छोड़ पूर्ण शरीर को चादर से ढकना) आयत नाजिल की।
(सही बुखारी, जिल्द १, कताब ४ हदीस १४८)

बिलकुल यही हदीस, सही बुखारी में जिल्द ८ कताब ७४ हदीस २५७ में भी द्रष्टव्य है, इसके अतिरिक्त सही मुस्लिम कताब २६ हदीस ५३९७ भी यही बताती है की महिलाओ को बुरखा पहनने वाली आयत, उमर साहब द्वारा पेशाब जाती महिलाओ को पहचानने से बचाने हेतु नाजिल की गयी।

अब जरा कुछ समझने की को शश करते हैं, दे खये :

1. उपरोक्त हदीसो से ज्ञात होता है क उमर साहब बार बार पैगम्बर मुहम्मद साहब से महिलाओ को चादर (बुरखा) से ढकने वाली आयते अल्लाह से नाजिल करने को दोहरा रहे थे ता क क़ुरान में महिलाओ के लए चादर (बुरखा) से ढकना अनिवार्य हो जाए।

2. उपरोक्त हदीसो से साफ़ ज्ञात है की ये अल हिजाब की आयते अल्लाह द्वारा नाजिल नहीं की गयी, क्यों क ये उमर साहब की मांग थी जिसे मुहम्मद साहब ने पूरा कया।

3. उमर साहब ने मुहम्मद साहब की एक पत्नी जो खुद को राहत देने (पेशाब) करने गयी थी, उनका पीछा कया, न केवल पीछा कया, बल्कि "सउदा" नाम से भी पुकारा जो कसी भी हालत में ठीक नहीं था, क्यों क मुहम्मद साहब की पत्निया मुस्लिमो की माँ सामान है।

4. सउदा जो मुहम्मद साहब की पत्नी थी उन्होंने घर जाकर, उमर साहब द्वारा कये बेहूदे और श र्मंदगी वाले काम की शकायत मुहम्मद साहब से की थी (सही बुखारी जिल्द ६ कताब ६० हदीस ३१८) (सही मुस्लिम कताब २६ हदीस ५३९५)

5. इन सब कार्यो के बाद ही और जो उमर साहब चाहते थे, उसे पूरा करने हेतु हिजाब वाली आयते नाजिल की गयी।

इन सबको पढ़ने से निष्कर्ष निकलता है की उमर साहब की हिजाब आयतो की मांग से पहले तो मुहम्मद साहब खुद भी राजी नहीं थे, मगर उमर साहब के कामो के बाद अल्लाह तक राजी हो गया जो हिजाब की आयत उतारी ? क्या ये इंसाफ है ?

ले कन एक और चौंकाने वाली बात का खुलासा हदीस में होता है, की हिजाब वाली आयते नाजिल होने बाद, मुहम्मद साहब की पत्निया बुर्के में आने जाने लगी, मगर उमर साहब को इससे भी चैन नहीं आया, वो फर भी मुहम्मद साहब की पत्नी का पीछा करते रहे, दे खये (सही बुखारी जिल्द ६ कताब ६० हदीस ३१८)

जरा सो चये क्या हिजाब या बुरखा यहाँ महिलाओ के काम आया ?

उपरोक्त क़ुरानी आयतो में बताया है की बुरका, महिलाओ को पुरुषो की अवांछित वासनामयी दृष्टि से बचाव करता है, आइये इस वषय पर भी इस हदीस का अवलोकन करे :

मुहम्मद साहब की पत्नी आयशा ने बताया की एक नपुंसक (हिजड़ा पुरुष) पैगम्बर साहब की पत्नियों के यहाँ आया जाया करता था और उनको (पैगंबर) को इस बात पर कोई आप त्त नहीं थी क्यों क वो नपुंसक (हिजड़ा) बिना कसी वासनामयी इच्छा के आता था। एक दिन जब वह नपुंसक, पैगम्बर साहब की कुछ पत्नियों के पास बैठकर महिलाओ की शारीरिक वशेषताओ के बारे में बता रहा रहा तभी मुहम्मद साहब आ गए और उन्होंने ये सब सुन कर कहा "मुझे नहीं पता था, ये इन बातो को भी जानता है, अतः अब इससे सेवा करवाना वर्जित है।" उन्होंने (आयशा) ने कहा : तब उन्होंने (पैगम्बर) साहब ने उस (नपुंसक) से भी पर्दा (बुरखा) करने का आदेश दिया।
(सही मुस्लिम कताब २६ हदीस ५४१६)

उपरोक्त हदीस से ज्ञात होता है की बुरखा की प्रथा, कसी भी हालत में अवांछित वासनामयी दृष्टि से बचाव हेतु भी नहीं है, क्यों क एक नपुंसक स्त्रियों के प्रति कैसे वासनामयी हो सकता है ? यहाँ एक बात और ध्यान देने वाली है की बुरखे की शुरुआत मुस्लिम (आज्ञाकारी, ईमानवाला) पुरुष से ही मुस्लिम (आज्ञाकारी, ईमानवाली) महिला को छेड़ छाड़ से बचाने हेतु शुरू की गयी।

आइये अब कुछ आंकड़ो पर नजर डालते हैं, मुस्लिमो का ये दावा भी हवा हवाई है की बुरखे से महिलाये छेड़ छाड़ जैसे उत्पीड़न से बचती हैं क्यों क गैर इस्ला मक समाज में महिलाये बिना बुरखा स्वतंत्रता से घूमती हैं जिनसे छेड़ छाड़ की घटनाएं इस्ला मक देश के समाज से काफी कम है, उदाहरण के लए इजिप्ट देश में महिला और युवा लड़ कयों को हर २०० मीटर पर ही ७ बार छेड़ छाड़ होने का रिकॉर्ड दर्ज है (Egypt's NCW chief says women harassed 7

times every 200 meters – GhanaMed, September 6, 2012) (Manar Ammar – Sexual harassment awaits Egyptian girls outside schools – Bikya Masr, September 10, 2012) वहीँ दूसरी और बलात्कार की घटनाओ में सऊदी अरब जहाँ हिजाब को सख्ती से लागू कया गया है, दुनिया में highest rape scales in the world ("The High Rape-Scale in Saudi Arabia", WomanStats Project (blog), January 16, 2013 (archived).) में शुमार है। यहाँ एक बात आपको और सोचनी चाहिए, वे लोग जो कहते हैं की बुरखे से महिलाओ को छेड़ छाड़ से निजाद मलती है इस लए पहनना चाहिए तो जरा इजिप्ट के आंकड़े पर भी नजर डाल ले क्यों क जो महिलाये छेड़ छाड़ का शकार हुई वो अ धकांश तौर पर मुस्लिम थी और हिजाब पहने थी (Magdi Abdelhadi – Egypt's sexual harassment 'cancer' – BBC News, July 18, 2008)

अब स्वयं सो चये क्या बुरखा कसी भी प्रकार से ऐसी वकृत मान सक लोगो से निजात दिलवा सकता है ? जरुरी है समाज को ऐसे वकृत मान सक लोगो से निजाद दिलाना, महिलाओ को बुर्के में कैद करना इस समस्या का समाधान नहीं है, क्यों क महिलाओ को बुरका पहनने से सेहत का खतरा है, दे खये :

हम जानते हैं वटा मन डी मानव स्वास्थ्य के लए एक आवश्यक पोषक तत्व है जो वसा में घुलनशील वटा मन है, वटा मन डी कसी भी खाद्य पदार्थ में प्राकर्तिक तौर पर नहीं पाया जाता, यह केवल सूर्य की करणों से त्वचा पर प्रति क्रया होने से वटा मन डी का संश्लेषण होता है जो शरीर के लए महत्वपूर्ण है। वटा मन डी मजबूत हड् डयों के लए अतयन्तावश्यक है क्यों क यह आहार में मौजूद कैल्शियम को प्रयोग में लाता है जिससे हड् डया मजबूत होती हैं, इसकी कमी से "रिकेट" नामक रोग होता है। इस बीमारी में बोन टिशू एक रोग जिसमे बोन टिशू ठीक तरह से मनरलाइज नहीं हो पाते, जो आगे चलकर हड् डयों को कमजोर तथा हड्डी वकृति जैसी भयंकर स्थिति उत्पन्न कर देता है।

इस रोग के लक्षण अनेको मुस्लिम बहुल देशो में वटा मन डी की कमी के चलते महिलाओ में पाये गए, सऊदी अरब में कंग फहद यूनिव र्सटी हॉस्पिटल में की गयी शोध में पाया गया की जो ५२ महिलाओं पर टेस्ट कया गया उनमे सभी महिलाओ में वटा मन डी का स्तर बहुत कम पाया गया जो अनेको गंभीर स्वास्थ्य समस्याए उत्पन्न कर सकता है, जब क ये एक ऐसा देश है जहाँ सबसे ज्यादा धुप निकलती है पूरी दुनिया के मुकाबले (Elsammak, M.Y., et al., Vitamin D deficiency in Saudi Arabs. Hormone and Metabolic Research, 2010. 42(5): p. 364-368.)

जॉर्डन में कये गए अध्यन के मुताबिक वे महिलाये जो पूरी तरह से इस्लामी वेश भूषा (बुरखा) पहनती थी, 83.3% उनमे वटा मन डी की कमी पायी गयी, ये अध्ययन दोपहर के समय कया गया था। इसमें सबसे चौंकाने वाली बात ये थी की मात्र 18.2% पुरुषो में ही वटा मन डी की कमी पायी गयी, यहाँ ध्यान रहे, पुरुष बुरखा नहीं पहनते (Elsammak, M.Y., et al., Vitamin D deficiency in Saudi Arabs. Hormone and Metabolic Research, 2010. 42(5): p. 364-368.)

एक बात और बताना चाहूंगा की जॉर्डन भी ऐसी ही जगह है जहाँ अरब देश की भांति सूरज की धुप ज्यादा रहती है। तब भी ऐसी स्थिति में केवल महिलाओ में ही वटा मन डी की कमी पाया जाना ये सद्ध करता है की बुरका प्रथा महिलाओ के स्वास्थ्य हेतु भी खतरनाक है।

अब हम अंत में यही कहेंगे की बुरखा प्रथा न तो खुदाई आदेश है, न ही बुरखा छेड़ छाड़ से ही बचाव करता है, न ही ये महिलाओ की स्वयं की पसंद है, न ही ये महिलाओ के स्वास्थ्य हेतु ही कोई अच्छा कार्य है। अतः मेरी सभी बंधुओ से वनम्र प्रार्थना है, कृपया इन पाखंडो को छोड़ सत्य सनातन वैदिक धर्म की शरण में आओ, जहाँ महिला और पुरुषो दोनों को ही बराबर अ धकार हैं, कोई छुपने छुपाने की वस्तु नहीं, स्त्री जाति हमारा गौरव है।

आओ लौटो वेदो की और

नमस्ते